हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

दिसम्बर, 2005 वर्ष 4 अंक 10

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

दहशत गरदी और इस्लाम

इस्लाम की तअ़लीमात साफ़ और वाज़िह (स्पष्ट) हैं, दहशत गरदी का इस्लाम से कोई तअ़ल्लुक (सम्बन्ध) नहीं। बाज़ारों में, बसों में, रेलों में धमाका करना ऐसा बड़ा गुनाह (पाप) है जिसकी मुआ़फ़ी की कोई सूरत नहीं।

(सम्पादक)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

• देवनागरी में उर्दू शब्द	सम्पादकीय	3
• क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
• प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	6
• दीने इस्लाम का मिज़ाज	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	7
• अब शिक्षकों की होगी पढ़ाई	माध्यमिक शिक्षा परिषद	8
• ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का अख़्लाक़	अ़ल्लामा शिबली नोमानी	9
• नबीये अकरम	मौ० मुह़म्मद आ़रिफ संभली नदवी	12
• ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयास	डा० मु० इज्तिबा नदवी	14
• परीक्षा में मिले नम्बरों के हिसाब से ...	माध्यमिक शिक्षा परिषद	15
• स्वतंत्रता संग्राम..	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	16
• मां का हक़	इदारा	17
• जुनून और जिन्न	अबू मग़्रूब	18
• नेहरू की एक ग़लती ने	ह़बीबुल्लाह आज़मी	20
• रह़मतों वाले नबी तुम पर सलाम	अबू मग़्रूब	21
• आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा	22
• रह़म दिली	मु० अशरफ़ क़ुरैशी	24
• नट और बैलेंस	नमिता राकेश	25
• आर्यों का सांस्कृतिक जीवन	इतिहास के पन्नों से	26
• दहशतगर्दी	इदारा	29
• अधिकारों का हनन	ह़ैदर अ़ली नदवी	30
• उ़रयानी व फ़ह्हाशी...	माख़ूज़	31
• ज़बीह़ा	इदारा	32
• शरअ़ी अ़दालतें	एम.यूसुफ़ मुन्ना	33
• संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	अ़ब्दुस्सलाम क़िदवाई	34
• वास्तविक धर्म	डा० अ़. लतीफ़	37
• अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	ह़बीबुल्लाह आज़मी	40

❑❑❑

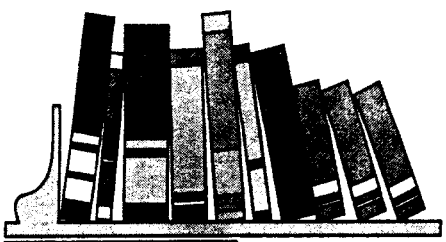

देवनागरी में उर्दू शब्द

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

मेरी मातृ भाषा उर्दू है। ब्रिटिश काल में जब मैं ने प्रेप्रेट्री स्कूल अर्थात कक्षा दो पास कर लिया तो छोटी आयु के कारण आठ किलो मीटर दूर प्राइमरी स्कूल में प्रवेश न लेकर उसी स्कूल में हिन्दी में भी कक्षा दो पास किया और अगले वर्ष रूदौली के नोटी फ़ाइडेरिया स्कूल की तीसरी कक्षा में नाम लिखाया और फिर उर्दू में शिक्षा होने लगी।

जब मैं ने कक्षा दो की हिन्दी पढ़ी तो ऐसा लगा कि हिन्दी, उर्दू से सरल है। कारण यह हुआ कि मुझे उर्दू में लिखे शब्द शिकार को शकार, ख़िदमत को ख़दमत और नुसरत को नसरत पढ़ने पर डान्ट खाना पड़ी थी, मैं ने सोचा था कि हिन्दी में मात्राओं के होने से ऐसी भूल नहीं हो सकती थी। परन्तु जब मैं अपनी मातृ भाषा में चतुर हो गया तो यह विचार बदल गया और मुझे उर्दू लिपी से गहरा प्रेम हो गया।

आगे चलकर जब मैं ने कुछ उर्दू लेखकों के लेखों में हिन्दी शब्दों और हिन्दी लेखकों के लेखों में उर्दू में प्रचलित अ़रबी फ़ार्सी के शब्दों का प्रयोग पढ़ा तो मुझे बहुत अच्छा लगा। साथ ही उर्दू में हिन्दी के बहुत से बिगड़े हुए शब्दों का रूप देखकर आश्चर्य हुआ जैसे वर्ष (बरस) प्रदेश (परदेस) गुण (गुन) आदि।

परन्तु मैं ने देखा कि हिन्दी साहित्य में शुद्ध अशुद्ध का परिचय तो दिया गया किन्तु इसे दोष नहीं माना इसके विपरीत उर्दू शब्दों के उच्चारण बदलने को भारी दोष माना गया है। हिन्दी वाले उर्दू के कुछ शब्द इस प्रकार लिखते हैं : ख्याल, वायदा, दुनिया, बुनियाद, मोहम्मद, कुरान, रूझान, हाविस, ज़िब्ह, जायज, रायज, कायम, फायदा आदि जबकि इन के शुद्ध उच्चरण के लिए यह शब्द क्रम से इस प्रकार लिखे जाएंगे : ख़याल, वअ़दा, दुन्या, बुन्याद, मुहम्मद, क़ुर्आन, रूजहान, हवस, ज़ब्ह, जाइज़, राइज, क़ाइम, फ़ाइदा । मैं चूंकि उर्दू का आदमी हूं। अतः बड़े आयोजन के साथ उर्दू के सभी शब्दों को शुद्ध उच्चारण के ध्यान के साथ ही हिन्दी लिपी में लिखता हूं।

उर्दू के कुछ अक्षरों के उच्चारण वाले अक्षर हिन्दी में हैं ही नहीं, जो निकटतीय ध्वनि वाले अक्षर हैं, हिन्दी लिपी में उन में अंतर नहीं किया गया है जैसे सा, स्वाद, सीन, इन तीनों अक्षरों के लिए स ही प्रयोग होता है जैसे सा से साबित, स्वाद से सब्र और सीन से सरकार, इसी प्रकार ज़ाल, ज़ा, ज़्वा और ज़्वाद के लिए केवल ज़ प्रयोग करते हैं जैसे ज़ाल से ज़िल्लत, ज़ा से ज़लज़ला, ज्वा से ज़ालिम और ज़्वाद से ज़मानत, ऐसे ही ता से तरबूज़ और तोए से तौक़ लिखा जाता है परन्तु अ़रबी विशेषकर क़ुर्आन की आयतें लिखने के लिए इन निकटतीय ध्वनि वाले हर अक्षर के लिए अलग अक्षर लाना आवश्यक होगा अतः इन अक्षरों को इस प्रकार प्रकाशित किया गया है : सा (स़) स्वाद (स़) ज़ाल(ज़) ज़ा (ज़) ज़्वाद (ज़) ज़्वा (ज़्) तोए (त़)।

हिन्दी में हलन्त वाले अक्षरों का कोई व्यवस्थित नियम नहीं है कुछ शब्दों में हलन्त वाले अक्षर आधे लिखे जाते हैं जैसे कष्ट, शब्द, कल्युग आदि कभी पूरा अक्षर लिख कर हलन्त लगाते

हैं और कभी बिना हलन्त के भी आधा पढ़ते हैं जैसे कपड़ा, झगड़ा, लड़का आदि। अतः उर्दू के जो शब्द हिन्दी में लिखे जाएं उन के साकिन अक्षरों को चाहे आधा लिखें चाहे हलन्त लगाएं और यदि साकिन (गतिहीन) अक्षर के आगे वाला अक्षर गतिशील हो तो बिना हलन्त के भी छोड़ सकते हैं जैसे : कुरआन, कुर्आन, कुर्आन तीनों शुद्ध हैं इसी प्रकार अख़लाक़ अख्लाक़, अख्लाक़ तीनों शुद्ध है।

बड़ी कठिनाई आती है (अ़) के रूपों में यद्यपि स्व० पण्डित नन्द कुमार अवस्थी जी ने इस प्रकार लिखा है अ़, आ़, अि़, अी़, अु़, अू़, अे़,अै़, हम ने भी इस को अपनाया है पर हम अि़, अी़, अु़, अू अे़, अै़ के स्थान पर इ, ई, उ़, ऊ़ ए, ऐ भी लिखते हैं। (नीचे बिन्दी के साथ)

इसी प्रकार अ़ हलन्ती (साकिन) वाले शब्द के लिखने में भी कठिनाई आती है, लिखना तो कुछ सरल है पर पढ़ने में अटपटा अवश्य है जैसे बअ़्द, वअ़्दा, अअ़्माल, आदि कुछ लोगों का मत हुआ कि आ की मात्रा के नीचे बिन्दी रख दी जाए परन्तु सत्य यह है कि आ की मात्रा अक्षर को थोड़ा खींचने के लिए है अर्थात अस्ली मद्द बताने के लिए है यह अ़ैन साकिन का उच्चारण नहीं दे सकता । अतः अ़ैन साकिन को (अ़्) ही से लिखना चाहिए ताकि उर्दू शब्द का रूप अपने शुद्ध उच्चारण के साथ बना रहे। वैसे कोई बाद, आमाल तथा वादा लिख देगा तो न कोई पाप हो जाएगा न ही अर्थ समझने में कोई कठिनाई होगी।

हिन्दी लिपी में उर्दू की ज़ेर के लिए इ की मात्रा और पेश के लिए उ की मात्रा है परन्तु जबर के लिए कोई मात्रा नहीं है इस लिए कि अ की मात्रा निर्धारित नहीं है, जब कि हिन्दी शब्दों के आरम्भिक अक्षर अ के साथ अर्थात जबर के साथ पढ़े जाते हैं, इसी प्रकार बीच शब्द के पूरे अक्षर कभी गतिहीन और कभी गतिशील आवश्यकतानुसार पढ़े जाते हैं परन्तु हिन्दी शब्दों का हर अन्तिम अक्षर उर्दू की भांति गतिहीन ही पढ़ा जाता है जब कि अ़रबी शब्दों का अन्तिम अक्षर गतिशील होता है अब यदि वह ज़बर से गतिशील हुआ तो हिन्दी में उसके लिए कोई मात्रा नहीं है अतः चाहिए कि यहां संस्कृत नियम अपनाएं और हिन्दी लिपी में अ़रबी शब्दों में विशेषकर क़ुर्आनिक शब्दों में बिना हलन्त वाले अक्षरों को अ के साथ अर्थात (ज़बर) से गति शील पढ़ें।

हिन्दी में मज्हूल ज़ेर (ए) की आधी मात्रा नहीं है जिस की उर्दू में बड़ी आवश्यकता पड़ती है जैसे दीवाने ग़ालिब तूफ़ाने नूह, इन में न को ए की मात्रा देना शुद्ध नहीं है। नन्द कुमार जी ने ए की मात्रा को टेढ़ा कर के लिखा सम्भव है उन के कम्प्यूटर में यह मात्रा फीड हो परन्तु दूसरे अभी ए की मात्रा ही से लिखते हैं यदि सभी कम्प्यूटरों में ए की टेढ़ी मात्रा फीड हो जाए तो अच्छा हो। कुछ लोगों ने दो डैशों के बीच ए बनाकर मज्हूल जेर लिखी है जैसे : दीवान–ए–ग़ालिब प्रश्न उठता है कि दीवान–ए–खुदा को क्या पढ़ेंगे? अतः मज्हूल ज़ेर के लिए या तो ए की मात्रा टेढ़ी की जाए या इ की मात्रा से लिखें या ए की मात्रा चलने दें।

स्पष्ट रहे कि मैं जहां उर्दू को हिन्दी लिपी में लाने का घोर विरोधी हूं वहीं आवश्यकता पर हिन्दी लिपी में उर्दू शब्दों को अशुद्ध उच्चारण से लिखने का भी विरोधी हूं। हिन्दी लिपि में एक दुरूद शरीफ़ पढ़ें परन्तु इस को शुद्ध पढ़ने के लिए किसी जानकार को सुना अवश्य लें।

अल्ला हुम्म स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुह़म्मदिंव्व अ़ला आलिही वअस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम्।

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

लिपट कर मांगना :

वह लिपट कर लोगों से नहीं मांगते। (अलबकर : २७३)

भीक मांगना इस्लाम में बहुत बुरा समझा गया है। हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया जो शख्स हमेशा भीक मांगता रहता है वह कियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उसके चेहरे पर गोश्त का एक टुकड़ा भी न होगा।

फरमाया : जो आदमी जरूरतमन्द हो कर अपनी जरूरत इन्सानों के सामने पेश करता है उसकी जरूरत पूरी नहीं होती लेकिन जो शख्स खुदा के सामने पेश करता है, हो सकता है खुदा उसको बे नियाज (बे जरूरत वाला) कर दे, चाहे मौत द्वारा चाहे जल्द ही माल देकर।

सहाबा का यह हाल था कि ज़मीन पर उन का कोड़ा गिर जाता था तो भी किसी से उठाने को न कहते थे। अगर आदमी मांगने पर मजबूर हो जाए तो उस के लिए हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि अगर तुम को सुवाल ही करना है तो नेक लोगों से सुवाल करो। नेक लोगों से उम्मीद है कि वह नर्मी इज्जत और अच्छी नीयत से सुवाल पूरा कर देंगे।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ताकत और सकत वाले सहीह और तन्दुरुस्त (स्वस्थ) आदमी के लिए भीख मांगना जाइज नहीं। फरमाया कसम है उस जात की जिस के हाथ में मेरी जान है कि तुम में से किसी का रस्सी लेकर अपनी पीठ पर बोझ उठाना उस से अच्छा है कि वह दूसरे से भीख मांगे वह उसे दे या न दे।

एक ग़रीब सहाबी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खैरात मांगी आप ने फरमाया तुम्हारे पास कुछ है? कहा कि एक टाट औरएक प्याला है आपने उनको मंगवा कर नीलाम किया और उन की कीमत से एक कुल्हाड़ी खरीदी और फरमाया कि जाओ जंगल से लकड़ी काट लाओ और बेचो।

ज़िना :

वला तक़्रबुज़्ज़िना – ज़िना के करीब मत जाओ। (बनी इस्राईल :३२)

जो औरत और मर्द में नाजाइज तअल्लुक रखते हैं वह खुदा के बड़े ना फरमान हैं, अल्लाह तआला कहता है कि तुम ज़िना के करीब न जाओ। करीब न जाने का मतलब यह है कि वह सारी बातें जिन से बे हयाई और बदकारी पैदा होती है उन से अलग रहो।

औरत और मर्द के नाजाइज तअल्लुक में निगाह को बड़ा दखल होता है इस लिए कुर्आन मजीद में साफ फरमाया गया – (ऐ पैगम्बर) ईमान वालों से कह दीजिए कि वह ज़रा अपनी आंखें नीची रखें। (नूर : ३०)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि पहली नजर तो इरादे के बिगैर होने की वजह से मुआफ है मगर दूसरी दफा फिर नजर डालना जाइज नहीं।

औरतों को खास तौर से कहा गया है कि गैरों को अपने अन्दर का बनाव सिंगार न दिखाएं, अपने जेवरों की झनकार किसी को न सुनाएं, झनकार वाले जेवर न पहनें, सीने का परदा रखें, बाहर तो सारे जिस्म पर चादर डाल कर निकलें, तेज खुश्बू लगाकर बाहर न निकलें, बीच रास्ते में न चलें, कनारे कनारे चलें, मर्द और औरत मिल जुल कर न बैठें। कोई मर्द किसी ग़ैर औरत से तन्हाई में न मिले यह सारे हुक्म इसी लिये हैं मुसलमान इज्जत और पाकी की जिन्दगी बसर करें।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि मैं ने मिअ्राज की रात में देखा कि कुछ लोगों की खाल कैंचियों से काटी जाती है। मैंने जिब्रील (अ०) से पूछा तो मालूम हुआ कि यह व मर्द और औरतें हैं जो ज़िना के लिए बनाव करते हैं।

फरमाया : जब किसी शहर में जिना और सूद आम हो जाए तो उन लोगों पर-अल्लाह का अज़ाब का आना हलाल हो जाता है। फ़रमाया : ज़िना से इफ़्लास और मुहताजी पैदा होती है। फरमाया कि जिस ने जिना किया या शराब पी या चोरी की तो उसने इस्लाम की रस्सी अपनी गरदन से निकाल दी।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

खुदा का अदब व लिहाज़

ऐ ईमानवालों ! अल्लाह का लिहाज करो जैसा उसका लिहाज रखना चाहिए। (आलिइम्रान : १०२)

अल्लाह का लिहाज करो जितनी तुम इसकी ताकत रखते हो और सुनो और इताअत करो और खर्च करो। तुम्हारी जानों के लिए बेहतर होगा और जो अपनी जान को बुख्ल से बचायें पस वह लोग कामयाब है। (तगाबुन : १६)

ऐ ईमानवालो! अल्लाह का लिहाज करो और दुरूस्त बात कहो, वह तुम्हारे अमलों को सवांर देगा और तुम्हारे गुनाहों को बख्श देगा और जिसने अल्लाह और उसके रसूल की इताअत की, वह मुराद को पहुंचा। (अहज़ाब : ७०–७१)

जो अल्लाह का लिहाज करेगा अल्लाह उसके लिए मुश्किलों से निकलने की राह पैदा कर देगा और ऐसी जगह से रिज्क देगा जहां से उसको गुमान भी न होगा। (सूरतुत्तलाक़ : २–३)

अगर तुम अल्लाह का लिहाज करोगे तो तुम्हारे लिए हक की पहचान की दलील पैदा कर देगा और तुम्हारी बुराइयों को दूर कर देगा और तुमको बख्श देगा। वह बड़ा फ़ज़्ल वाला है। (अन्फालि : २६)

अहादीस

सब में मुअज्ज़ज़ वह है जो सब से जियादा खुदा से डरने वाला है।

१/६४. हजरत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया कि लोगों में बुजुर्ग कौन है? आपने फरमाया, जो जियादा परहेजगार है। उन्होंने कहा कि हम इसके मुतअल्लिक नहीं पूछते, फरमाया, यूसुफ अल्लाह के नबी और अल्लाह के नबी के बेटे, और अल्लाह के नबी के पोते और अल्लाह के नबी के परपोते। उन्होंने कहा, हम उनके मुतअल्लिक नहीं सवाल करते, फरमाया क्या तुम अरब के खान्दानों के मुतअल्लिक पूछते हो? तो जाहिलीयत में जो शरीफ थे वह इस्लाम में भी शरीफ हैं, जब कि वह दीन की समझ पैदा कर लें। (बुखारी–मुस्लिम)

दुनिया और औरतें इफ़्तियात की चीज़ें हैं।

२/६५. अबू सअ़ीद अलखुदरी (र०) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने फरमाया, दुनिया मीठी है और सब्ज है, अल्लाह तुमको इसमें जानशीं बनायेगा और वह देखेगा कि तुम कैसे अमल करते हो और दुनिया से डरो और औरतों से डरो पहला फितना बनी इस्राईल में औरतों की जात से पैदा हुआ। (मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम की दुआ

३/६६. हजरत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते थे कि ऐ अल्लाह ! मैं तुझसे सवाल करता हूं, हिदायत का और परहेजगारी का और पाकदामनी का और इस्तिग़ना का। (मुस्लिम)

कसम खाने के बाद भी जियादः परहेजगारी की बात पर अमल करना चाहिए

४/६७. हजरत अदी (र०) बिन हातिम से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि जिस किसी ने किसी बात पर कसम खाई फिर जियादः परहेजगारी की बात देखी तो परहेजगारी को इख्तियार करे। (मुस्लिम)

जन्नत में दाखिलः के शराइत

५/६८. हजरत अबू उमामः अलबाहिली(र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है – हज्जतुलवदाअ़ में खुतबः फरमा रह थे कि अल्लाह से डरो और पांच वक्त की नमाज पढ़ो और रमज़ान महीने के रोजे रखो और इमजान के अपने मालों की जकात अदा करो, अपने हाकिमों की इताअत करो, अपने रब की जन्नत में दाखिल किये जाओ गे। (तिर्मिज़ी)

जौक़ रख सुन्नते मिरामी से
है शरफ़ आपकी ग़ुलामी से
जो कोई पैरवे रसूल नहीं
लाख ताअ़त करे क़बूल नहीं।

दीने इस्लाम का मिज़ाज और उसकी ख़ास-ख़ास बातें

मौ० स० अबुलहसन अ़ली ह़सनी

अल्लाहतआला हजरत इब्राहीम अ० की तारीफ करते हुए फरमाता है (जब वह अपने रब के पास ऐबं से पाक दिल लेकर आये) (सूर : साफफ़ात – ८४)। इसलिए हर उस चीज से जो कल्बे सलीम के मनाफी हो और जिसके सनम बन जाने का खतरा हो उससे चौकन्ना रहने की जरूरत है और उससे हर कीमत पर बचना लाज़िमी है। अल्लाह तआला का इरशाद है :–

तर्जुमा : "क्या तुमने उस शख्स को देखा जिसने अपने ख्वाहिशे नफस् को माबूद बना रखा है।" (सूर : अल फुरकान–४३)

अल्लाह के रसूल स० ने फरमाया :

"शैतान इब्ने आदम (की रगों) में खून की तरह दौड़ जाता है।"

दीन इस्लाम की तीसरी खुसूसियत यह है कि नबी जो अकीदा। व शरीअत लेकर आते हैं उसमें कोई तरमीम गवारा नहीं करते। उनके यहां तब्दीली की गुंजाइश नहीं होती। अल्लाह तआला अपने आखिरी पैगम्बर को मुखातब करके फरमाता है :–

तर्जुमा : "पस जो हुक्म तुम को खुदा की तरफ से मिला है, वह सुना दो और मुशरिकों का जरा खयाल न करो। (सूरः अलहज्र : ६४)

ऐ पैगम्बर ! जो इरशादात तुम पर खुदा की तरफ से नाजिल हुए हैं सब लोगों को पहुंचा दो और अगर ऐसा न किया तो तुम खुदा का पैगाम पहुंचाने में कासिर रहे, और खुदा तुम को लागों से बचाये रखेगा। (सूरः मायदा –६७)

तर्जुमा : "यह लोग चाहते हैं कि तुम नरमी इख्तियार करो तो यह भी नर्म हो जायें।" (सूर : अलकलम – ६)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मौकिफ तौहीद और इस्लाम के तमाम बुनियादी अकायद और दीन के अरकान व फरायज के बारे में लचकदार न था जैसा कि सियासी लीडर हर जमाने में करते रहे हैं। शहर तायफ के फतेह हो जाने के बाद अरब के दूसरे मशहूर कबीला सकीफ का वफद इस्लाम कबूल करने के बाद आप की खिदमत में हाजिर होता है और दरख्वास्त करता है कि लात नामी बुत को तीन साल तक अपने हाल पर रहने दिया जाये और दूसरे बुतों की तरह उसके साथ मामला न किया जाय। अल्लाह के रसूल साफ इनकार फरमा देते हैं। वफद के लोग दो साल फिर एक साल की मुहलत मांगते हैं। आप बराबर इनकार फरमाते हैं । यहां तक कि वफद इस पर उतर आता है कि हमारे तायफ वापस जाने के बाद सिर्फ एक महीना की मुहलत दे दी जाये। लेकिन आप उन की बात मानने के बजाय अबू सुफियान बिन हरब और कबीला सकीफ के एक शख्स मुगीरा बिन शाबा को मामूर फरमाते हैं कि वह जायें और लात व उसके मोबद को ढा दें। वफद के लोग एक दरख्वास्त यह भी करते हैं कि उन्हें नमाज से माफ रखा जाय। आप फरमाते हैं, " उस दीन में कोई भलाई नहीं, जिसमें नमाज नहीं।" इस बात–चीत से फारिग होकर वफद अपने वतन वापस लौटता है उनके साथ अबू सुफयान और मुगीरा भी जाते हैं और लात को ढा देते हैं। और पूरे कबीला सकीफ में इस्लाम फैल जाता है यहां तक कि पूरा तायफ मुसलमान हो जाता है।

नबीयों की यह भी खुसूसियत है कि वह तबलीग व दावत में वही उसलुब इस्तेमाल करते हैं जो उनकी दावत की रूह और नुबूवत के मिज़ाज से हम आहंग होता है। वह खुलकर और पूरी वजाहत के साथ आखिरत की दावत देते हैं। जन्नत और उसकी नेमतों का शौक दिलाते हैं। दोजख और उसके अजाब से डराते हैं। जन्नत व दोजख दोनों का तजकिरा इस तरह करते हैं गोया वह निगाहों के सामने हैं वह अकली दलायल के बजाए ईमान बिलगैब का मामला करते हैं। उनका अहद माद्दी फल्सफों और नजरियात से यकसर खाली महीं होता। इस अहद में भी कुछ तबकों की खास इस्तेलाहात होती हैं वह उनसे नावाकिफ नहीं होते। वह यह भी खूब समझते हैं कि यह फलसफे और इस्तेहालात सिक्का रायजुलवक्त हैं और इन्हीं का इस दौर में चलन है। लेकिन लोगों को अपनी तरफ बुलाने के लिए वह इन से काम

नहीं लेते। वह अल्लाह तआला पर उसकी सिफात के साथ, मलायका पर, तकदीर पर, मौत के बाद उठाये जाने पर ईमान लाने की दावत देते हैं। वह बेहिचक एलान करते हैं कि उनकी दावत कबूल करने और उन पर ईमान लाने का इनाम जन्नत और खुदा की रजा व खुशनूदी है।

दावत के सिलसिले में इस नबवी मेजाज की बेहतरीन मिसाल उकबये सानिया की बैअ़त में मिलती है, जब यसरब के ७३ मर्द और दो औरतें हज के लिए मक्का आयीं और उकबा के पास वादी में इकटठा हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चचा हजरत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के साथ जो उस वक्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, तशरीफ लाये। आपने कुरआन पाक की आयत तिलावत फरमाई। खुदाये वाहिद की तरफ दावत और इस्लाम की तरगीब दी और फरमाया कि तुम से मैं यह अहद और बैअ़त लेता हूं कि तुम मेरे साथ हिफाजत का वही मामला करोगे जो अपने बाल बच्चों के साथ करते हो। अन्सार ने बैअ़त की और आपसे यह वायदा लिया कि आप उनको छोड़कर फिर अपनी कौम में वापस न जायेंगे। वह समझदार थे और इस अहद व पैमान से दूररस और खतरनाक नतायज से बखूबी वाकिफ थे। वह समझते थे कि वह तमाम करीबी कबायल बल्कि पूरे मुल्क अरब से दुश्मनी मोल ले रहे हैं। उनके एक तजरबेकार साथी अब्बास बिन इबादा ने भी उनको इन नतायज से आगाह किया। लेकिन उन्होंने एक जबान होकर जवाब दिया कि हम माल के नुकसान और अपने खानदान के बड़े–बड़े लोगों के कत्ल हो जाने का खतरा मोल लेते हुए आप को लेजा रहे हैं। फिर अल्लाह के रसूल स० से उन्होंने अर्ज यिा "ऐ ! अल्लहा के रसूल अगर हमने वायदा वफा कर दिखलाया तो हमें क्या मिलेगा।"

ऐसे नाजुक मौके पर अगर खुदा के पैगम्बर की जगह कोई सियासी लीडर होता तो उसका जवाब होता है कि इन्तेशार के बाद अब तुम्हारी शीराजाबन्दी होगी। अब पूरे अरब में तुम्हारा वजूद तसलीम किया जायेगा और तुम एक ताकत बन कर उभरोगे। और यह कयास के परे कोई बात न थी। खुद यसरब वालों में से एक शख्स ने इससे पहले कहा था –

"हम अपनी कौम को इस हाल में छोड़कर आये हैं कि शायद ही किसी कौम में ऐसी दुश्मनी और इन्तेशार हो, जैसा हमारी कौम में है, हमें उम्मीद है कि अल्लाह आपके जरिये इनकी शीराजबन्दी करे, अब हम उनके पास जायेंगे और आपकी यह दावत उनके सामने पेश करेंगे, और जिस दीन को हमने कबूल किया है उनको भी इस की दावत देंगे। अगर अल्लाह आप की जात पर इनको एक करदे तो आप से बढ़कर कोई साहबे इकतेदार और बाइज्जत शख्स न होगा।"

लेकिन अल्लाह के रसूल स० ने सवाल के जवाब में कि "ऐ अल्लाह के रसूल फिर हमें क्या मिलेगा? सिर्फ इतना कहा कि जन्नत। इस पर उन्होंने अर्ज किया कि हुजूर दस्ते मुबारक दराज फरमाइये। आपने अपना हाथ बढ़ाया और उन्होंने बैअ़त कर ली। (जारी)

अब बच्चों को पढ़ाने वाले शिक्षकों की भी होगी पढ़ाई

इलाहाबाद । माध्यमिक शिक्षा परिषद के स्कूलों में फिजिक्स, केमिस्ट्री, पढ़ाने वाले शिक्षकों को भी पढ़ाई करनी होगी। ८ व ९ नवम्बर को दिव्याभा इंटर कालेज में जिला विज्ञान प्रदर्शनी के दौरान विज्ञान के शिक्षकों की स्पेशाल ट्रेनिंग होगी। उन्हें विज्ञान को सरल बनाकर बच्चों को पढ़ाने के गुर सिखाये जायेंगे। शिक्षकों को पढ़ाने के लिए कई शैक्षणिक संस्थानों के विशेषज्ञों को बुलाया गया है।

ऐसे मौके कम ही आते हैं जब विज्ञान के शिक्षकों को ट्रेनिंग होती है। इस कारण शिक्षकों को पाठ्यक्रम में आए बदलावों की जानकारी भी नहीं मिल पाती। अगर जानकारी मिल भी जाए तब भी शिक्षकों को यह पता नहीं होता कि नये तथ्यों को किस प्रकार पढ़ाया जाना है। शिक्षक वही पुराने घिसे–पिटे तरीके से विज्ञान जैसे विषय को पढ़ाते रहते हैं। इसे देखते हुए शिक्षा विभाग ने विज्ञान के शिक्षकों को अप टू डेट कराने का निर्णय लिया है। उनकी स्पेशल ट्रेनिंग करायी जायेगी। जिला विज्ञान प्रदर्शनी के दौरान उनकी क्लासें ली जायेगी। उन्हें पढ़ाने के लिए सीमेंट, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान समेत कई शिक्षण संस्थानों के विशेषज्ञों को बुलाया गया है। शिक्षकों की काउंसलिंग भी करायी जायेगी। यह विशेषज्ञ शिक्षकों को विज्ञान की बारीकियों से अवगत कराएंगे। उन्हें यह भी बताया जायेगा कि वे बोल–चाल की भाषा में विज्ञान को किस प्रकार से पढ़ाएं ताकि बच्चों में इस विषय की रूचि पैदा हो सके। बच्चों को विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे नये बदलावों की जानकारी देने के भी गुर सिखाए जाएंगे। जिला विद्यालय निरीक्षक महेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि विज्ञान के शिक्षकों को अपने विषय पर एक प्रोजेक्ट तैयार करने के भी निर्देश दिये गये हैं। वे विज्ञानप्रदर्शनी के दौरान इन्हें प्रस्तुत क रेंगे। इसके आधार पर शिक्षकों की क्षमता का आकलन किया जायेगा। उन्हें भी बच्चों के प्रोजेक्ट की तरह ही नंबर मिलेंगे। सभी प्रधानाचार्यों को निर्देश दिये गयेहें कि वे विज्ञान के शिक्षकों को प्रशिक्षण में जरूर भेजेंगे।

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

अल्लामा शिबली नोमानी

हज़रत मुहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़

पक्का इरादा व धैर्य :

अल्लाह ने कुर्आन में नबियों को पक्के इरादे व धैर्य वाले कहकर उनकी प्रशंसा की है। हजरत मुहम्मद सल्ल० आखिरी नबी थे, इसलिए खुदा ने विशेषकर आपके अन्दर यह गुण रखा था। आदि से अन्त तक इस्लाम का एक एक कारनामा आपके पक्के इरादे व धैर्य का भरपूर मजहर है। अरब के कुफ्रिस्तान में एक व्यक्ति तनहा खड़ा होता है, बेयार व मददगार दावते हक की सदायें बुलन्द करता है, रेगिस्तान का कण–कण उसके विरोध में पहाड़ बनकर सामने आता है लेकिन नुबूवत की मर्यादा और दैवी संकल्प से ठोकर खाकर पीछे हट जाता है और विरोध की सारी ताकतें उसके सामने चूर चूर हो जाती हैं।

तेरह साल की लगातार नाकामियों के बाद भी आप निराश नहीं होते और अन्ततः वह दिन आता है जब एक अकेला इन्सान एक लाख जां निसारों को छोड़कर इस नश्वर संसार से बिदा लेता है। हिज्रत से पहले एक दफा सहाबः ने कुफ्फार की यात्नाओं से तंग आकर आप सल्ल० से अर्ज किया कि आप हमारे लिए क्यों दुआ नहीं फरमाते। आप का चेहरा गुस्सः से सुर्ख हो गया और फरमाया कि तुमसे पहले जो लोग गुजरे हैं उनको आरे से चीर कर दो टुकड़े कर दिया जाता था, उनके बदन पर लोहे की कंघियां चलाई जाती थी जिस से मांस–हाड अलग हो जाता था, लेकिन यह आजमाइशें भी उनको मजहब से विमुख नहीं कर सकती थीं। खुदा की कसम इस्लाम धर्म अपनी चरम सीमा पर पहुंच कर रहेगा। यहां तक कि सनआ से हजरमौत तक एक सवार इस तरह बेखतर चला जायेगा कि उसको खुदा के सिवा किसी का डर न होगा। (बुखारी)

मक्का में जब कुरैश के रईस हर किस्म की तदबीरों से थक गये, तो उन्होंने आपके सामने सिंहासन, धन व दौलत का खजाना पेश किया। इनमें से हर चीज़ बहादुर से बहादुर इन्सान के कदम के डगमगाने के लिए काफी थी लेकिन आप ने जिल्लत के साथ उनकी पेशकश को ठुकरा दिया और अन्ततः वह समय आया जब आखिरी हमदम व दमसाज अर्थात अबू तालिब ने भी साथ छोड़ना चाहा तो यह सोच विचार का अन्तिम क्षण और संकल्प की अन्तिम अग्नि परीक्षा थी, उस समय आप ने जवाब में जो अन्तिम बात कही, सृष्टि में अटल और अडिग रहने और धैर्य की अभिव्यक्ति की सब से अन्तिम जतन है। आप ने फरमाया चचा जान! अगर कुरैश दाहिने हाथ में सूरज और बायें में चांद रख दें तब भी अपने एलाने हक से बाज न आऊंगा।

बद्र की लड़ाई में जब तीन सौ बेसरोसामान मुस्लिम, एक हजार सशस्त्र फौज से लड़ रहे थे, कुरैश के कुफ़फार अपने जोर व कसरत से बिफरे आये थे, उस समय मुसलमान सिमट सिमट कर आप सल्ल० के पहलू में आजाते थे और ऐसे संकट की घड़ी में आप के माथे पर बल न आता था। अडिग और अटल रहे।

ओहद की लड़ाई में आप ने सहाबः से मशवरः (परामर्श) किया तो सब ने हमला की राय दी लेकिन जब आप ज़िरहः (कवच) पहनकर तैयार हो गये तो सहाबः ने रूक जाने का मशवरः दिया। आपने फरमाया पैगम्बर जिरह पहन कर उतार नहीं सकता। हुनैन की लड़ाई में जब कबीला हवाजिन के कद्र अन्दाजों (अचूक निशाने बाजों) ने लगातार तीरों की बौछार की तो अक्सर सहाबः के कदम उखड़ गये, लेकिन आप बड़े सुकून व इतमीनान से चन्द जां निसारों के साथ मैदान में जमे रहे।

एक बार आप किसी लड़ाई में पेड़ के नीचे आराम फरमा रहे थे एक काफिर आया और इसी हालत में तलवार खींच कर बोला, "मुहम्मद ! अब तुम को मुझ से कौन बचा सकता है?" आपने फरमाया, "अल्लाह" इस साहस और पक्के इरादः व संकल्प व धैर्य ने उस पर ऐसा रोब डाला कि फौरन उसने तलवार मियान में कर ली और पास बैठ गया । (बुखारी)

वीरता (शुजाअत)

यह गुण इन्सानियत का आला

जौहर और आचरण की आधारशिला है। पक्का इरादा, हकगोई, सत्यवादिता, बहादुरी यह तमाम बातें शुजाअत ही से पैदा होती हैं। आं हजरत सल्ल० को सैकड़ों मुसीबतें, खतरे और बीसियों लड़ाइयां पेश आईं लेकिन कभी साहस और धैर्य के पग नहीं डगमगाये। बद्र की लड़ाई में तीन सौ निहत्थे मुसलमानों के कदम जब एक हजार सशस्त्र सेना के हमलों से डगमगा जाते थे तो दौड़कर मर्कज़े नुबूवत ही के दामन में आकर पनाह लेते थे हजरत अली जिनके हाथों ने बड़े बड़े मार्के सर किये, कहते हैं कि जब बद्र में जब जोर का रन पड़ा (घमासान युद्ध हुआ) तो हम लोगों ने आप ही की आड़ में आकर पनाह ली। आप सब से अधिक वीर थे। कुफ़्फार की पक्ति से उस दिन आप से ज्यादा कोई करीब न था।

हुनैन के युद्ध में हवाजिन के बेपनाह तीरों की बारिश हुई तो मुसलमानों की बड़ी तादाद में फौज अचानक मैदान से हट गयी, लेकिन आप चन्द जानिसारों के साथ बदस्तूर मैदान में खड़े रहे। उस समय बार बार आप अपने खच्चर को एड़ लगाकर आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे लेकिन जां निसार रूकावट बन जाते थे। अब दुश्मनों की तमाम फौज का निशाना सिर्फ आपकी जात थी फिर भी आप अडिग रहे। हजरत बर्रा रज़ि० जो इस लड़ाई में शरीक थे किसी ने उनसे पूछा कि क्या हुनैन में तुम भाग खड़े हुए थे? जवाब दिया हां, यह सच है; लेकिन मैं गवाही देता हूं कि आंहजरत अपनी जगह से नहीं हटे थे। खुदा की कसम जब लड़ाई पूरे जोर पर होती थी तो हम लोग आप ही के पहलू में आकर पनाह लेते थे। हम में सब से बड़ा बहादुर वह गिना जाता था जो आपके साथ खड़ा होता था। (सही मुस्लिम)

सच बोलना

सच बोलना पैग़म्बर की एक जरूरी सिफत है और यह उनकी जात से कभी जुदा नहीं हो सकती। इस बिना पंर आं हजरत सल्ल० के अखलाक के उनवान में इसके विवेचन का आवश्यकता न थी, लेकिन इस मौके पर हम सिर्फ उन शहादतों को कलम बन्द करना चाहते हैं जो दुश्मनों के मानने से हाथ आ सकी हैं।

आंहजरत सल्ल० ने जब नबूवत का दावा किया तो कुफ़्फार में जो लोग आप से वाकिफ थे उन्हों ने आपको झूठा यकीन नहीं किया बल्कि यह समझा कि अल्लाह की पनाह आप के हवास दुरूस्त नहीं या आप की अकल नहीं बजा रही है, या यह कि उनमें अब शायराना सोच की लत पड़ गई है, इसी बिना पर उन्होंने आपको मजनून कहा, मसहूर (मन्त्र मुग्ध, जिस पर जादू किया गया है) कहा शायर कहा लेकिन झूठा नहीं कहा।

एक रोज कुरैश के बड़े बड़े रईस जल्सा जमाये बैठे थे और आपका जिक्र हो रहा था। नुजर बिन हारिस ने जो कुरैश में सब से अधिक धूमा फिरा था, कहा ऐ कुरैश! तुम पर जो मुसीबत आई है अब तक तुम इस की कोई तदबीर न निकाल सके। मुहम्मद तुम्हारे सामने बच्चा से जवान हुआ, वह तुम में सब से ज्यादा पसन्दीदा, सत्यवादी और अमीन था, अब जब उसके बालों में सफेदी आ चुकी और तुम्हारे सामने यह बातें पेश कीं तो कहते हो कि वह जादूगर है, काहिन (शकुन विचारने वाला पुरूष) है, शायर है, मजनून है। खुदा की कसम मैंने उनकी बातें सुनी हैं, मुहम्मद में यह कोई बात नहीं। तुम पर यह कोई मुसीबत नयी नहीं आई है। अबू जहल कहा करता था, मुहम्मद ! मैं तुम को झूठा नहीं कहता, अलबत्ता जो कुछ कहते हो उसको सही नहीं समझता। कुर्आन की यह आयत इसी मौके पर नाजिल हुई।

तर्जुमः हम जानते हैं कि ऐ पैगम्बर ! इन काफिरों की बातें तुम को गमगीन करती हैं, वह तुम को नहीं झुठलाते अल्बत्ता यह जालिम अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं। (सूरः अनआम –४)

जब आंहजरत सल्ल० को अल्लाह की तरफ से हुक्म हुआ कि अपने परिवारजनों को इस्लाम की दावत दो, तो आपने एक पहाड़ पर चढ़कर पुकारा, "ऐ कुरैश के दोस्तो!" जब सब लोग जमा हो गये तो फरमाया, "अगर मैं तुम से यह कहूं कि पहाड़ के पीछे से एक लश्कर आ रहा है तो तुम को यकीन आयेगा?" सबने कहा "हां! क्योंकि हमने तुम को झूठ बोलते नहीं देखा।" (बुखारी)

रोम के बादशाह ने दरबार में अबु सुफियान से पूछा कि तुम्हारे यहां जो मुद्दई पैदा हुआ है इस दावा से पहले कभी तुमने उसको झूठा भी पाया? अबू सुफियान ने कहा, "नहीं"। आखिर में बादशाह ने जो तकरीर की उसमें कहा, मैं ने तुम से पूछा कि तुम्हारे नजदीक वह कभी झूठ भी बोला तो तुमने जवाब दिया कि नहीं। मुझे यकीन है कि अगर वह खुदा पर बुहतान बान्धता तो वह आदमियों पर बुहतान

बान्धने से कब बाज रहता। (बुखारी)

वादा वफा करना

वादा वफा करना आप की एक ऐसी विशेषता थी कि दुश्मन भी इसको मानते थे, अतएव कैसर ने अपने दरबार में आप के बारे में अबू सुफियान से जो सवालात किये उनमें एक यह भी था कि क्या कभी मुहम्मद ने वादा खिलाफी भी की है? अबूसुफियान को मजबूरन यह जवाब देना पड़ा कि "नहीं।" वहशी जिन्होंने हजरत हम्जः को शहीद किया था, इस्लाम के डर से नगरी नगरी फिरा करते थे ताइफ वालों ने मदीना भेजने के लिए जो शिष्ट मण्डल गठित किया उस में उनका नाम भी था लेकिन उनको डर था कि कहीं मुझ से बदला न लिया जाये। लेकिन स्वयं दुश्मनों ने उनको यकीन दिलाया कि तुम बेखौफ व खतर जाओ, मुहम्मद राजदूतों को कत्ल नहीं करते। अतएव वह इस विश्वास पर आप की सेवा में उपस्थित हुए और इस्लाम लाये। सफवान बिन उमैयः (इस्लाम से पूर्व) कट्टर दुश्मनों में थे, जब उमैर बिन वहब ने खिदमत में हाजिर होकर वाक्या अर्ज किया। आंहजरत सल्ल० ने अपनी पगड़ी दी और फरमाया यह सफवान की अमान की निशानी है। उमैर पगड़ी लेकर सफवान के पास पहुंचे और कहा तुम को भागने की जरूरत नहीं, तुम को अमान है। जब आप की सेवा में हाजिर हुए तो अर्ज की कि क्या आप ने मुझे अमान दी है, इरशाद हुआ कि हां यह सत्य है। (इब्ने हिशाम)

अबू राफे एक गुलाम थे, कुफ्र के हालात में कुरैश की तरफ से सफीर बन कर मदीना आये। आप के चेहरे पर नजर पड़ी तो बेइख्तियार इस्लाम की सदाकत और सच्चाई उन के दिल में पैठ गई। अर्ज की या रसूलल्लाह! अब मैं कभी काफिरों के पास लौट कर न जाऊंगा। इरशाद हुआ, न मैं वादा खिलाफी कर सकता हूं और न कासिदों (सन्देश वाहकों) को अपने पास रोक सकता हूं। तुम इस वक्त वापस जाओ। अगर वहां पहुंच कर भी तुम्हारे दिल की यही हालत बाकी रहे तो आ जाना। अतएव वह उस समय वापस गये, फिर इस्लाम लाये।

सुलहे हुदैबिया में एक शर्त यह थी कि मक्का से जो मुसलमान होकर मदीना जायेगा वह मक्का वालों के मतालबः पर वापस कर दिया जायेगा। ऐन उस वक्त जब समझौता की शर्तें लिखी जा रही थी, अबू जन्दल बेड़ियां पहने मक्का वालों की कैद से भाग कर आये और अल्लाह के रसूल सल्ल. से फरियादी हुए। तमाम मुसलमान इस दर्द अंगेज (हृदय विदारक) मंजर को देखकर तड़प उठे, लेकिन आंहजरत सल्ल० ने पूरे इत्मीनान के साथ उनको सम्बोधित करके कहा, "ऐ अबू जन्दल सब्र करो। हम वादा खिलाफी नहीं कर सकते। अल्लाह निकट भविष्य में तुम्हारे लिए कोई रास्ता निकालेगा। (सही बुखारी)

नुबूवत से पहले का वाक्यः है कि अब्दुल्ला बिन अबी अल अमसा ने आप सल्ल० से कुछ मामला किया और आप को बिठा कर चले गये कि आकर हिसाब कर देता हूं। इत्तेफाक से उन को ख्याल न रहा। तीन दिन के बाद आये तो आं हजरत सल्ल० उसी जगह तशरीफ रखते थे। उनको देखकर फरमाया, मैं तीन दिनसे यहां तुम्हारे इन्तेजार में बैठा हूं। (अबू दाऊद)

ग़ज़व–ए–बद्र में काफिरों के मुकाबले में मुसलमानों की तादाद एक तिहाई से भी कम थी। ऐसे मौके पर आप सल्ल० की स्वाभाविक इच्छा यह होनी चाहिए थी कि जिस कदर आदमी बढ़ सकें बेहतर है लेकिन आप उससमय भी साक्षात वफा थे। हुजैफा बिन अलयमान और अबू हसल रज़ि० दो सहाबी मक्का से आ रहे थे। राह में कुफ्फार ने उनको रोका कि मुहम्मद के पास जा रहे हो। उन्होंने इनकार किया। आखिर इस शर्त पर उनको छोड़ा गया कि वह जंग में आप का साथ न देंगे। यह दोनों आंहजरत सल्ल० के पास आये तो माजरा कह सुनाया। फरमाया तुम दोनों वापस जाओ। हम हर हाल में वादा वफा करेंगे। हम को सिर्फ खुदा की मदद दरकार है। (मुस्लिम) (जारी)

प्रस्तुति : हसन अन्सारी

अनुरोध

लेखक गण से अनुरोध है कि वह पन्ने के एक ओर लिखें, एक लाइन छोड़ कर लिखें, खुला खुला लिखें, सरल लिखें, हदीस या क़ुर्आन का अनुवाद प्रयोग करें तो उसका सन्दर्भ अवश्य लिखें।

पाठकों से अनुरोध है कि वह पर्चे के विषय में अपनी राय लिखें, अपने परामर्श लिखें, अपनी धार्मिक समस्याएं उत्तर हेतु लिखें, और अगर आप को यह पर्चा अच्छा लग रहा है तो इसे फैलाएं।

– सम्पादक

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के फ़ज़ाइल

मु० आ़रिफ़ नदवी संभली

सूर–ए–आलि इम्रान में एक बहुत ही अहम वाकिआ़ बड़ी अहम्मीयत के साथ इस तरह बयान हुआ है :

"और (वह वाकिआ़ याद करो) जब अल्लाह तआ़ला ने अ़हद (बचन) लिया अंबिया से कि जब मैं तुम्हें किताब और हिक्मत अ़ता करूं, फिर आये तुम्हारे पास एक रसूल उस चीज़ की तस्दीक़ करने वाला जो तुम्हारे पास है, तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी मदद करना, (फिर) फ़रमाया क्या तुम ने इक़रार किया और उस पर मेरा भारी अ़हद (प्रतिज्ञा) क़बूल किया? सब ने कहा "हम ने इक़रार किया" अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तो इस अ़हद व इक़रार पर गवाह रहना और मैं भी तुम्हारे साथ गवाहों में शामिल हूं।" (आलिइम्रान : ८१)

उम्मत के क़रीब क़रीब तमाम ही मुअ़तबर मुफ़स्सिरीन (विश्वस्त क़ुर्आनिक टीकाकार) और इ़ल्म वालों का इस पर इत्तिफ़ाक़ (एक मत होना) है, कि जिस नबी के बारे में अल्लाह तआ़ला तमाम अंबिया से अ़हद (बचन) लिया था वह हुज़ूर सल्लल्लाहु व सल्लम की हस्ती थी। निःसन्देह यह इन्तिहा (अन्तिम सीमा) है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मान सम्मान की, कि अल्लाह तआ़ला ने तमाम अंबिया से हुज़ूरे अकरम पर ईमान लाने और आप की मदद व हिमायत करने का अ़हद लिया और यह भी फ़रमाया कि तुम लोग इस अ़हद (वचन) के गवाह रहना और ख़ुद मैं भी गवाहों में शरीक हूं। हक़ यह है कि क़ुर्आन मजीद का केवल यही बयान सारी सृष्टि पर आपकी बड़ाई सिद्ध करने के लिए काफ़ी है वैसे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बड़ाई आपके गुणों के वर्णन से क़ुर्आन व हदीस भरे पड़े हैं।

कल्म–ए–तय्यिबा और कल्म–ए–शहादत :

कल्म–ए–तय्यिबा में हुज़ूर को रसूल और कल्म–ए–शहादत में आप को बन्दा और रसूल बताया गया है। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ग़ौर कीजिए यह कितना बड़ा एअ़ज़ाज़ (सम्मान) है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने दीन के मौलिक कल्मों में अपनी उलूहियत (ईश्वरत्व) के साथ हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की रिसालत तथा अ़ब्दीयत (बन्दा होना) के पद का भी वर्णन किया, अब कोई आदमी उस वक़्त तक इस्लाम में दाख़िल नहीं हो सकता जब तक अल्लाह तआ़ला की उलूहियत के इक़रार के साथ हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)की रिसालत और अ़ब्दीयत पर भी ईमान न ले आये।

हुज़ूर के ज़िक्रे ख़ैर की बलन्दी:

अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को सम्बोधित करके कहा :

और हम ने तुम्हारे एअ़ज़ाज़ व इकराम (मान सम्मान) के लिये तुम्हारे ज़िक्र को बुलन्द किया। (सूर–ए–इन्शिराह़)

बे शक यह हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के ज़िक्र की इन्तिहाई बुलन्दी है कि कल्म–ए–तय्यिब में, कल्म–ए–शहादत में, अज़ान में, नमाज़ में अल्लाह तआ़ला ने अपने ज़िक्र के साथ आप का ज़िक्र भी शामिल किया। दुन्या के कोने कोने में रात दिन में पांच बार अज़ानें होती हैं जिन में अल्लाह तआ़ला की उलूहियत (ईश्वरत्व) और बड़ाई के एअ़लान के साथ हुज़ूरे अकरम की रिसालत (ईशदौत्व) का भी एअ़लान होता है। इसी तरह हर नमाज़ में आप पर दुरूद व सलाम पढ़ना अनिवार्य किया गया।

फिर अल्लाह तअ़ला ने फ़रमाया:

और हमने आप को सारे जहान के लिए रहमत बना कर भेजा है। (अंबिया : १०७) अर्थात जहान वालों के हक़ में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को रहमते इलाही का ज़रीआ़ होने का सम्मान दिया गया, आप को "ख़ातमन्नबिय्यीन" का लक़ब दिया गया कौसर प्रदान हुआ। शब्द कौसर में हर प्रकार की दुन्यवी व उख़रवी (सांसारिक तथा पारलौकिक) निअ़मतें दाख़िल हैं। इन निअ़मतों में एक बड़ी निअ़मत हौ़ज़े कौसर है जो क़ियामत में आप को अ़ता होगा और उससे आप अपनी उम्मत को पिलाएंगे।

हुज़ूर पर सलात व सलाम का हुक्म :

बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं नबी पर

पस ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरूद व सलाम पढ़ो बहुत कसरत से। (अह़ज़ाब : ५६)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर दुरूद सलाम पढ़े जाने के हुक्म का यह अन्दाज़ कि अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद अपनी बे नियाज़ हस्ती को भी दुरूद भेजने वालों में शामिल फ़रमाया, यह ऐसा अन्दाज़ है कि इससे बढ़ कर हुज़ूर के एअ़ज़ाज़ व इकराम (सम्मान) की कोई और शक्ल मुम्किन ही नज़र नहीं आती। कलाम के इस अन्दाज़ से अल्लाह तआ़ला के यहां जिस बे इन्तिहा तक़र्रूब व महबूबीयत (निकटता) का इज़्हार हुज़ूर के हक़ में हो रहा है मअ़मूली समझ का आदमी भी बड़ी आसानी के साथ उसे समझ सकता है।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक़ामे महमूद वाले हैं

और रात में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ो यह ज़ाइद है तुम्हारे हक़ में क़रीब है कि खड़ा करे तुम को तुम्हारा रब मक़ामे महमूद में। (अस्राः७६) मक़ामे महमूद क्या है? मक़ामे महमूद शफ़ाअ़ते कुब्रा का मक़ाम है। हश्र के मैदान में जब किसी पैगम्बर को बोलने की हिम्मत न होगी उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर अर्ज़ कर के ख़िलक़त को मुसीबत से छुड़ाएंगे तब हर आदमी की ज़बान पर आपकी तअ़रीफ़ होगी और महशर का मैदान आप की तअ़रीफ़ से भर जाएगा। उस वक़्त शाने मुहम्मदी का कामिल ज़ुहर होगा । (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

ख़ुद रसूले ख़ुदा (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने क़ियामत के रोज़ ज़ाहिर होने वाली अपनी इम्तियाज़ी शान का ज़िक्र इस प्रकार किया है :

हज़रत अबू सईद (रज़ि०) से रिवायत है उन्हों ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन आदम की सारी औलाद का मैं सरदार हूंगा और यह बतौर फ़ख़्र (गर्व) के नहीं कहता और आदम तथा उनके सिवा जितने भी अंबिया हैं सब मेरे झण्डे तले होंगे और सब से ~~और सब से~~ पहले ज़मीन फट कर जो बाहर आए गा वह मैं हूं और यह भी मैं फ़ख़्र (गर्व) से नहीं कहता। (बल्कि निअ़मत के इज़्हार के तौर पर कहता हूं।) (तिर्मिज़ी)

फ़रमाया :

मैं जन्नत के मुआ़मले में पहला सिफ़ारिशी हूंगा। जितनी बड़ी तादाद में मेरी तस्दीक़ की गयी किसी नबी की नहीं की गई। (मुस्लिम)

फ़रमाया मैं अल्लाह का हबीब हूं :

हज़रत अ़म्र बिन क़ैस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर्चि हम दुन्या में सब के बाद हैं लेकिन क़ियामत में सब से आगे होंगे और देखो एक बात कहता हूं और फ़ख़्र (गर्व) से नहीं कहता, इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हैं, मूसा सफ़ीयुल्लाह हैं और मैं हबीबुल्लाह हूं। (दारमी)

फ़रमाया :

मैं क़ियामत के रोज़ जन्नत के दरवाज़े पर पहुचूंगा और दरवाज़ा खोलने को कहूंगा जन्नत का दारोग़ा पूछेगा आप कौन हैं? मैं कहूंगा मैं मुहम्मद हूं, वह कहेगा मुझे हुक्म दिया गया था कि आप से पहले किसी के लिए भी दरवाज़ा न खोलूं। (मुस्लिम)

यह हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वह बेमिस्ल फ़ज़ाइल जो सारी मख़्लूक़ में सिर्फ़ आप ही को अ़ता हुए। इन से यक़ीनी तौर पर साबित होता है कि आप ही अल्लाह तआ़ला के सब से ज़ियादा महबूब और मुक़र्रब हैं। यही हमारा अ़क़ीदा है और इसी अ़क़ीदे की हम मुसलमानों में तबलीग़ करते हैं, लेकिन दूसरी जानिब क़ुर्आन व हदीस में आप की बशरीयत व अ़ब्दीयत को भी इतनी ही सराहत (स्पष्टता) और तकरार के साथ बयान किया गया है अगर इन फ़ज़ाइल के साथ हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की अ़ब्दीयत व बशरीयत का बयान भी सामने रहेगा तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के मुआ़मले में इफ़्रात व ग़ुलू (बहुत बढ़ा देना) से बचे रहेंगे इसी लिए हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बशरीयत व अ़ब्दीयत के खुले हुए बयानात क़ुर्आन व हदीस से पेश करना ज़रूरी समझते हैं। (जारी)

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयास

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

पिछले पृष्ठों में आप उलेमा के त्याग और बलिदान की कुछ घटनाएं पढ़ चुके हैं। अब भारत–पाक उप महाद्वीप के इस्लामी इतिहास से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं। हिन्दुस्तान के प्रमुख और श्रेष्ठ इतिहासकार मौलाना गुलाम अली आजाद अपनी अनुपम पुस्तक 'मआसिरुल किराम' में लिखते हैं कि कसबा बिलगराम के प्रसिद्ध मुहद्दिस और लोक प्रिय अध्यापक मीर सैयद मुबारक के योग्य शिष्य मीर तुफैल मुहम्मद ने बयान किया है कि मैं मीर मुबारक की मज्लिस में एक बार हाजिर हुआ। वह वुजू के लिए उठे तो उनका पांव फिसल गया और गिर पड़े। मैंने जल्दी से उनका हाथ पकड़कर उठाया, तो वे बेहोश हो चुके थे। जब उन्हें होश आया तो मैंने इस कमजोरी का कारण पूछा। वे खामोश रहे। मैंने बार–बार आग्रह के साथ यह सवाल दोहराया, तो कहा कि मैंने तीन दिन से एक लुकमा भी नहीं खाया, घर में कुछ है ही नहीं। किसी से न तो बताया न सवाल किया।

मीर तुफैल मुहम्मद कहते हैं कि मैं यह देखकर और उनकी बात सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुआऔर अपने विचार से उनका पसन्दीदा भोजन लेकर आया। तुम्हें खुश रखे और तुम्हारे खाने और माल में बरकत दे, लेकिन मेरे बेटे इस खाने से मेरी क्षमा याचना स्वीकार कर लो। य़द्यपि यह खाना मेरे लिए हलाल है, परन्तु मेरे नफ्स (आत्मा) की इच्छा पर आया है, इसलिए मैं इसे नहीं खाऊंगा। खाने में न कोई आपत्ति है न कोई अवैध बात बल्कि तीन दिन के फाका के बाद तो मुर्दार भी हलाल हो जाता है, लेकिन मेरा मन इसे स्वीकार नहीं कर रहा है।

उन्होंने कहा कि मैंने अपने उस्ताद की यह बात सुन ली और खामोशी से वहां से खाना उठा लिया और वापस चला गया। थोड़ी देर बाद वही भोजन सर पर उठाए हुए वापस आया और कहा कि क्या आप को मेरे वापस चले जाने के बाद इस खाने की आशा बाकी रह गयी थी। उन्होंने कहा कि नहीं। मैंने कहा तो अब इसे खाने में क्या आपत्ति हो सकती है? उस्ताद को मेरी बात पसन्द आयी और कहा कि अपनी बुद्धि से मुझे पराजित कर दिया। इसके बाद बड़े शौक से खाना खाया।

अध्यापकों और उलमा की जमाअत में यही एक अनोखी व आश्चर्य जनक घटना नहीं है। इस तरह की अनेक घटनाएं मौजूद हैं। लौकिक सुख सामग्री, धन दौलत से विमुख होने की एक घटना यह है :

उत्तरी हिन्दुस्तान के राज्य रामपुर के एक प्रमुख विद्वान और उस्ताद मौलाना अब्दुर्रहीम के रूहेल खण्ड के अंग्रेज गवर्नर हाकिन्स ने बरेली कालेज में एक महत्वपूर्ण पद प्रदान किया और ढाई सौ रूपया मासिक वेतन निर्धारित किया जो आज के सिक्के में तीस हजार रूपयों से अधिक हुए। यह वायदा किया कि आगे उनका वेतन और पद में वृद्धि भी कर दी जाएगी।

मौलाना अब्दुरहीम ने क्षमा चाहते, हुए कहा कि राज्य उनको दस रूपया मासिक देता है वह इस नौकरी को स्वीकार करते हैं तो उनका वजीफा रोक दिया जाएगा। गवर्नर हाकिन्स ने आश्चर्य के साथ कहा लेकिन मैंने तो ढाई सौ रूपया मासिक की बात की है। यह दस रूपए के मुकाबले में बहुत अधिक है। तो मौलाना ने कहा कि मेरे घर में एक मीठे बेर का पेड़ है जो मुझे बहुत पसन्द है बरेली में यह कहां मिलेगा। गवर्नर मौलाना का उद्देश्य समझ न सका। जवाब दिया कि मैं आपकी पसन्द के बेर बरेली पहुंचने का प्रबन्ध करूंगा। मौलाना ने फिर कहा कि रामपुर में मेरे कुछ शिष्य हैं मैं उनको पढ़ाता हूं और उनका पूरा खर्च उठाता हूं, मेरे बरेली चले जाने से उनकी बहुत अधिक हानि हो जाएगी। गवर्नर ने उन्हें सन्तुष्ट करते हुए कहा कि सब के लिए वजीफे का आदेश कर दूंगा और वे वहां अपनी शिक्षा प्राप्त करते रहेंगे। अन्त में मौलाना ने फरमाया मगर मैं कियामत के दिन क्या जवाब दूंगा जब मुझसे सवाल किया जाएगा कि तुम पढ़ने एवं पढ़ाने का मुआवजा लेते थे।

मुफ्ती सदरूद्दीन आजुरदा सरिश्ता–ए–तालीम (शिक्षा विभाग) के

उच्च अधिकारी थे। उन्होंने मलिकुल उलमा मौलाना अब्दुल उला बहरूल उलूम को बिहार के बरदुवान कालेज में अध्यापन कार्य के लिए नियुक्त किया और अच्छे खासे वेतन का प्रस्ताव किया। मौलाना बहरूल उलूम को मालूम हुआ तो उन्होंने क्षमा याचना करते हुए कहा कि मेरे साथ सौ छात्र रहते हैं, जिनकी शिक्षा के अलावा खाने पीने और आवास का भी मैं ही प्रबन्ध करता हूं। मेरे चले जाने से उनका बहुत नुकसान होगा। मुफती आजुरदा ने सारे छात्रों की जिम्मेदारी ले ली और बड़े आग्रह के साथ कहा कि उनकी सख्त आवश्यकता है और उनसे बड़ा लाभ पहुंचने की आशा है तो वे चले गये।

मद्रास के नवाब वालाजाह ने उनके लिए एक हजार रूपया मासिक निर्धारित किया। मौलाना बहरूल उलूम यह पूरी रकम गरीब छात्रों पर खर्च कर देते थे। एक बार उनके घर वालों को कुछ आर्थिक परेशानी हुई तो उनके बेटे मौलाना अब्दुन्नाफे लखनऊ से उनकी सेवा में हाजिर हुए और कहा कि आप अपने खर्च में कुछ कमी करके कुछ रकम हमें भेज दिया करें। मौलाना ने बेटे की बात सुनकर कहा कि छात्रों की जरूरत बहुत अधिक है, गुंजाइश नहीं निकल सकती।

उलमा की इस कुरबानी, त्याग और बलिदान के कारण न केवल उनके शिष्य और मुस्लिम जनता उनका आदर सम्मान करते थे बल्कि समय के शासक भी उनसे अत्यन्त प्रेम और उनका आदर सम्मान करते थे।

काजी शहाबुद्दीन बीमार हुए तो सुल्तान इब्राहीम शरकी उनको देखने के लिए आए और उनके इलाज के लिए बहुत अच्छा प्रबन्ध किया, फिर अल्लाह से दुआ की कि ऐ पालनहार! काजी दौलताबादी को स्वास्थ्य कर दे और और इनकी बीमारी मेरी ओर भेज दे। लोगों को मुझसे अधिक काजी साहब की जरूरत है। तारीख फरिश्ता का लेखक लिखता है कि काजी साहब दौलताबाद बादशाह के देहान्त के बाद दो साल जीवित रहे।

सुलतान जलालुद्दीन अकबर को जब अमीर फतहुल्लाह शीराजी के कत्ल की सूचना मिली तो उसे बड़ा गहरा दुख हुआ। उसने कहा कि काश यूरोप वाले उसे जिन्दा गिरफतार कर लेते और बदले में मुझसे सारी दौलत ले लेते, तब भी मैं ही फायदा में रहता। मुगल सम्राट शाहजहां ने आदर व सम्मान के लिए मुल्ला अब्दुल हकीम सियाल कोटी को दो बार चांदी से और काजी मुहम्मद मुस्लिम हर्वी को एक बार सोने से तोला।

मौलाना वलीयुल्लाह लखनवी ने अपनी किताब अरबअ़ में लिखा है कि जब मद्रास के नवाब वाला जाह की दावत पर मौलाना अब्दुल्ला बहरूल उलूम की सवारी महल के गेट पर पहुंची और मौलाना ने पालकी से उतरने का इरादा किया तो नवाब वाला जाह ने बैठे रहने का इशारा किया फिर उनकी पालकी को अपने कन्धे पर उठा कर महल के अन्दर लाया और अपनी जगह पर उनको बैठाया और उनके पांव चूमे। फिर कहा : मैं कितना भाग्यशाली हूं कि आप ने पधार कर मुझे सम्मान दिया।

माध्यमिक विद्यालयों में होगा नया प्रयोग

परीक्षा में मिले नम्बरों के हिसाब से बनेंगे बच्चों के समूह

इलाहाबाद । शिक्षा विभाग माध्यमिक विद्यालयों के बच्चों पर नया प्रयोग करने जा रहा है। अब हर कक्षा में पिछले साल की परीक्षा में मिले नंबरों के आधार पर बच्चों के ग्रुप बनाये जायेंगे। जो बच्चा जिस स्तर का होगा उसके साथ वैसा ही ट्रीटमेंट किया जायेगा। कमजोर बच्चों पर ज्यादा ध्यान दिया जायेगा।

उन्हें पिछले साल का कोर्स रिवाइज कराने के साथ ही इस स्तर पर लाने का प्रयास किया जायेगा कि वे अगली कक्षा में कम से कम अच्छे नम्बरों से पास हो सकें। जल्द ही जिले के सभी शासकीय व सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के बच्चों को वार्षिक परीक्षा में प्रदर्शन के हिसाब से तीन ग्रुप में विभाजित किया जायेगा। पहला ग्रुप उन बच्चों का होगा, जो कई बार फेल हो चुके होंगे और उनके आगे भी पास होने की कोई संभावना नहीं होगी। दूसरे ग्रुप में उन बच्चों को रखा जायेगा जिन्होंने पिछली कक्षा तृतीत श्रेणी में पास होगी और उनमें सुधार की जरूरत होगी। तीसरा ग्रुप ऐसे बच्चों का होगा जो पढ़ाई में तेज होंगे इसमें पचपन प्रतिशत से अधिक अंक के साथ पिछली कक्षा पास करने वाले बच्चों को शामिल किया जायेगा। जो छात्र पढ़ाई में काफी कमजोर हैं उनके लिए विशेष बन्दोबस्त किये जायेंगे। पढ़ाई में कमजोर बच्चों के सत्र शुरू होते ही पिछले वर्ष का पूरा पाठ्यक्रम तैयार कराया जायेगा। इसके लिए विषय अध्यापक प्रतिदिन एक्सट्रा क्लास लेंगे। पिछले वर्ष का कोर्स तैयार होने के बाद बच्चों की फिर से परीक्षा ली जायेगी। अगर बच्चे फेल होंगे तो उनकी फिर से परीक्षा होगी। ऐसे बच्चों की पिछले साल की और वर्तमान कक्षा की तैयारी साथ-साथ चलेगी। अभिभावकों को बच्चों की रिपोर्ट कार्ड सीधे भेजी जायेगी। इस बात का ख्याल रखा जायेगा कि जो पढ़ाया जा रहा है वह बच्चों की समझ में आये। ऐसा ही तृतीय श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण बच्चों के साथ भी किया जायेगा। फर्क सिर्फ इतना होगी कि उनकी एक्सट्रा क्लास सप्ताह में तीन दिन चलेगी।

जिला विद्यालय निरीक्षक महेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि जो बच्चे तेज हैं उनका विशेष ख्याल रखा जायेगा। उन्हें और बेहतर बनाने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जायेंगी। ऐसे बच्चों की एक्सपर्ट से काउंसिलिंग भी करवायी जायेगी। काउंसिलिंग शिक्षा विभाग द्वारा चुने गये विशेषज्ञ करेंगे। समय-समय पर शिक्षा विभाग के अधिकारी भी इनकी जांच करेंगे। जल्द ही माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य को इस तरह की व्यवस्था करने के निर्देश दिये गये हैं। उनका कहना है कि शासकीय व सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में यह प्रयोग सफल रहा तो वित्तविहीन विद्यालयों में भी यह व्यवस्था लागू की जायेगी। (साभार-दैनिक जागरण)

स्वतंत्रता संग्राम में टीपू सुलतान की भूमिका

मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली नदवी

हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के आन्दोलन में मुसलमानों का हिस्सा स्वाभाविक रूप से बहुत ही प्रमुख व प्रत्यक्ष (मुम्ताज़ व नुमायां) रहा है। उन्होंने जंगे आजादी में मार्ग दर्शक की भूमिका अदा की है। इस की वजह यह थी कि अंग्रेजों ने जब हिन्दुस्तान पर कब्जा करना शुरू किया और धीरे धीरे एक एक प्रान्त और इलाका उनके अधीन आने लगा उस समय मुसलमान ही हिन्दुस्तान के शासक थे।

सबसे पहला शख्स जिसको इस खतरे का एहसास हुआ वह मैसूर का साहसी, दूरदर्शी और स्वाभिमानी शासक फतह अली खां टीपू सुलतान (१७९६) था जिसने अपनी प्रखर बुद्धि और गैर मामूली जिहानत से यह महसूस किया कि अगर कोई संगठित शक्ति उनके मुकाबले पर न आई तो अन्ततः पूरा देश उनके चराहगाह बन जाएगा। अतः उन्होंने अंग्रेजों से लड़ने का फैसला किया और वह अपने पूरे साजो सामान, संसाधनों और फौजी तैयारियों के साथ उनके मुकाबले में मैदान में आ गए। टीपू सुलतान ने हिन्दुस्तान के राजाओं महाराजाओं और नवाबों को अंग्रेजों से जंग पर आमादा करने की कोशिश की। इस मकसद से उन्होंने सुलतान तुर्की सलीम उसमानी और दूसरे मुसलमान बादशाहों और हिन्दुस्तान के उमरा व नवाबों से पत्राचार किया। अपने दूतों को फ्रांस, तुर्की, ईरान और दूसरे देशों में भेज कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया। नेपोलियन ने भी उनसे सहयोग किया और विस्तार वादी और खतरनाक ब्रिटिश सत्ता को समाप्त करने के उद्देश्य में उनकी सहायता की। वह जीवन भर अंग्रेजों से कठोर संघर्ष में मशगूल रहे। करीब था कि अंग्रेजों की तमाम योजनाओं पर पानी फिर जाए और वह इस देश से बेदखल हो जाएं परन्तु अंग्रेजों ने दक्षिणी भारत के सरदारों को अपने साथ मिला लिया और आखिर कार इस मुजाहिद बादशाह ने ४ मई १७९९ को श्रीरंगापट्नम की युद्ध में शहीद होकर प्रतिष्ठा प्राप्त की। उन्होंने अंग्रेजों की गुलामी और कैद और उनकी दया पर जिन्दा रहने पर मौत को तरजीह दी। उनका मशहूर ऐतिहासिक कथन है – "गीदड़ की सौ साल की जिन्दगी से शेर की एक दिन की जिन्दगी बेहतर है।"

जब जनरल हार्स को सुलतान की शहादत की सूचना मिली तो उसने उनकी लाश पर खड़े होकर यह शब्द कहे – "आज हिन्दुस्तान हमारा है।" इतिहास ने उसके कथन को प्रमाणित कर दिया।

हिन्दुस्तान का इतिहास सुलतान टीपू से अधिक साहसी, दूरदर्शी, धर्म व देश के फिदाई और विदेशी सत्ता के दुश्मन से परिचत नहीं। अंग्रेजों के लिए टीपू सुल्तान से अधिक खौफनाक और काबिले नफरत शख्सियत कोई न थी। बहुत दिनों तक (वह जमाना हमने भी देखा है) वह अपने दिल की आग बुझाने और आजादी व जिहाद के इस हीरो को अपमानित करने के लिए अपने कुत्तों को सुल्तान टीपू पुकारते थे।

अंग्रेजों की सत्ता से और इस अन्तर्राष्ट्रीय सत्ता के सिलसिले में भारत प्रायदीप पर ब्रिटिश कब्जे की अहमियत और उसकी अहद साजी (युगनिर्माण) इन्कलाब बरपा करने को समझने और उसके भयानक नतीजों से (जो न केवल हिन्दुस्तान बल्कि मुस्लिम समुदाय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और भविष्य से प्रभावित करते थे) अवगत और भयभीत होने की मिसालें बड़े–बड़े दूरदर्शी, जमाने की परिस्थितियों के जानने वाले गौरव व सम्मान वाले लोगों के यहां भी बहुत कम मिलती है। अगर उस की (टीपू सुलतान के अतिरिक्त) कोई मिसाल मिलती है तो वह सैयद अहमद शहीद (१२०१ से १२४६ हिजरी) के उन पन्नों में मिलती है जो उन्होंने महाराजा गुवालियार के प्रधान मंत्री राजा हिन्दू राव और उनके सेनापति गुलाम हैदर खां के नाम लिखे। राजा हिन्दूराव के खत में फरमाते हैं – "जनाब को खूब मालूम है कि यह परदेसी समुद्र पार के रहने वाले दुन्या जहां के ताजदार और यह सौदा बेचने वाले सलतनत के मालिक बन गए हैं। बड़े बड़े शासकों के राज्य और उनकी इज्जत व मान सम्मान को उन्होंने मिट्टी में मिला दिया है। जो हुकूमत और राजनीति के मर्दे मैदान थे वह हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। इसलिए मजबूरन चन्द गरीब और बेसरोसामान कमरे हिम्मत बान्धकर खड़े हो गए है और केवल

अल्लाह के दीन की सेवा के लिए उठे हैं। माल व दौलत की उनको जरा भी लालच नहीं है।

गुवालियार के सेनापति हैदर के नाम खत में लिखते हैं –"मुल्क हिन्दुस्तान का बड़ा भाग विदेशियों के हिस्से में चला गया और उन्होंने हर जगह अत्याचार और जियादती पर कमर बान्धी है। हिन्दुस्तान के हाकिमों की हुकूमत बर्बाद हो गई। किसी को उसके मुकाबले की ताब नहीं बल्कि हर एक उनको अपना आका (स्वामी) समझने लगा है। चूंकि बड़े–बड़े शासक उनका मुकाबला करने का ख्याल छोड़ करके बैठ गए हैं, इसलिए कुछ साधारण लोगों ने इस का बीड़ा उठाया है।

शायद इसी ईमानी प्रतिभा (फिरास्ते ईमानी) दीनी गौरव और प्रखर बुद्धि और अमल की क्षमता में यकसानियत की वजह यह भी हो कि सुलतान शहीद के खान्दान का सय्यद अहमद शहीद के खान्दान से रूहानी तरबीयती संबंध था, जिस पर बहुत कम किताबों और लेखों में जो सुलतान शहीद के बारे में लिखे गए हैं, संकेत किया गया है और "वकाए अहमदी" में इस बयान से जाहिर हुआ जो सय्यद साहब के सफरे हज के मौके पर कलकत्ता में ठहरने के सिलसिले में उनके खानदान की पुत्रियों और पुत्रों के सय्यद साहब को दावत देने और उनसे बैअत का सम्बन्ध कायम करने के सिलसिले में आया है।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि सुलतान शहीद की शहादत ने हिन्दुस्तान की बनती हुई तारीख की दिशा बदल दी और उसको ब्रिटिश सत्ता के हवाले कर दिया जिसका प्रभाव भारत पर बहुत दूरगामी और गंभीर पड़ा।

मां का हक

कहते हैं कि एक साधारण व्यक्ति अपनी योग्यताओं, अच्छे कर्मो तथा सेवाओं के परिणाम स्वरूप राजा बन गया। वह अपनी मां की सेवा पहले भी करता था अब विशेष ढंग से इस ओर ध्यान देने लगा। एक दिन उसके मन में आया कि मैं ने तो अपनी मां का हक अदा कर दिया लेकिन देखूं मेरी मां इसे स्वीकारती हैं या नहीं। वह अपनी मां के पास गया और बड़े आदर सम्मान से पूछा :

माता जी ! क्या मैंने आप का हक अदा कर दिया?

माता : क्यों नहीं बेटे तुम ने जैसी मेरी सेवा की और मेरा ख़याल रखा शायद ही किसी को ऐसी तौफीक मिली हो।

बेटा : माता जी मैं यह जानना चाहता हूं कि मैंने आपका हक अदा कर दिया या नहीं?

फिर मां ने बेटी की प्रशंसा की और आशीर्वाद दिया परन्तु बेटे ने आग्रह की कि माता जी मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिए। मां बोली बेटे फिर तो इसका उत्तर मैं कल इसी समय दे सकूंगी। बेटा अपने दरबार चला गया।

मां ने दीहात की एक गरीब औरत से वह कपड़े मंगवाए जो वह सौर में पहने हुए थी। जिससे उसके बच्चे के पेशाब और शरीर पर मले जाने वाले तेल की भभक निकल रही थी साथ कपड़े बुरी तरह मैले भी थे।

दूसरे दिन जब राजा ने मां की सेवा में हाजिर हो कर अपना प्रश्न दोहराया तो मां बोली :बेटे एक काम करो यह कपड़े ले जाओ और बाथरूम में अपने शाही कपड़े उतार कर यह कपड़े पहन कर आओ और फिर अपने प्रश्न का उत्तर लो। राजा कपड़ों के पास गया परन्तु कपड़ों में हाथ लगाने का भी साहस न कर सका पहनना तो दूर की बात है। मां बोली बेटे तुम्हारी पैदाइश पर ऐसे क़पड़े मैंने हफतों पहने हैं। बेटा बोला मां मुझे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। मनुष्य को चाहिए कि अपनी मां की खूब सेवा करे और यह न समझे कि मैंने अपनी मां का हक अदा कर दिया।

(पृष्ठ १६ का शेष)

है। कभी जाइज झाड़ फूंक से अल्लाह तआला अपनी दया कर देता है तो मरज़ भी दूर हो जाता है। अतः जाइज़ झाड़ फूंक से लाभ उठाना चाहिए। झाड़ फूंक करने वाला अगर मुत्तक़ी (संयमी) परहेज़गार होता है तो आयतुलकुर्सी या इस जैसे औराद (जपों) से शैतान भागने पर मजबूर हो जाता है।

शैख़ सअ़दी ने गुलिस्तां में एक बुज़ुर्ग (महापुरूष) का वाकिआ़ लिखा है कि वह एक सख़्त ज़ख़्म में मु'ब्तला थे और मुद्दतों (लम्बे काल तक) मरीज़ रहे लेकिन बराबर ख़ुदा का शुक्र अदा करते रहे। किसी ने पूछा कि ऐसी मुसीबत (आपत्ति) में मुब्तला हो फिर शुक्र किस बात का करते हो? जवाब दिया शुक्र इस बात का करता हूं कि खुदा ने जिस्मानी तक्लीफ़ (शारीरिक कष्ट) दिया है जो इस जिस्म के साथ समाप्त हो जाएगा उसका शुक्र है कि उस ने गुनाहों से बचा लिया गुनाहों की सज़ा तो हमेशा वाली ज़िन्दगी में मिलेगी और वह बड़ी ही तकलीफ़ वाली होगी।

इस वाकिअ़े से सबक लेना चाहिए और हर मुसलमान को चाहिए कि वह जिस्मानी तक्लीफें बरदाश्त कर ले मगर नाजाइज़ झाड़ फूंक का गुनाह न ले और अपनी आ़क़िबत ख़राब न करे।

बुरे दोस्त की संगत से दूर रहो। बुरा दोस्त तो विषैले सर्प से भी बुरा होता है। विषैला सर्प केवल जान लेता है जबकि बुरा दोस्त जान व ईमान दोनों के लिए खतरा है।

जुनून (पागलपन) और जिन्न

अबू मर्गूब

आमतौर से जुनूनं दिमाग़ में किसी ख़राबी के सबब से होता है। यह ख़राबी किसी शैतान के असर से भी मुम्किन है। यह रोग भी इब्तिदाई मर्हले (प्रारंभिक अवस्था) में इलाज से बहुत कुछ ठीक हो जाता है। लेकिन कुछ न कुछ कमी रहती है और जीवन भर दवा भी खाना पड़ती है और दिमाग़ को बहुत थकाने से बचाना पड़ता है।

मुसनद इमाम अहमद जिल्द ४ पृष्ठ १३२ के अनुसार जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने "निकल अल्लाह के दुश्मन" कह कर एक जुनूनी के शैतान को हटा कर उसे सिहतमन्द किया था या एक बच्चे को ठीक किया था वग़ैरह यह तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुअजिज़ा था ऐसा नहीं कि हम लोगों में से कोई वही कलिमात कहे और पागल ठीक हो जाए, लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत समझते हुए इस तरह इलाज करना चाहिए, यक़ीनी तो नहीं लेकिन शिफ़ा (स्वस्थ होना) की उम्मीद ज़ियादा है और सवाब तो ज़रूर ही मिलेगा लेकिन इलाज का यह तरीक़ा अपनाने वाले को पूरी उम्मीद के साथ ही यह अमल अपनाना चाहिए। मिर्गी हो, जुनून हो, आसेब का ख़याल हो हर सूरत में मुम्किन हो तो किसी अच्छे डाक्टर से इलाज भी ज़रूर कराना चाहिए इस लिए कि दुआ तअवीज के चक्कर में अगर मरज़ बढ़ गया तो पछताने के सिवा कुछ हाथ न आएगा। जिन हालात में किसी आसेब का शक किया जाता है कभी वह हालात किसी दिमाग़ी या नफ़्सियाती मरज़ के सबब होते हैं लिहाज़ा इलाज में कोताही न चाहिए।

तअन ताऊन के बारे में मुसनद इमाम अहमद जिल्द ४ पृष्ठ ३६५ पर है कि वह दोनों शैतान की जानिब से हैं, उनसे उम्मत की हलाकत तो होगी मगर शहादत मिलेगी। ग़ौर करने की बात है, "तअन" में एक इन्सान एक मोमिन को बल्लम या उस जैसी चीज़ से मारता है और वह शहीद हो जाता है। आज कल के कारतूस भी तअन का काम करते हैं लेकिन इस तअन (जिस्म में घुस जाने वाली मार) को शैतान की मार बताया गया है। यह सहीह है कि हर गुनाह इन्सान शैतान के बहकाने ही पर करता है, अगर शैतान इतना मुसल्लत (व्याप्त) हो कि इन्सान दीवाना हो जाए तब तो उसके गुनाहों पर उसकी पकड़ भी न होगी, लेकिन शैतान बड़ा मक्कार है, वह तो चाहता है कि मोमिन बन्दा गुनाह करे और उसकी पकड़ हो इस लिए उसको होश व हवास में रखते हुए बुराइयों पर उभारता है अतः शैतान उस ज़ालिम क़ातिल पर सवार हुआ और उस ने एक मोमिन बन्दे को क़त्ल कर दिया। अगर्चि उस क़ातिल को दुन्या व आख़िरत दोनों जगह सज़ा मिलेगी लेकिन इस क़त्ल के काम को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने शैतान से मन्सूब किया (सम्बन्ध बताया) इसलिए कि शैतान ने बहकाया और इस क़ातिल ने शैतान की नयाबत की।

इसी प्रकार ताऊन का सबब ज़ाहिर में चूहों के पिस्सू और उनके जरासीम (कीटाणु) हैं लेकिन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की उम्मत को जो भी क़त्ल करेगा वह शैतान की नयाबत (प्रतिनिधित्व) करेगा इस प्रकार यह जरासीम जो मोमिन बन्दों की हलाकत का सबब बने यह शैतान के नाइब (प्रतिनिधि) हुए इसी लिए उन के काम को शैतान से मन्सूब (सम्बन्धित) बताया गया। मिस्र के कुछ उलमा का कहना है कि वह जरासीम (कीटाणु) स्वयं शयातीन हैं लेकिन जम्हूर उलमा ने इस को नहीं माना है। फिर भी यह बात तो समझ में आती है कि जिस प्रकार एक रिवायत के अनुसार शैतान चुहिया आदि को उभार कर आग लगवा सकता है इन जरासीम को एक मोमिन बन्दे तक पहुंचा कर उन को हानि पहुंचा सकता है। (वल्लाहु अअलमु)

ताऊन बुरी बला है :

ताऊन बुरी बला है, ईमान न लाने वालों के लिए अल्लाह का अज़ाब है अगर्चि ईमान वालों के लिए शहादत का सबब है फिर भी जहां ताऊन हो वहां जाने से रोका गया है, अलबत्ता अपनी बस्ती में हो जाए तो वहां से भागने को भी रोका गया है। अभी तक इस का यक़ीनी इलाज नहीं जाना जा सका है अगर्चि कुछ डाक्टरों का कहना है कि इलाज ज्ञात हो चुका है, लेकिन यह बात मानी हुई है कि हर ताऊन के कीटाणु एक जैसे नहीं हैं अभी कुछ

वर्षों पहले सूरत में ताऊन पड़ा था तो किसी डाक्टर से कुछ न बन पड़ा था। कितने अस्पतालों से ख़बरें अख़बारों में आईं कि किसी तरह मरीज़ वहां पहुंचा तो डाक्टर अपने अ़मले के साथ अपनी जान बचाने को अस्पताल से भाग खड़े हुए। जब कि सूरत के मुसलमान ताऊन के रोगियों की देख भाल करते उनकी मदद करते मरने वालों को कफ़नाते दफ़नाते। ताऊन में भी मोमिन बन्दों को अज़ान और आयतलकुर्सी से शैतानों को भगाने की कोशिश करना चाहिए।

लीकोरिया और शैतान :

लीकोरिया (इस्तिहाज़ा) भी एक मरज़ है। जिस का इलाज हो जाता है लेकिन एक रिवायत में इस को भी शैतान की तरफ़ से बताया गया है लेकिन किसी दुआ तअ़वीज़ से इस के इलाज का ज़िक्र नहीं पढ़ा। मैं समझता हूं कि इस मरज़ को भी शैतान से इस लिए जोड़ा गया कि लीकोरिया वाली औरत हैज़ (माहवारी) के धोखे में पड़ कर नमाज़, रोज़ा, तिलावत जैसी इबादतों से अपने को महरूम (वंचित) कर लेती है और शैतान ख़ुशियां मनाता है गोया कि इस मरज़ ने शैतान की नयाबत की यह भी मुम्किन (संभव) है कि शैतान इस मरज़ के अस्बाब (कारण) पैदा कर देता हो इस लिए रिवायत में इस को शैतान की लत्ती बताया गया।

ख़ुलासा यह कि ऊपर के बयानात से यह तो साबित है कि शैतान को यह इख़्तियार भी मिला है कि वह इन्सानों को कुछ रोगों में लगा दे लेकिन उसके यह इख़्तियारात (अधिकार) सीमित हैं जब कि नेकियों से रोकने बुराइयों में लगाने की चेष्ठा में उसके इख़्तियारात वसीअ़ (व्यापक) हैं जिन में वह हर वक़्त लगा रहता है। अगर जिस्मानी व जिहनी इख़्तियारात भी उतने वसीअ़ होते जितने बुराइयों पर उभारने के तो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की उम्मत का जीना कठिन हो जाता लेकिन उसके यह इख़्तियारात कितने सीमित हैं और कब उसको अवसर दिया जाता है कि वह इन्सानों को विशेष कर ईमान वालों को शारीरिक तथा मानसिक कष्ट पहुंचा सके इसका विस्तारित ज्ञान हम को नहीं दिया गया। इन कष्टों से बचने के लिए भी नमाज़ों की पाबन्दी, हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की पैरवी अल्लाह से शरण याचना (तअ़व्वुज़) आयतलकुर्सी का पढ़ना और तौबा व इस्तिग़फ़ार अपनाना आवश्यक है। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सिखाई हुई सुब्ह व शाम वाली दुआएं, इश्राक़ व अव्वाबीन की नमाज़ें भी सुरक्षा प्राप्त करती हैं परन्तु चाहिए कि तमाम इबादतें और ज़िक्र आदि केवल अल्लाह की ख़ुशी प्राप्त करें यह लाभ भी मिल जाएंगे। अल्बत्ता दुआओं में इन जिस्मानी तक्लीफ़ों से बचने की भी दुआएं मांगना चाहिएं।

नाजाइज़ झाड़ फूंक :

नाजाइज़ झाड़ फूंक से जो कभी फ़ाइदा नज़र आ जाता है तो वही शक्ल होती है कि हल्का मरज़ होता है झाड़ फूंक से नफ़्सियाती असर पड़ता है और तबीअ़त (मन) मरज़ को दूर कर देती है और कभी सच मुच किसी उद्दण्ड जिन या शैतान का असर होता है तो नाजाइज़ झाड़ फूंक से शैतान अलग हो जाता है ताकि नाजाइज़ झाड़ फूंक से अ़क़ीदत (आस्था) बनी रहे और वह इस गुनाह में फंसा रहे कारण यह कि शैतान इन्सान को तक्लीफ़ (शारीरिक कष्ट) के मुक़ाबले में गुनाह में फंसा देखना चाहता है। मैंने तो बअ़ज़ झाड़ फूंक करने वालों से फूंक मारते वक़्त "दुहाई लोना चम्मारी की" कहते सुना है। यह तो खुला हुआ शिर्क है। अतः किसी मुसलमान के लिए बिल्कुल जाइज़ नही कि वह नाजाइज़ झाड़ फूंक वाले से फूंक डलवाए। ग़ैर मुस्लिमों की झाड़ फूंक सद फ़ीसद (शत प्रतिशत) नाजाइज़ होती है। बअ़ज़ मुसलमान भी ग़ैर मुस्लिमों से सीख कर या किसी शैतान से सीख कर नाजाइज़ झाड़ फूंक करके अपना ईमान बरबाद करते हैं।

आसेब :

अचानक लग जानेवाली बीमारियों को आ़म (साधारण) लोग जिन्न या भूत का असर समझ लेते हैं और उसे आसेब कहने लगते हैं मगर आ़म तौर से वह आसेब नहीं होता, मरज़ ही होता है, ऐसी सूरत में झाड़ फूंक से बअ़ज़ मरीज़ अच्छे हो जाते हैं तो लोग कहते हैं कि अगर मरज़ होता तो झाड़ फूंक से कैसे अच्छा हो जाता। अस्ल में हल्के मरज़ में जब अ़क़ीदत (आस्था) के साथ झाड़ फूंक करवाई जाती है तो मिज़ाज बन जाता है कि अभी आसेब दूर हो जाएगा और सिहत हो जाएगी। आराम मिल जाएगा। बस नफ़्सियाती असर (मनोप्रभाव) से मनोबल मरज़ को दूर कर देता है अतः वह झाड़ फूंक का नहीं मन का चमत्कार है परन्तु झाड़ फूंक के बिना साधारण लोगों का मन इस प्रकार काम नहीं कर सकता।

कभी वास्तव में आसेब होता है जो जाइज झाड़ फूंक से ठीक होता

(शेष पृष्ठ १७ पर)

नेहरू की एक गलती ने

आज़ादी का रूख मोड़ दिया

हबीबुल्लाह आजमी

जून स० १९४६ में कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने कैबिनेट मिशन प्लान की मंजूरी देदी और भारत को दो भागों में बंटने से बचा लिया। मौलाना आजाद अपनी पुस्तक इंडिया विन्स फ्रीडम (India Wins Freedom) में लिखते हैं कि आजादी के आदोलन के इतिहास में यह एक शानदार घटना थी। इसका अर्थ यह था कि हिन्दुस्तान की आजादी का प्रश्न हिंसा और टकराव के बजाए बातचीत और सहमत से हल हो चुका था। और फलस्वरूप सम्प्रदायिक समस्या का समाधान हो गया था। पूरे भारत में खुशी की लहर दौड़ गई और पूरी जनता आजादी की मांग पर एकमत हो गई थी। हम लोग बहुत खुश थे लेकिन यह पता नहीं था कि हमारी खुशी कब्ल अ़जवक्त (समय से पहले) थी और गम्भीर मायूसी हमारी राह देख रही थी।

मैं १९३६ में कांग्रेस का सदर चुना गया था

कांग्रेस के संविधान के अनुसार मेरा टर्म (कार्य अवधि) केवल एक साल का था। साधारण परिस्थितियों में कांग्रेस अध्यक्ष (सदर) का चुनाव १९४८ में हो जाना चाहिए था। परन्तु सियासी सरगर्मियों में दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद सत्याग्रह और मेरे १९४० में जेल जाने के कारण बन्द हो गयी थीं। और फिर भारत छोड़ो आन्दोलन में कांग्रेस के सभी नेताओं के जेल चले जाने की वजह से कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव नहीं हो सका और मैं अध्यक्ष पद पर बना रहा। अब हालात ठीक हो चुके थे इसलिए मैंने फैसला किया कि सदर का चुनाव हो जाना चाहिए। कांग्रेस हाई कमाण्ड और पूरे देश ने मेरे इस विचार का विरोध किया। उस समय मेरी एक रेल यात्रा में हर स्टेशन पर एक भारी भीड़ ने प्रदर्शन कर मेरे इस विचार का विरोध किया। और मेरे अध्यक्ष पद पर बने रहने का अनुरोध किया। परन्तु मेरी अन्तर आत्मा की मांग यही थी कि अब मुझे अध्यक्ष पद छोड़ देना चाहिए। मैंने प. जवाहर लाल नेहरू का नाम आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित कर दिया और वह सर्वसम्मत से अध्यक्ष चुन लिए गए।

६ जुलाई १९४६ को कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग बुलाई गई और आल इण्डिया कमेटी में पेश करने के लिए कैबिनेट मिशन प्लान की मंजूरी के लिए प्रस्ताव तैयार किया गया।

जब आल इण्डिया कांग्रेस के अधिवेशन की बैठक शुरू हुई तो मैंने जवाहर लाल को कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया और इसके बाद मैंने कैबिनेट मिशन प्लान को पेश किया और संक्षिप्त रूप में इस की रूप रेखा प्रस्तुत की बामपन्थी और सोशलिस्ट ग्रुप ने इस का कठोर विरोध किया परन्तु उनका जवाब देते हुए मैंने तमाम तर्कों और दलीलों के पेश करते हुए कहा कि अहिंसा और वार्तालाप के द्वारा ब्रिटिश सरकार से हिन्दुस्तान की आजादी के कौमी मांग की मंजूर संसार के इतिहास में एक बेमिसाल उपलब्धि है। मेरी तकरीर ने सदस्यों पर एक निर्णायक प्रभाव डाला और प्रस्ताव भी बहुमत से पास हो गया। इसके बाद ही एक ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी जिसने इतिहास की दिशा मोड़ दी। १० जुलाई को जवाहर लाल ने एक प्रेस कांफ्रेंस बम्बई में बुलाई जिसमें उन्होंने एक हैरत अंगेज बयान दे दिया। एक पत्रकार ने पूछ दिया कि आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी द्वारा प्रस्ताव की मंजूरी का यह अर्थ है कि कांग्रेस ने कैबिनेट मिशन प्लान का अक्षरतः स्वीकार कर लिया है जिसमें एक आरज (अल्पकालिक) सरकार का गठन भी शामिल है।

जवाहर लाल ने जवाब देते हुए कहा कि कांग्रेस संविधान सभा (Constituent Essembly) में अपनी आजाद राय के साथ शरीक होगी और परिस्थितियां जैसी पैदा होंगी। उनका सामना करने के लिए आजाद होगी। पत्रकार ने आगे प्रश्न किया इसका अर्थ यह है कि कैबिनेट मिशन पलान को नर्म कर के बदला भी जा सकता है। जवाहर लाल ने जवाब दिया कि कांग्रेस ने संवधिान सभा में शरीक होने को मंजूर किया है और कैबिनेट मिशन पलान को नर्म करने या बदल देने के लिए आजाद है।

उधर मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन प्लान को बड़े दबाव में मंजूर किया था। जिनाह इससे बहुत खुश नहीं थे। लीग कौंसिल में जिनाह ने अपनी तकरीर में साफ साफ कहा कि उन्होंने प्रस्ताव को मंजूरी की सिफारिश

इसलिए की है कि इस से बेहतर कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता था। उनके राजनीतिक सलाहकारों की आलोचना यह कहते हुए की कि वह उद्देश्यों को प्राप्त करने में असफल हो गए। उन्होंने इल्जाम लगाया कि उन्होंने एक आजाद इस्लामी स्टेट के विचार को त्याग दिया। उन्होंने कटाक्ष किया कि अगर लीग कैबिनेट मिशन पलान जिसमें मुसलमानों की एक अलग राज्य की मांग को ठुकरा दिया गया है तो उन्होंने (मिस्टर जिनाह ने) एक आजाद इस्लामिक राज्य के बारे में इतना वावैला क्यों मचाया।

अतः मिस्टर जिनाह कैबिनेट से बात चीत द्वारा हल निकलने से बिल्कुल खुश नहीं थे। जवाहर लाल का बयान उनके लिए एक धमाका था। उन्होंने फौरन एक बयान जारी किया कि कांग्रेस के सदर के इस एलान के बाद पूरे हालत पर फिर से विचार करने की जरूरत है। उन्होंने फौरन मुस्लिम लीग की मीटिंग बुलवाई और इस प्रकार का बयान जारी किया। मुस्लिम लीग कौंसिल ने कैबिनेट मिशन पलान दिल्ली में इसलिए मंजूर किया था कि यह यकीन दिलाया गया था कि कांग्रेस ने भी इस स्कीम को मंजूर कर लिया है कि कैबिनेट मिशन पलान हिन्दुस्तान के भविष्य के संविधान की बुनियाद होगा अब कांग्रेस के सदर ने एलान किया है कि कांग्रेस इस स्कीम को अपनी अकसरियत द्वारा संविधान सभा में बदल सकती है। इसका यह अर्थ है कि अल्प संख्यक बहुसंख्या के रहमोकरम पर होंगे। जवाहर लाल के एलान का मतलब है कि कांग्रेस कैबिनेट मिशन पलान के अस्वीकार कर चुकी है। इसलिए वाइसराय को मुस्लिम लीग को सरकार बनाने के लिए बुलाना चाहिए।

२७ जुलाई को मुस्लिम लीग कौंसिल में जिनाह ने अपने प्रारम्भिक भाषण में अपनी पुरानी मांग पर वापस जाते हुए एलान किया कि मुस्लिम लीग के लिए केवल पाकिस्तान की मांग का एक मात्र रास्ता बचा है। तीन दिनों की बहस के बाद मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन प्लान को नामंजूर कर दिया। मैं इस नई परिस्थिति से बहुत चिंतित हुआ मेरा विचार था कि कांग्रेस कमेटी की तुरन्त मीटिंग बुलाई जाय।

जवाहर लाल पहले इससे सहमत नहीं थे मगर मेरे जोर देने पर तैयार हो गए। ८ अगस्त को कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक हुई और उसके पूरे हालात का जाएजा (समीक्षा) लिया और एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें यकीन दिलाया गया था कि कांग्रेस ने कैबिनेट मिशन पलान को पूरी तरह मंजूर किया है। और इसमें दर्शाई हुई स्कीम के अनुसार ही संविधान बनाया जाएगा।

हम लोगों को आशा थी कि कांग्रेस की इस मंजूरी के बाद हालात काबू में आ जाएंगे और अगर मुस्लिम लीग हमारे पारित प्रस्ताव को मान लेती तो वह बिना किसी प्रतिष्ठा (वकार) की हानि के अपनी पुरानी पोजीशन पर लौट सकती थी। लेकिन मिस्टर जिनाह ने इस पोजीशन को स्वीकार नहीं किया। और आगे के घटनाक्रम ने ऐसी दिशा इख्तियार की कि देश का बटवारा हो गया।

यदि जवाहर लाल ने यह भूल न की होती तो आज भारत का इतिहास कुछ और ही होता।

रहमतों वाले नबी तुम पर सलाम

अबू मर्ग़ूब

ऐ नबीये पाक तुम पर हो सलाम
ऐ रसूले पाक तुम पर हो सलाम
फ़ज़्ले रब से तुम हो नबियों के इमाम
मेरे रब की रहमतें तुम पर मुदाम
ऐ हबीबे किब्रिया तुम पर सलाम
ऐ इमामे अंबिया तुम पर सलम
ऐ हबीबे खल्क व खालिक अस्सलाम
ऐ हकीमे रूहे हाज़िक़ अस्सलाम
सब के मुश्फ़िक़ रब के आशिक़ अस्सलाम
तुम तो हो महबूबे राज़िक अस्सलाम
ऐ हबीबे किब्रिया तुम पर सलाम
रहमतें हो रब की तुम पर और सलाम
बन गये सिद्दीक़ जिनके यारे ग़ार
मिल गया फ़ारूक़ को जिन से क़रार
और उसमान व अली जिन पर निसार
दिल से आशिक़ जिन के हैं ये चारों यार
हां उसी महबूब रब पर हो सलाम
रहमतें रब की रहें उन पर मुदाम
मक्के से बैतुल मुक़द्दस का सफ़र
फिर वहां से अर्शे अअ़ज़म तक सफ़र
रब से मिल के लेके तुहफ़ा आ गये
वक़्त इसमें बस लगाया रात भर
साहिबे मिअ़राज तुम पर हो सलाम
मेरे रब की रहमतें तुम पर मुदाम
इक इशारे पर हुआ शक़्क़ुल क़मर
उस्तुने हन्नाना रोया शोर कर
थोड़ा सा खाना था बस जाबिर के घर
सैकड़ों ने खाया जिसको पेट भर
बरकतों वाले नबी तुम पर सलाम
रहमतों वाले नबी तुम पर सलाम

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : आलिम लोग क्यों बयान करते हैं कि जहेज़ लेना देना नाजाइज़ है जब कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी बेटी फ़ातिमा (रजि०) को जहेज़ दिया था।

उत्तर : हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार बेटियां थीं। हज़रत ज़ैनब, हज़रत रूक़य्या, हज़रत उम्मे कुल्सूम और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुन्न। हज़रत ज़ैनब का निकाह हज़रत अबुलआस (रज़ि०) से हुआ था। किसी रिवायत में किसी जहेज़ का ज़िक्र नहीं, बस यह मिलता है कि उनकी मुहतरम वालिदा हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने यमनी अक़ीक़ का अपना हार अपनी बेटी ज़ैनब को अता फ़रमाया था। हज़रत रूक़य्या और हज़रत उम्मे कुल्सूम दोनों पहले अबूलहब के बेटों को मन्सूब हुईं फिर रूख़सती से पहले इस्लाम दुशमनी से अबुलहब ने अपने बेटों से तलाक़ दिलवा दी थी और यह बहुत अच्छा हुआ था। फिर यह दोनों बेटियां हज़रत उसमान (रज़ि०) को मन्सूब हुईं, पहले रूक़य्या फिर उनके इन्तिक़ाल पर उम्मे कुल्सूम इसी बिना पर हज़रत उस्मान (रज़ि०) ज़ुन्नूरैन (दो नूर वाले) कहलाए। इन दोनों बेटियों को कुछ भी जहेज़ दिये जाने का कोई ज़िक्र नहीं मिलता। हज़रत फ़ातिमा सब से छोटी बेटी थीं और बड़ी लाडली थीं, इन का निकाह हज़रत अली (रज़ि०) से हुआ। हज़रत अली (रज़ि०) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सगे चचा अबू तालिब के बेटे थे। अबू तालिब अगर्चि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत चाहते थे मगर वह ईमान न ला सके। हज़रत अली (रज़ि०) का बचपन ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में गुज़रा और यहीं जवान हुए। शादी के बाद अलग हुजरा तजवीज़ हुआ, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा का बयान है कि बतहा से नर्म मिट्टी मंगवा कर मैंने उसे कमरे में डाल कर फ़र्श तैयार किया। उस हुजरे में हज़रत अली व फ़ातिमा के लिए ज़िन्दगी की ज़रूरत का सामान न था ऐसी सूरते हाल में अल्लाह के रसूल ने अपनी बेटी को यह सामान अता फ़रमाया। (१) एक बिस्तर (२) एक तख़्त या पलंग (३) एक चमड़े का तकिया (४) दो घड़े पानी के लिए (५) एक मश्कीज़ा (६) एक चक्की (७) एक प्याला (८) दो चादरें (९) दो बाज़ूबन्द चान्दी के (१०) एक जा नमाज़।

अब जहेज़ लेने देने वाले सोचें क्या यही जहेज़ समाज में चल रहा है जिस की उलमा मुख़ालिफ़त करते हैं ? क्या जहेज़ लेने वाले उसी तरह के कमरे में दुल्हन की रूख़्सती कराते हैं जैसे हुजरे में हज़रत अली के लिए हज़रत आइशा ने मिट्टी बिछाई थी? जो लोग इस जहेज़ से अपने जहेज़ की सनद पकड़ते हैं क्यों नहीं साबित करते कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दूसरी तीन बेटियों को भी जहेज़ दिया था? क्यों नहीं साबित करते कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने हज़रत आइशा की रूख़्सती पर और हज़रत उमर (रज़ि०) हज़रत हफ़्सा की रूख़्सती पर जहेज़ दिया था?

बड़े अफ़्सोस की बात है आज जहेज़ व तिलक की लानत से बच्चियों की शादियों के लाले पड़े हैं। जहेज़ के लालची नई दुल्हनों को आग में जला रहे हैं। फिर भी रियाकार दौलतमन्द अपनी रियाकारी, फ़ुज़ूल ख़र्ची और समाज के नासूर पर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के लिए ज़रूरी और मअमूली सामान की सनद लाते हैं। उलमा हज़रात सहीह कहते हैं और लोगों को इन उलमा को भरपूर सहयोग देकर समाज से जहेज़ की लअनत दूर करना चाहिए। कोई शख़्स अगर अपनी बेटी किसी शरीफ़ ग़रीब लड़के से शादी करता है और उसकी ज़रूरत का सामान महय्या करता है चाहे यह जहेज़ कहलाए इसको कोई आलिम नहीं रोकता। जहेज़ वह रोका जा रहा है जो रूख़्सती के वक़्त बेज़रूरत और बेशुमार सामान ढेर लगा देते हैं। जहेज़ वह रोका जा रहा है जिस का लड़के वाले की जानिब से मुतालब किया जा रहा है। जहेज़ की रस्म से आज ग़रीब की लड़की के पैग़ाम नहीं आ रहे हैं लिहाज़ा जहेज़ की रस्म ख़त्म करने की कोशिश बड़े सवाब का काम है।

प्रश्न : ऐसा लगता है कि ५० वर्ष पहले के मुक़ाबले में आज कल ज़िना (व्यभिचार) व ज़िना बिल्जब्र (बलातकार) के वाक़िआत बहुत बढ़ गये हैं, इस का क्या सबब (कारण) है और इस की रोक थाम किस तरह की

जा सकती है?

उत्तर : हां आज कल ज़िना की इतनी ख़बरें आ रही हैं और ज़िना की तरफ़ बुलाने वाले इतने मज़ाहिर (सूचक) नज़र आ रहे हैं कि जी चाहता है कि गोशा नशीनी (एकान्त) इख़्तियार की जाए लेकिन यह सोचकर कि यह तो मसाइल से फ़रार होगा, समस्याओं से भागना होगा जो ठीक नहीं जहां तक ज़िना आम होने के अस्बाब का तअल्लुक़ है तो सब से अहम और सबसे पहला सबब दिलों से ख़ुदा का ख़ौफ़ निकल जाना है और दूसरा अहम सबब जवान औरतों का मर्दों से बे तकल्लुफ़ मिलना और उन के साथ तन्हाई होना है। फिरआग पर तेल छिड़कने का काम सनीमा, टीवी और ड्रामे हैं। कौन स्वस्थ जवान मर्द होगा जो किसी ना महरम जवान लड़की को देखे और उससे संभोग की इच्छा उसके मन में न पैदा हो अब अगर ऐसे साधन पैदा हो गये कि संभोग में कोई रूकावट नहीं है। तो यह काम हो ही जाएगा। अब तो समाज में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो ख़ुदा (ईश्वर) को मानते ही नहीं हैं नास्तिक हैं और समाज में वह भी, सज्जन पुरूष समझे जाते हैं। ऐसे लोगों के निकट पाप उसी व्यभिचार (ज़िना) में है जिसमें दोनों राज़ी न हों। धर्म वाले ख़ुदा का यक़ीन भी दिलाते हैं और ख़ौफ़ भी परन्तु दुन्या के सब से बड़े धर्म के अनुयायी इतने आगे जा चुके हैं कि कितनी बहनें अपने सगे भाईयों को संभोग के नियम सिखाती हैं। आज दुन्या के संयमी लोग पश्चिमी संस्कृति (तहज़ीब) से पनाह मांगते हैं। मैं नहीं समझता कि ईसाई धर्म में व्यभिचार (ज़िना) की आज्ञा होगी लेकिन ईसा (अ०) के अपनी उम्मत की और से कफ़्फ़ारे से बड़े जरी हो गये हैं, फिर जब उन को चर्चों से मुआफ़ी की सनद भी मिल जाती है तो वह इस नक़्द लज़्ज़त को क्यों छोड़ेंगे। अपने हिन्दू भाईयों में जहां तक मैं समझता हूं आर्य समाजियों को छोड़ कर पौराणिक कहानियों ने आम हिन्दुओं में इस बुराई को बहुत हल्का कर दिया है। इस लिए कि पुराणों में बड़े बड़े देवताओं को इस लत में लत पत दिखाया गया है। एक इस्लाम ही धर्म ऐसा है जिसमें ज़िना के निकट जाने से भी रोका गया है। (वला तक़रबुज़्ज़िना) क़ुर्आन में आया है फिर ज़िना के साधनों पर रोक लगाई गई परदे का आदेश दिया परदे में रह कर भी बजने वाले ज़ेवरात पहनने से रोका गया ताकि ज़ेवरात की खनक सुनकर किसी जवान का ध्यान ज़ेवर वाली की ओर न जाए, नारी को सुगन्ध लगाकर निकलने से भी रोका गया है ताकि किसी जवान का ध्यान सुगन्ध लगाने वाली की ओर न जाए। याद रहे मस्त म्यूज़िक और सुगन्द दोनों काम शक्ति को उभारते हैं लेकिन हमारा समाज म्यूज़िक, गाना, नाच को आर्ट बता कर उसको उच्च स्थान दे रहा है, ऐसे में व्यभिचार और बलातकार कैसे रूक सकते हैं। समाज के इस वातावरण को बदलने में अगर कोई धर्म शुद्ध रोल अदा कर सकता है तो वह केवल इस्लाम है, जिसमें ख़ुदा के ख़ौफ के साथ पर्दा है और संभोग पर उभारने वाले सारे ही साधन वर्जित हैं।

प्रश्न : ईद या बकरईद का चान्द अगर आम तौरसे न दिखे जबकि मतलअ़ साफ़ हो फिर दो आदमी दीनदार गवाही दें कि हम ने चान्द देखा है तो उनकी गवाही पर ईद या बकरईद कर लेना चाहिए या नहीं?

उत्तर : अगर मतलअ़ अर्थात आकाश में सूर्यास्त स्थान के आस पास की जगह पर बादल हो तो स्पष्ट है कि चान्द छुपा रहेगा और आम तौर से न दिखेगा, लेकिन बादल खिसकता रहता है। कभी बादल खिसकते ही किसी को चान्द नज़र आ जाता है ऐसी सूरत में अगर दो दीनदार मुसलमान गवाही देते हैं कि हम ने चान्द देखा है तो उनकी गवाही मान ली जाएगी और ईद या बकरईद दोनों उस चान्द के मुताबिक़ की जाएगी। कभी ऐसा भी होता है कि मुल्क के दूसरे शहर में मतलअ़ साफ होता है और चान्द साफ नजर आ जाता है और कभी वहां भी बादल होता है मगर दो दीनदार मुसलमानों को चान्द नज़र आ जाता है जिसकी तस्दीक़ (प्रमाणिकरण) वहां के इल्म वाले दीनदार लोग करके अपनी बस्ती में एअ़लान कर देते हैं फिर यह ख़बर मुअ़तबर जरीअ़े से अपने मुल्क के अन्दर जहां जहां पहुंचे वहां वहां चान्द के मुताबिक़ ईद बकरईद कर लेना चाहिए। रही बात मुअ़तबर जरीअ़े कि तो जिस जरीअ़े पर किसी बस्ती के दीनदार लोग एअ़तबार कर लें बस वह काफ़ी है चाहे रेडियो हो चाहे पहचानी आवाज़ का फून हो अल्बत्ता टेली ग्राम नाक़ाबिले एअ़तिबार है। तहरीर हो तो दस्ती लाई गई हो। वाज़िह रहे कि यह बात चान्द की गवाही की नही गवाही की खबर की है। गवाही तो उसी वक़्त मुअ़तबर है जब दो आदमी अलग अलग या एक साथ सामने आकर गवाही दें।

यह बात भी वाज़िह रहे कि मुल्क अगर बहुत लम्बा चौड़ा है तो ज़ियादा दूरी की खबर न ली जाए जैसे केराला हमारे यहां से बहुत दूर है वहां की ख़बर लखनऊ वाले न लें यह मेरी राय इस लिए हुई कि पश्चिम के दूर देशों अ़रब आदि में चान्द हमेशा एक दिन पहले दिखता है कभी हमारे यहां २८ होती है और वहां २९ और चान्द दिख जाता है इसलिए मैं ने केराला की बात की फिर भी अगर उलमा हज़रात केराला की ख़बर मान लेते हैं तो मैं उनके साथ हूं।

रहम दिली (दयालुता)

मु० अशरफ कुरैशी

रहमत और रहम दिली एक बहादुर और शरीफ इन्सान की वह विशेषता है जो उसे प्रदान की गई है, यह विशेषता क्रूरता के विपरीत है, अल्लाह तआला रहम करने वालों में सबसे जियादा रहम करने वाला है। फिर उसने नबीयों और पैगम्बरों को सरापा रहमत बनाकर भेजा, जबकि हजरत नबी आखिरूज़्ज़मा स०अ० को "रहमतुल लिल आ़लिमीन" के खिताब से निवाजा गया। काज़ी अयाज़ (र०अ०) ने लिखा है कि अल्लाह करीम ने अपने अच्छे अच्छे नामों में से दो नाम रऊफ (करूणामय) और रहीम (दयावान) हुजूर नबी पाक अलेहिस्सलाम को अता फरमाए, आप (स०अ०) पूरी दुनिया के लिए रहमत बनकर तशरीफ़ लाए, आप मोमिनीन के लिए रहमत हैं कि आप के जरिये हिदायत पाई, मुनाफिकीन के लिये रहमत कि कत्ल से महफूज़ हो गए, और कुफ्फार के लिए रहमत कि अजाब उनसे पीछे हो गया। (अश–शिफा)

नबियों के बाद अल्लाह तआला ने इस सिफ़त के लिए मुनतखब फरमाया सय्यदना अबू बक्र रज़ि० को, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "मेरी उम्मत के लिए उम्मत में से अबू बक्र सबसे जियादह रहमदिल हैं, अल्लाह उनसे राजी हो।

मैंने अकसर देखा है कि बुजुर्ग लोग खाना खाते वक्त एक आध लुकमे के टुकड़े करके चिड़यों को डाल देते हैं।

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु ने हुजूर करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद नकल फरमाया है ।

"तुम ज़मीन वालों पर रहम किया करो, वह ज़ात जो आसमानों पर है तुम पर रहम करेगी।"

एक बार आप (स०अ०) अपने घर के किसी बच्चे का बोसा (चुंबन) ले रहे थे, एक दीहाती कहने लगा, आप बच्चों को प्यार करते हैं, मेरे दस बच्चे हैं,मैंने कभी एक का भी बोसा (चुंबन) नहीं लिया, आप (स०अ०) ने नाराजगी के साथ फरमाया : अगर अल्लाह ने किसी के दिल में रहमत नहीं रखी तो मैं क्या करूं।

इमाम इब्राहीम बिन मुहम्मद बैहक़ी ने एक खूबसूरत किताब लिखी है (अल महासिन वल मसावी) जिसमें एक हबशी की रहम दिली का वाकिआ़ (घटना) इस तरह है :

अनुवाद : अब्दुल्लाह बिन मुअम्मर एक हबशी के पास से गुजरे जो खजूरें खा रहा था, एक कुत्ता भी उसके सामने बैठा था, यह हबशी जब एक लुकमा खुद उठाता तो दूसरा कुत्ते को खिला देता, आपने उससे पूछा कि क्या यह कुत्ता तुम्हारा है? हबशी ने जवाब दिया, नहीं तो फिर तुम उसे इस तरह क्यों खिलाते हो, उसने जवाब दिया, इसलिए कि मुझे हया (लज्जा) अल्लाह तआला से आती है कि दो आंखों वाला (जानदार) मुझे देख रहा हो और मैं उसे खिलाए बगैर अपना पेट भर लूं। अब्दुल्लाह बिन मुअम्मर ने पूछा तुम आजाद हो या गुलाम? हबशी ने जवाब दिया कि मैं बनी "ग़ाजिरा कबीले का गुलाम हूं। अब्दुल्लाह बिन मुअम्मर वहीं से सीधे उसके मालिकों के पास पहुंचे और पूछा कि इस हबशी का मालिक कौन है उनमें से एक ने कहा मैं इसका मालिक हूं तो उन्होंने कहा कि उसे मेरे हाथ बेच दो, मालिक ने कहा आपका हो गया, फ़रमाया खुदा की कसम ऐसे कैसे बिला कीमत नहीं, या तो इसकी कीमत लो या उसके बदले में एक गुलाम ले लो, चुनांचि आपने उसे खरीद कर अल्लाह की राह में आजाद कर दिया। ऐसे ही एक विचित्र वाकिआ और है :

कुर्द एक कबीले का नाम है उसमें एक शख्स मशहूर डाकू था वह अपना किस्सा बयान करता है कि मैं अपने साथियों के साथ डाका डालने के लिए जा रहा था, रास्ते में हम एक जगह बैठे थे, वहां हमने देखा कि खजूर के तीन पेड़ हैं दो पर फल आ रहे है और एक चिड़या बार–बार आती है और फलदार पेड़ों पर से ताज़ा खजूर अपनी चोंच में लेकर उसे सूखे पेड़ पर जाती है। हमें यह देख कर तअज्जुब हुआ, मैंने दस बार इस चिड़िया को लेजाते देखा तो मुझे खयाल हुआ कि इस पर चढ़ कर देखूं कि यह चिड़िया इस खजूर को क्या करती है, मैंने इस पेड़ की चोटी पर जाकर देखा कि वहां एक अन्धा सांप मुंह खोले पड़ा है और यह चिड़िया ताजा खजूर उसके मुंह में

डाल देती है, मुझे यह देखकर इस कदर इबरत (शिक्षा) हुई कि मैं रोने लगा। मैंने कहा मेरे मौला। यह सांप जिस के मारने का हुक्म तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया, तूने इस अन्धे सांप को रोजी (जीविका) पहुचाने के लिए चिड़िया को मुकर्रर कर दिया और मैं तेरी तौहीद का इकरार करने वाला, तूने मुझे लोगों के लूटने पर लगा दिया? इस कहने पर मेरे दिल में यह बात डाली गई कि तेरे लिये तौबा का दरवाजा खुला हुआ है, मैंने उसी वक्त अपनी तलवार तोड़ डाली, जो लोगों को लूटने के कमा देती थी, मैं अपने सर पर खाक डालता हुआ चिल्लाने लगा माफ कीजिए, माफ कीजिए,मुझे गैब से आवाज आई कि हमने माफ कर दिया, माफ कर दिया अपने साथियों के पास आया, कहने लगे तुझे क्या हो गया मैंने कहा, मैं मजबूर था, अब मैंने सुलह (सन्धि) कर ली, यह कहकर मैंने सारा किस्सा उनको सुनाया वह कहने लगे हम भी सुलह करते हैं, यह कहकर सबने अपनी तलवारें तोड़दीं, और सब लूट का माल छोड़ कर हम एहराम बांधकर मक्का के इरादे से चल दिये।

एक औरत के सम्बन्ध में अखबार में खबर छपी कि उसका शौहर उसे छोड़कर चला गया, यह अकेली औरत अपने बच्चों की परवरिश नहीं कर सकती, उसने अखबार में इश्तिहार (विज्ञापन) दिया कि वह अपनी एक आंख बेचना चाहिती है ताकि उसकी क़ीमत से बच्चे की किफालत (पालन पोषण) कर सके, इस खबर ने मुझे अधमरा कर दिया, मैं सोचता हूं कि जिस मां ने अपनी आंख बेचने का फैसला किया है, उसके सामने न जाने उसकी बच्ची दूध और सूखी रोटी के लिए कितनी तड़पी होगी, ऐसे कई एक सीन हमने टीवी पर देखे और अखबार में पढ़े होंगे, मगर अफसोस कि अब कोई उमर फारूक आजम (रज़ि०) आलमे इस्लाम में नहीं, जिन्हें अन्देशा था कि अगर दरयाए फरात के कनारे एक कुत्ता प्यासा मर गया तो शायद कियामत के रोज अल्लाह तआला की बारगाह में उसके बारे में जवाब देना पड़ जाए, हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे हालात को कियामत की अलामात (लक्षण) में शुमार फरमाया "हजरत अबू हुरैरा रजिअल्लाहु अन्हु से रवायत है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम ने इरशाद फरमाया : "जब तुम्हारे हाकिम नेक और अच्छे हो, तुम्हारे मालदार खुले दिल और खुले हाथ हों, और तुम्हारे आपसी मआमलात आपसी मशवरों से तै पाएं तो तुम्हारे लिये जमीन की पीठ उसके पेट से बेहतर है। यानी मौत से जिन्दगी बेहतर है मगर जब तुम्हारे हाकिम बहुत बुरे किस्म के हों, तुम्हारे मालदार पेट पालने वाले और कनजूस हों और तुम्हारे आपसी मआमलात तुम्हारी औरतों के हाथ में आ जाएं तो तुम्हारे लिये जमीन का पेट (कब्र) उसकी पीठ से जियादा बेहतर है (यानी ऐसी जिन्दगी से मर जाना भला)

नट और बैलेंस

वह हम जैसा दिखता है
पर
हम जैसा है नहीं
हम चलते हैं ज़मीन पर
और
बात करते हैं आसमानों की
वह चलता है रस्सी पर
और बात करता है
सिर्फ़ पेट की
दिखाता है करतब
अ़जब
अनोखे
अनूठे
और
अपने आस–पास जुट आई भीड़ से
पूछता है
एक ही सुवाल
मुक़ाबला करोगे
मेरे बैलेंस का
अपने बैंक बैलेंस से
मेरा बैलेंस
मेरी रोज़ी–रोटी है
और तुम्हारा बैलेंस
तुम्हारा स्टेटस सिंबल
एक मानव था खड़ा उस भीड़ में
बोला मेरी बात सुन लो कान धर
कर्म ऐसा तुम करो संसार में
जिस से मानव जात का कल्याण हो
रोटी मालिक से मिलेगी जान लो
बैंक बैलेन्स का तुम्हें क्यों ध्यान हो
बस ख़ुशी मालिक की चाहो तुम सदैव
है मेरा सन्देश मानव जात को

नमिता राकेश (हरियाणा)

आर्यों का सांस्कृतिक जीवन

इतिहास के पन्नों से

इदारा

वैदिक ग्रंथ – वैदिक ग्रंथ उन ग्रंथों को कहते हैं जिनकी रचना भारतीय आर्यों ने भारतवर्ष में ईसा से २,५०० वर्ष से ५० वर्ष तक में की थी। इन ग्रन्थों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है अर्थात (१) संहिता अथवा वेद, (२) ब्राह्मण तथा (३) सूत्र। प्रथम दो अर्थात संहिता तथा ब्राह्मण–ग्रंथों को श्रुति भी कहा गया और ब्राह्मण–ग्रंथ किसी मनुष्य की कृति न थे, परन्तु उनमें दिये गये उपदेशों को ऋषियों तथा मुनियों ने ब्रह्मा के मुख से सुना था। इसी से इन ग्रन्थों को श्रुति के नाम से पुकारा गया है। चूंकि इन ग्रन्थों में दिये गये उपदेश ब्रह्मा–वाक्य हैं अतएव ग्रंथ प्रामाणिक समझे जाते थे और इनका विरोध करने का दुस्साहस किसी को नहीं होता था। संहिता तथा ब्रह्मण–ग्रंथों में जो उपदेश दिये गये हैं वे बड़े लम्बे हैं अतएव जन–साधारण के लिए उनको याद रखना अत्यन्त कठिन काम था। इस कार्य को सरल बनाने के लिए आर्य–विद्वानों ने उपदेशों को संक्षेप में छोटे–छोटे वाक्यों में लिख दिया। इन्हीं रचनाओं को सूत्र कहते हैं। सूत्र का अर्थ होता है संक्षेप में कहना। चूंकि इन ग्रन्थों में बड़ी–बड़ी बातें संक्षेप में लिखी गई हैं। अतएव इन्हें सूत्र कहा गया है। अब इन तीनों प्रकार के ग्रन्थों का अलग–अलग परिचय दे देना आवश्यक है।

१. संहिता अथवा वेद – संहिता का अर्थ होता है कि संग्रह। चूंकि इन ग्रन्थों में मंत्रों का संग्रह है, अतएव इन्हें संहिता के नाम से पुकारा गया है। संहिता को वेद भी कहते हैं। वेद संस्कृत के विद् शब्द से निकला है जिसका अर्थ होता है जानना अथवा ज्ञान करना, वेद उन ग्रंथों को कहते हैं जो ज्ञान की प्राप्ति के एक मात्र साधन समझे जाते थे। वेद–वाक्य ब्रह्मा–वाक्य होने के कारण चिरन्तर सत्य थे और उनके अनुसार जीवन–व्यतीत करने से इहलोक तथा परलोक दोनों ही बनता था अर्थात इस संसार में सुख की प्राप्ति होती थी और मृत्यु हो जाने पर मोक्ष मिलता था। संहिता अर्थात वेदों का भारतीयों के जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। वेदों को संस्कृत–साहित्य की जननी कहा जा सकता है। यद्यपि सिन्धु घाटी की सभ्यता भारत की प्राचीनतम सभ्यता थी परन्तु उस सभ्यता के वसुन्धरा में अन्तर्भूत हो जाने के उपरान्त भारतीय सभ्यता का पुनः शिलान्यास संहिता द्वारा ही किया गया था। संहिता को हम भारतीय सभ्यता का प्राण कह सकते हैं जिसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता था। वेदों के उपरान्त जितने साहित्य लिखे गये उन सब का आधार संहिता ही है। वेदों की संख्या चार है, अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्व वेद। पहले इनमें से केवल प्रथम तीन वेदों की रचना की गयी। अतएव इन्हें त्रयी भी कहा गया है जिसका अर्थ होता है तीन। सबसे अन्त में अथर्ववेद का निर्माण हुआ। अब चारों वेदों का अलग–अलग परिचयदेना आवश्यक है।

ऋग्वेद– यह दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् ऋक् तथा वेद। ऋक् का अर्थ होता है स्तुति–मंत्र। स्तुति–मंत्र को ऋचा भी कहते हैं। जिस वेद में स्तुतिमंत्रों अर्थात ऋचाओं का संग्रह किया गया है उसे ऋग्वेद कहते हैं। सूर्य, वायु अग्नि, अर्थात ऋग्वेद के प्रधान देवता हैं, अतएव वह ऋचाएं इन्हीं देवताओं की स्तुति लिखी गयी हैं। इन ऋचाओं का संग्रह किसी एक ऋषि ने नहीं किया है वरन् वे भिन्न ऋषियों द्वारा विभिन्न समय में संकलित की गयी है। ऋग्वेद दस मण्डलों अथवा भागों में विभक्त है। प्रत्येक मण्डल कई अनुवाकों में विभक्त है। अनुवाक का अर्थ होता है जो बाद में कहा गया है। चूंकि इनका स्थान मण्डल के बाद है, अतएव इन्हें अनुवाक कहा गया है। प्रत्येक अनुवाद कई सूक्तों में विभक्त है। सूक्त का अर्थ होता है अच्छी उक्ति अर्थात् जो अच्छी प्रकार कहा गया हो। ऋग्वेद में कुल १००८ सूक्ति है प्रत्येक सूक्त कई ऋचाओं अर्थात स्तुति–मंत्रों में विभक्त है, ऋचाओं की कुल संख्या १०,५८० है। ऋग्वेद आर्यों का प्राचीनतम ग्रंथ है। इसकी रचना सम्भवतः २५०० ई०पूर्व से १,५०० ई०पूर्व तक में हुई थी। यद्यपि ऋग्वेद स्तुति–मन्त्रों का संग्रह है। जिनका प्रधानतः धार्मिक तथा अध्यात्मिक महत्व है परन्तु ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी इसका बहुत बड़ा महत्व है क्योंकि इस काल का इतिहास जानने के लिए यही ग्रंथ एकमात्र साधन है। कुछ मंत्रों से आर्यों के

पारस्परिक तथा अनार्यों के साथ किये गये युद्धों का पता लग जाता है। यह भारत ही नहीं वरन् विश्व का सबसे अधिक प्राचीन ग्रंथ है। इसकी प्राचीनता के कारण ही भारत का मस्तक ऊंचा है, इसकी रचना सप्तसिन्धु में हुई थी। ऋग्वेद के महत्व को बतलाते हुए मैक्समुलर महोदय ने लिखा है, "विश्व के इतिहास में वेद उस रिक्त स्थान की पूर्ति करता है जिसको किसी भी भाषा का कोई भी साहित्यिक ग्रंथ नहीं भर सकता। यह हमें अतीत उस काल में पहुंचा देता है जिसका कहीं अन्यत्र उल्लेख नही मिलता और उस पीढ़ी के लोगों के वास्तविक शब्दों से परिचय करा देता है जिसका हम इसके अभाव में केवल धुंधला ही मूल्यांकन कर सकते हैं।

यजुर्वेद : यह दो शब्दों से मिल कर बना है अर्थात यजुः तथा वेद। यज् शब्द का अर्थ होता है यजन करना और यजुः उन मंत्रों को कहते थे जिनके द्वारा यजन अथवा पूजन किया जाता था अर्थात् यज्ञ किये जाते थे। अतएव यजुर्वेद उस वेद को कहते हें जिसमें यज्ञों का विधान है। मूलतः यह कर्म–काण्ड–प्रधान ग्रंथ है। इस ग्रंथ में बलि की प्रथा, उसकी महत्ता तथा विधियों का वर्णन है। यह ग्रंथ दो भागों में विभक्त है पहला भाग शुक्ल यजुर्वेद कहलाता है जो स्वतंत्र रूप से लिखा गया और दूसरा भाग कृष्ण यजुर्वेद कहलाता है जिसमें पूर्व साहित्य का संकलन है। यजुर्वेद की रचना कुरूक्षेत्र में हुई थी इस वेद की ऐतिहासिक उपयोगिता भी है। इसमें आर्यों के सामाजिक तथा धार्मिक जीवन की झांकी मिल जाती हैं। इस वेद से यह पता चल जाता है कि अब आर्य लोग सप्त सिन्धु से कुरूक्षेत्र में चले आए थे। इस ग्रंथ से यह भी पता चलता है कि अब प्रकृति की उपेक्षा होने लगी थी और जाति–प्रथा प्रादुर्भाव हो गया था।

सामवेद : साम का अर्थ होता है शांति। परन्तु यहां पर साम का अर्थ गीत। अतएव सामवेद का अर्थ हुआ वह वेद जिसके पद गेय हैं और जो संगीतमय हैं । सामवेद में केवल ६६ मंत्रगेय हैं शेष ऋग्वेद से लिये गये हैं। सामवेद के मंत्र होने के कारण मन को बड़ी शांति देते हैं। यज्ञादि के अवसरों पर इनके मंत्रों का पाठ किया जाता है।

अथर्ववेद – अथ का अर्थ होता है मंगल अथवा कल्याण, अथर्व का अर्थ होता है अग्नि और अथर्वन् का अर्थ होता है पुजारी। अतएव अथर्ववेद उस वेद को कहते हैं जिसमें पुजारी मंत्रों तथा अग्नि की सहायता से भूत–पिशाचों से रक्षा कर मनुष्य का मंगल अथवा कल्याण करते हैं। इस ग्रंथ में बहुत से प्रेतों तथा पिशाचों का उल्लेख है। जिनमें बचने के लिए मंत्र दिये गये हैं। यह मंत्र जादू–टोना से मनुष्य की रक्षा करते हैं। इस ग्रंथ में कुछ मंत्र ऋग्वेद के हैं और कुछ सामवेद के। यह ग्रंथ आर्यों के पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन पर भी प्रकाश डालता है। इसकी रचना अन्त में हुई थी और प्रथम तीन वेदों की रचना के बहुत दिनों बाद।

२. ब्राह्मण – ब्राह्मण शब्द ब्रह्म शब्द से निकला है, जिसका अर्थ होता है वेद। अतएव ब्राह्मण उन ग्रंथों को कहते हैं जिनमें वैदिक मंत्रों की व्याख्या की गयी है। इनमें यज्ञों के स्वरूप तथा उनकी विधियों का वर्णन किया गया है चूंकि यज्ञ करने तथा कराने का कार्य पुरोहित लोग करते थे जो ब्राह्मण होते थे, अतएव केवल ब्राह्मण जाति से सम्बन्धित होने के कारण इन ग्रंथों का नाम ब्राहमण रक्खा गया है। ब्राह्मण–ग्रंथों की रचना ब्रह्मर्षि–देश में हुई थी। यद्यपि ब्राह्मण–ग्रंथों की रचना यज्ञिको के पथ प्रदर्शन के लिए की गई थी परन्तु इन में आर्यों के सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन पर प्रभाव पड़ जाता है, ब्रह्मण ग्रन्थों की रचना प्रधानतः गद्य में की गई है परन्तु कहीं–कहीं पद्य भी विरल रूप में मिलते हैं, ऐतरेय कौषीतकी, तैत्तिरीय, शतपथ आदि मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ हैं। आरण्यक तथा उपनिषद् ब्राह्मण–ग्रंथों के अन्तर्गत आते हैं। अतएव इनका भी परिचय दे देना आवश्यक है।

आरण्यक – यह अरण्य शब्द से निकला है जिसका अर्थ होता है जंगल अतएव आरण्यक उन ग्रंथों को कहते हैं जिनकी रचना जंगलों के अत्यन्त शांतिमय वातावरण में हुई थी और जिनका अध्ययन तथा चिन्तन भी जंगलों में एकान्तवास द्वारा शान्तिमय वातावरण में किया जाना चाहिए। ये ग्रंथ वानप्रस्थिाश्रमियों के लिए होते थे। वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करने पर लोग जंगलों में चले जाते थे और वहीं पर चिन्तन तथा मनन किया करते थे। अध्यात्म–चिन्तन आरण्यक ग्रंथों की सबसे बड़ी विशेषता है। इसमें आत्म तथा ब्रह्म के सम्बन्ध में बड़े ऊंचे विस्तार मिलते हैं।

उपनिषद – वह तीन शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् उप+नि+षद्। उप का अर्थ होता है समीप, नि का

अर्थ होता है नीचे और षद् का अर्थ होता है बैठना। अतएव उपनिषद् उन ग्रंथों को कहते हैं जिनका अध्ययन गुरू के समीप नीचे बैठकर अद्धापूर्वक किया जाना चाहिए। उपनिषद् ब्राह्मण ग्रंथ के अन्तिम भाग में आते हैं। ये ज्ञान प्रधान ग्रंथ है। इनमें उच्चकोटि का दार्शनिक विवेचन मिलता है। उपनिषदों की टक्कर का संसार में कोई दूसरा दर्शन ग्रंथ नहीं है। उपनिषदों की टक्कर का संसार में कोई दूसरा ग्रन्थ नही है। उपनिषदों से हमें यह पता चलता है कि इस युग में वर्ण–व्यवस्था तथा वर्णाश्रम दृढ़ रूप से स्थापित हो गये थे और उनकी सभ्यता तथा संस्कृति में बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया था। उपनिषदों की संख्या दस है अर्थात् वृहदारण्यक, छांदोग्य, कठ आदि।

३. सूत्र : इनका शाब्दिक अर्थ होता है तागा अथवा तागे में पिरोना अतएव सूत्र उन ग्रंथों को कहते हैं जो इस प्रकार लिखे जाते थे मानो कोई चीज तागे पिरो दी गई और एक लड़ी–सी बन गई है। अब वैदिक साहित्य का रूप अत्यन्त विशाल हो गया था जिसको कंठाग्र करना अथवा याद रखना बहुत कठिन हो गया था। अतएव एक ऐसी रचना–शैली का प्रारम्भ किया गया जिसमें वाक्या तो छोटे–छोटे हों। परन्तु उनमें बड़े–बड़े भावों तथा विचारों का समावेश हो इसी रचना को सूत्र के नाम से पुकारा गया है। महर्षि पाणिनि ने सूत्रों की तीन विशेषताएं बतलायीं हैं अर्थात् वे थोड़े से अक्षरों में लिखे जाते हैं, वे असंदिग्ध होते हैं और वे सारगर्भित होते हैं। इन सूत्रों में कल्प–सूत्र सबसे अधिक महत्व का है। सूत्रों की रचना करने वालों में पाणिनि आदि हैं। इन ग्रंथों की रचना ७०० ई०पू० से २०० ई०पू० तक में हुई थी। सूत्रों में आर्यों के धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन का पर्याप्त परिचय मिल जाता है।

अन्य ग्रन्थ – आर्यों ने अन्य ग्रंथों की भी रचाना की, जिनका उनके जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। कई मुनियों ने दर्शन–शास्त्रों का निर्माण किया, जिनकी संख्या ६ है अर्थात् कपिल मुनि का सांख्य–दर्शन, पतंजलि का योग–दर्शन, कण्व का वैशेषिक दर्शन, गौतम का न्याय–दर्शन, जैमिनी का पूर्व मीमांसा तथा बादरायण का उत्तर मीमांसा दर्शन। हिन्दू धर्म के अध्यात्मवाद का भवन इन्हीं दर्शन शास्त्रों के स्तम्भों पर खड़ा है। दो महाकाव्यों अर्थात् रामायण तथा महाभारत की रचना कर हमारे महर्षियों ने हिन्दू समाज का कल्याण किया है। महाभारत की रचना व्यास ने और रामायाण की रचना वाल्मीकि ने की थी। महाभारत का एक अंश गीता कहलाता है जिसमें निष्काम कर्म करने का उपदेश दिया गया है। इस ग्रंथ का और इससे भी अधिक रामायण का हिन्दू–समाज पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। धर्मशास्त्रों तथा पुराणों का भी भारतीय समाज पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है। पुराणों की संख्या १८ है जिनमें विष्णु–पुराण, स्कन्ध–पुराण तथा भागवत अत्यधिक प्रसिद्ध है। महाकाव्यों तथा पुराणों दोनों ही में वैदिक आदर्शों का प्रतिपादन किया गया है। अन्तर केवल इतना ही है कि महाकाव्यों में इसे मनुष्य के मुख से और पुराणों में देवताओं के मुख से प्रतिपादित किया गया है। आर्यों ने और भी अनेक ग्रंथों की रचना की है परन्तु स्थानाभाव के कारण उनका वर्णन यहां पर नहीं किया जा सकता।

वैदिक साहित्य का महत्व – वैदिक साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्राप्त कर लेने के उपरान्त उनकी उपयोगिता तथा उनके महत्व पर विचार कर लेना आवश्यक है।

१. विश्व के इतिहास में सर्वोच्च स्थान– वैदिक ग्रंथों का और विशेषकर ऋग्वेद का विश्व के इतिहास में सर्वोच्च स्थान है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ है। इनकी रचना भारत की ही पवित्रभूमि में हुई थी अतएव इन ग्रंथों के कारण भारत का मस्तक ऊंचा है। ये ग्रंथ इस बात को सिद्ध कर देते है कि भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति विश्व में सबसे अधिक प्राचीन है और यही से विश्व को आलोक प्राप्त हुआ था।

२. उत्कृष्ट जाति के इतिहास की झांकी– वैदिक साहित्य में हमें आर्यों की एक उत्कृष्ट जाति की झांकी प्राप्त हो जाती है। आर्यों का विश्व की विभिन्न जातियों में बड़ा ऊंचा स्थान है। यह जाति शारीरिक बल, मानसिक प्रतिभा तथा आध्यात्मिक चिन्तन में अन्य जातियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ रही हैं अतएव जिन ग्रंथों में इन आर्यों के जीवन की झांकी मिलती है वे निश्चय ही बड़े महत्वपूर्ण है।

३. प्रारम्भिक आर्यों का इतिहास जानने का एकमात्र साधन – आर्यों के मूल–स्थान तथा उनके प्रारम्भिक जीवन का परिचय प्राप्त करने का एकमात्र साधन वैदिक ग्रंथ है। यदि यह ग्रंथ उपलब्ध न होते तो भारतीय आर्यों का तो सम्पूर्ण प्रारम्भिक इतिहास अंधकारमय होता और उनका कुछ भी

ज्ञान हमें न प्राप्त हो सकता।

४. हमारे पूर्वजों के जीवन का प्रतिबिम्ब– यदि हम वैदिक ग्रंथों को अपने पूर्वजों के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन का पूरा परिचय मिल जाता है। यदि वैदिक ग्रंथ न होते तो हम भी किसी बर्बर तथा असभ्य जाति की सन्तान कहे जा सकंते थे परन्तु इन ग्रंथों ने हमें अत्यन्त सभ्य तथा सुसंस्कृत जाति की सन्तान होने का गौरव प्रदान किया है।

५. हमारी सभ्यता का मूलाधार – वैदिक ग्रंथे ही हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के मूलाधार तथा प्रबल सतम्भ है। जिनका आदर्शों तथा सिद्धान्तों का इन ग्रंथों में निरूपण किया गया है वही भारतीयों के जीवन के पथ प्रदर्शक बन गये। इन ग्रंथें ने हमारे जीवन को ऐसे सांचे में ढाल दिया कि उसे अपना एक विशेष प्रकार का रूप प्राप्त हो गया। यद्यपि भारत पर अनेक बर्बर जातियों के आक्रमण हुए जिन्होंने इसको बदलने का प्रयत्न किया परन्तु उन्हें सफलता का ही आलिंगन करना पड़ा। अनेक शताब्दियों के बीत जाने पर भी हमारे–जीवन के आदर्श तथा सिद्धान्त वही हैं जिन्हें हमारे ऋषियों तथा मुनियों ने निर्धारित किया था।

६. हिन्दू धर्म का प्राण – यदि हम वैदिक ग्रंथों को हिन्दू धर्म का प्राण कहें तो कुछ अनुचित न होगा। हिन्दू धर्म के मूल सिद्धान्तों का दर्शन हमें वैदिक ग्रंथों में ही होता है। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य वास्तव में धर्ममय है। इसका कारण यह है कि ऋषियों ने भौतिक जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को अधिक महत्व दिया था। वे इस जगज को नाशवान तथा निस्सार समझते थे। इसी से उन्होंने जीवन के प्रत्येक अंग पर धर्म की छाप डाल दी। हमारे ऋषियों ने हमारे समाज को धर्म की एक ऐसे लकुटी पकड़ा दी जिसके सहारे यह समाज आज तक सुरक्षित चला आ रहा है।

७. आधयात्मिक विवेचन के कोष : हमारे वैदिक ग्रंथ आध्यात्मिक विवेचन के विशाल कोष हैं। विश्व की किसी भी जाति के इतिहास में इतने विस्तृत तथा गहन रूप से आध्यात्मिक विवेचन नही हुआ है जितना हमारे वैदिक ग्रंथों में हुआ है। इस विस्तृत तथा गहरे विवेचन का कारण यह था कि सबको विचार तथा विवेचन की स्वतंत्रता थी और उसके लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाई जाती थीं और उनके लिए साधन उपदेश किये जाते थे।

८. हिन्दू समाज के स्तम्भ : वैदिक ग्रंथों को हम हिन्दू समाज का स्तम्भ कह सकते हैं। हमारे ऋषियों ने हमारे समाज को सुचारू रीति से संचालित करने के लिए दो व्यवस्थाएं की थीं। इनमें से एक थी वर्ण–व्यवस्था औरदूसरी थी वर्णाश्रम धर्म। इन्हीं दोनों स्तम्भों पर भारतीय समाज को खड़ा किया गया था और इन्हीं का अनुसरण कर चूड़ान्त विकास किया जाता था।

९. भारतीय भाषाओं की जननी – वैदिक ग्रंथ संस्कृत भाषा में लिखे गये हैं। संस्कृत से ही भारत की अधिक भाषाएं निकली हैं। भारत की सभी भाषाओं पर संस्कृत का थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ा है। वास्तव में आर्य–विचार की सभी भाषाएं इसकी दुहिताएं हैं।

●●●

दहशतगर्दी

बाज़ार लगा हुआ था, बूढ़े जवान, मर्द, औरतें, बच्चे, बच्चियां, दुकानदार, ख़रीदार, भिखारी, दाता, हिन्दू सिख, ईसाई, मुसलमान, सभी तो मौजूद थे.। वहां बम विस्फोट हो गया, लाशें ढेर हो गईं, ज़ख़्मियों की चीख़ पुकार होने लगी। ऐ दहशतगर्द ! बम विस्फोटक ! धमाका करने वाले! बता इन की जान लेकर तेरा ठिकाना कहां होगा, अगर तू कोई धर्म रखता था तो क्या तेरे धर्म में इसकी गुंजाइश थी? कदापि नहीं। अगर तू ने अपनी जान गंवा दी या किसी प्रकार बचा ली तो क्या विधाता तुझ से न पूछेगा? ज़रूर पूछेगा, और तुझे दण्ड मिल कर रहेगा, ऐसा दण्ड जिसे तू सोच भी नहीं सकता।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

अधिकारों का हनन आतंकवाद का मुख्य कारण है

हैदर अली नदवी

संसार के सभी देशों की प्रमुख समस्या आतंकवाद है जो सबके लिए आज चुनौती बनी हुई है बद किस्मती से इस समस्या का स्थायी समाधान खोने के बजाए आतंकवाद को महाआतंकवाद से कुचलने की कोशिश की जा रही है। जिससे समस्या घटने के बजाए और विकराल रूप धारण करती चली जा रही है आश्चर्य की बात तो यह है कि आतंकवाद का जिम्मेदार इस्लाम और मुसलमानों को बताया जा रहा है। दुनिया भर की मीडिया ने तो तय कर रखा है कि कोई भी घटना कहीं पर भी हो बस उसका सम्बन्ध इस्लाम से जोड़ दिया जाए, इस्लाम विरोधी ताकतें इस्लाम से जलने और नफरत करने वाले बदनसीब इन्सान आखिर क्यों इस्लाम के पीछे पड़े हैं?

नूरे खुदा है कुफ्र की हरकत पे खन्दाजन

फूंकों से ये चिराग बुझाया न जाएगा

ये बात पूरे यकीन के साथ कही जा सकती है कि शान्ति का वातावरण स्थापित करने पर जितना बल इस्लाम में दिया गया है उतना किसी दूसरे धर्म में नहीं है—मानवीय मूल्यों और अधिकारों और दूसरे के सम्मान का जितना व्यापक रूप इस्लाम में है उतना कहीं नहीं है— "कुर्आन कहता है : "जिसने किसी भी इन्सान को ना हक कत्ल कर दिया तो उसने मानो पूरी मानवता की हत्या कर दी।" उसने कत्ल का रास्ता खोल कर कत्ल का बीज बो दिया इसी तरह फरमाया : जिसने किसी इन्सान को बचा लिया तो गोया उसने पूरी मानवता को बचा लिया। इसी प्रकार फरमाया कि अगर तुम पर कोई अत्याचार करे और वह तुम्हारे काबू में आ जाए तो तुम बदला ले सकते हो लेकिन अगर माफ कर दो तो ये बहुत अच्छी और बड़ेपन की बात है। इसी प्रकार इस्लाम की शिक्षा है कि ऐ लोगों तुम दूसरों के माबूदों को बुरा मत कहो वरना वह तुम्हारे सच्चे रब को बुरा कहेंगे। जंग में बच्चे बूढ़े महिलाएं सामने आ जाएं तो फौरन हाथ रोक लो। घर मैं बैठे लोगों और इबादत खानों में रहने वालों पर हाथ मत उठाना, और इस्लाम की तालीम है कि अगर तुम्हारा पड़ोसी बीमार है उसे डाक्टर के यहां जाने की जरूरत है या देखभाल की आवश्यकता है तो मुसलमानों को ये निर्देश है कि वह अब कुरआन का पाठ नहीं करेंगे वह (वजीफा) माला जपना या नफली नमाजें नहीं पढ़ेंगे बल्कि अपने पीड़ित पड़ोसी की जरूरत पूरी करेंगे। उस समय उसका कुरआन नमाज पढ़ना (पुण्य) नेकी नहीं है बल्कि पड़ोसी की मदद करना नेकी है ये तो चन्द उदाहरण हैं अगर गहराई और साफ मन से इस्लामी शिक्षाओं का अध्ययन किया जाए तो समस्त सामाजिक खूबियां मिलेंगी। फिर भी आज कुछ लोगों के गलत करतूतों का इस्लाम से जोड़ देते हैं। इस्लामी शिक्षण संस्थाओं की आंतकवाद का अड्डा बताया जाता है । मस्जिदों मदरसों को कटघरे में खड़ा किया जाता है। अमरीका जो आज आतंकवाद का नायक बना हुआ है जिसने पूरी दुन्या के अन्दर आतंकवादा फैला रखा है जिसकी नीतियों के चलते पूरे संसार में दहशत का माहौल है। आज आतंकवाद का जिम्मेदार अरमरीका और उसकी हां में हां मिलाने वाले देश हैं न कि इस्लाम। कौन नहीं जानता कि लाखों फिलिस्तीन आतंक के साये में जी रहे हैं। किसको नहीं मालूम कि पूरा इराक अमरीकी दरिंदों के आतंकवाद में जल रहा है। जहां बच्चों पर भी बम बरसाए जा रहे हैं। किसे नहीं मालूम कि अफगानिस्तान अमरीका का आतंकवाद झेल रहा है। पूरी दुन्या को अमरीका परोक्ष या अपरोक्ष रूप से धमकी दे रहा है कि अगर कोई देश हमारी नीतियों के खिलाफ होगा। हम उसे आतंकवादी देश घोषित करके उसे इराक और अफगानिस्तान बना देंगे।

हम आह करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम

वह कत्ल भी करत हैं तो चर्चा नहीं होता।

इस लिए मानव समाज और न्याय प्रिय लोगों की जिम्मेदारी है कि वह आतंकवाद की सही परिभाषा लोगों को बताए और किसी धर्म व जाति से जोड़ने से आतंकवाद की समस्या कभी भी समाप्त नहीं हो सकती।

किसी भी कारण सड़क जाम करके रोगियों को अस्पताल जाने से, बच्चों—बच्चियों को स्कूल जाने से, मज़दूरों को मज़दूरी पर जाने से रोकना बड़ा पाप है।

उरयानी व फ़ह्हाशी पर महज़ ज़ुबानी दावा व कागज़ी घोड़ा दौड़ाने से काबू नहीं पाया जा सकता

एक इत्तिला (एशियन एज. २४ सितम्बर २००५) के मुताबिक मुल्क में उरयानियत और फहहाशी का जो बाजार गर्म है अब वह कानून की गिरफत से बाहर हो जा रहा है। ऐसा नहीं है कि इसकी रोकथाम के लिए कोई कानून मौजूद नही है, कानून मौजूद होते हुए भी अव्वल तो इस कानून में कुछ ऐसी खामियां हैं कि इसके लिए गुंजाइश निकल आती है। जब से मवासलात के मैदान में इंकिलाब आया और यह शोबा भी टेक्नॉलोजी के जुमरे में शामिल हुआ है, उरयानी और फह्हाशी को जैसे पर लग गये हैं। इसने हिन्दुस्तानी समाज को बिल्कुल तब्दील करके रख दिया है। इसके जो वाकिआत सामने आ रहे हैं उससे यह अंदाजा हो रहा है कि इसका दायरा निहायत तेज रफतारी से फैलता जा रहा है।

हालांकि अभी इसने शहरी जिन्दगी को ही अपने शिकंजों में कसा है लेकिन इंटरनेट का दायरा जिस कदर तेजी से फैल रहा है उसने इस अंदेशे को मजबूत कर दिया है कि जल्द ही यह तूफान देहाती जिन्दगी को भी तहस–नहस करके रख देगा, इसलिए कि हुकूमत ने २००७ ई० तक मुल्क के हजारों गांव को मवासलात की इस जदीद टेक्नॉलोजी से मुंसलिक करने का मंसूबा बनाया है जिस पर काम चल रहा है।

रिपोर्ट यह बताती है कि मुल्क में जो साम्राज्यवादी कानून मौजूद हैं वह उरयानी और फह्हाशी के इस तूफान को रोकने में बुरी तरह नाकाम नजर आ रहे हैं जो निहायत तेजी के साथ हमला आवर हो रहा है। कहा जाता है कि २००० ई० में जो इन्फार्मेशन टेक्नॉलोजी एक्ट बनाया गया था वह नाकाफी ही नही बल्कि नाकिस भी है। मोबाइल फोन और इंटरनेट के जरिये गंदी तस्वीरों और पैगामों को जिस तरह भेजा जा रहा है, उसने यह वाजेह कर दिया है कि मौजूदा कवानीन उसकी रोकथाम में बुरी तरह नाकाम साबित हो रहे हैं। अब यह सिर्फ शौक नहीं रह गया है बल्कि अब इसने कारोबार की शक्ल अपना ली है और बहुत ही मुनाफा देने वाला कारोबार बन गया है।

इंटरनेट के जरिअ़े बड़ी तेजी से यह समाजी बुराई फैल रही है। नयी नस्ल में यह किसी वबा की तरह घर कर रही है। अब तक जो घटनाएं सामने आयी हैं उनसे यही मालूम होता है कि नयी नस्ल इसमें बुरी तरह मुब्तला होती जा रही है। स्कूल और कॉलेज तो इसके खास शिकार हैं। अब शायद ही कोई ऐसा शहर होगा जिसमें साइबार कैफों की जो सूरतहाल है वह किसी से छुपी हुई नहीं है।

हालांकि हुकूमत का यह दावा है कि वह इसकी रोकथाम की कोशिश कर रही है, इत्तिलाआत और नश्रियात के मर्कजी वजीर जयपाल रेड्डी ने अभी पिछले दिनों यह एलान किया था कि हुकूमत को इस पर इन्तहाई तशवीश है और वह उसकी रोकथाम के लिए कदम उठाने पर संजीदगी से गौर कर रही है। इन्होंने इसके इशारे भी दिये थे कि हुकूमत ने इस सिलसिले में एक कमेटी बना दी है जिसने अपना काम भी शुरू कर दिया है और आगाजकार के तौर पर उन अवामिल की निशानदेही कर ली गई है जो उरयानी व फह्हाशी में बढ़ोत्तरी का सबब बन रहे हैं।

पिछली हुकूमत को भी इसका एहसास था और उसे तो होना ही चाहिए था। क्योंकि उस हुकूमत के गालिब उनसुर को मगरिबीयत एक आंख नहीं भाती थी। कम से कम उसका दावा तो यही था। वह उसके प्रभावों को खुरच कर फेंक देने का कायल था। वह प्राचीन सभ्य का दिलदादह था और उसे मुल्क में रिवाज देना चाहता था और इन्फार्मेशन टेक्नॉलोजी के मुतअल्लिक मजकूरा कानून भी उसी के जमाने में बना था। लेकिन यह भी एक कड़वी हकीकत है कि मगरिबी तहजीब के दाखिले का बाब भी उसी के जमाने में खुला।

अब सूरतेहाल यह है कि इस पर तशवीश का इजहार भी फैशन बन गया है। मुल्क के किसी भी तब्के को इससे वाकई कोई सरोकार नहीं है। समाज किधर जा रहा है। नयी नस्ल

में कैसे–कैसे बिगाड़ पैदा हो रहे हैं। उसकी बर्बादी के क्या–क्या सामान जमा हो गये हैं, न सियासतदानों को इससे कोई गरज है न दानिश्वर और मीडिया को, इससे बस इस हद तक मतलब है जिससे सियासी फायदा पहुंचने की तवक्को हो।

दानिश्वर भी अगर कुछ कहते हैं तो बस फैशन के बतौर और मीडिया की दिलचस्पी का विषय भी बस यह है कि उसको इस तरह नमक–मिर्च लगाकर कुछ पेश करने का मसाला मिल जाता है, वरना वह इसके सद्देबाब की ठोस कोशिशें करते। इसके कारणों को दूर किया जाता। इसके फैलाव पर बंद बांधा जाता, लेकिन हालत यह है कि उरयानी और फह्हाशी को ताकत पहुंचाने वाले तमाम सामान मौजूद हैं और हर हिस्सा उसको फरोग देने में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रहा है। ऐसी सूरत में इसकी उम्मीद रखना कि उरयानी और फह्हाशी का दायरा फैलाने का सिलसिला रूक जाएगा अहमकाना खयाल है।

उरयानी व फह्हाशी अगर दूर करना मकसूद है और हुकूमत वाकई यह चाहती है कि यह सैलाब हिन्दुस्तानी समाज को कहीं और बहा न ले जाए, जिन लोगों को इस पर तश्वीश है और वह नयी नस्ल को उरयानी व फहहाशी के समुद्र में गर्क होता देखना नहीं चाहते हैं, मीडिया को अगर वाकई यह सूरतहाल तश्वीशनाक महसूस होती है तो उसे उन तमाम स्रोतों को बन करने पर न सिर्फ सर जोड़कर गौर करना होगा बल्कि इसके लिए ठोस कदम उठाना होगा। सियासतदानों समेत समाज के हर तबके को इसके लिए कुछ न कुछ कुरबानियां देनी पड़ेंगी। बगैर कुरबानियां दिये इस तूफान को रोकना मुश्किल है। अगर हुकूमत ने इस सिलिसे में कारवाई की तो उसके मफादात पर जर्ब पड़ेगी। क्योंकि जिस रास्ते से यह सैलाब आ रहा है उसको बन्द करना आसान नहीं है। इसमें ऐसे तत्व शामिल हैं जो मुल्क के अन्दर भी पाये जाते हैं और ऐसे भी हैं जिसकी जड़ें मुल्क से बाहर मौजूद हैं उन पर हाथ डालना बहुत मुश्किल है इसमें दानिश्वरों को भी हिम्मत और बेबाकी का सुबूत देना होगा। मगर सबसे बढ़कर इसमें मीडिया को किरदार अदा करना पड़ेगा।

प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के जरिये जिस तरह उरयानी और फह्हाशी का प्रसार हो रहा है उसे सभी जानते हैं। उसने जिस तरह से बेहयाई को आम किया है और जिंसी है जान पैदा किया है वह किसी से छुपी हुई बात नही है। यह बहुत मुश्किल काम है इसलिए कि यह एक मुनाफा देने वाला कारोबार बन गया है। जब तक यह काम नही किया जाता इसकी तमन्ना फजूल है कि बेहयाई पर काबू पा लिया जाए।

सिवा उसके जो जहन्नम की भड़कती आग में पड़ने ही वाला हो। (कुरआन, ३७:१६३)

और हमारी ओर से उसके लिए अनिवार्यतः एक ज्ञात और नियत स्थान है। (कुरआन ३७ : १६४)

(कान्ति के शुक्रिये के साथ)

हे प्रभु आनन्द दाता,
ज्ञान हम को दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को,
दूर हम से कीजिए।

ज़बीहा

ज़बीहा उस जानवर को कहते हैं जिसे इस्लामी तरीके पर ज़ब्ह किया गया हो। हलाल जानवर का ज़बीहा हलाल है यअनी उस का गोश्त खाना हलाल है उसकी खाल पाक है।

ज़ब्ह करने का इस्लामी तरीका यह है कि जानवर को क़िबला रू लिटाऐं, जिस की तरकीब यह होगी कि उसके चारों पैर क़िब्लाा की तरफ़ हों और मुंह भी फिर मज़बूत बांध कर मज़बूत पकड़ लें। अब ज़ब्ह करने वाला तेज़ छुरी लेकर गरदन के सामने इस तरह आए कि उसका मुंह भी क़िब्ले की तरफ़ हो। फिर दाहिने हाथ से गले पर छुरी रख कर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कहते हुए तेज़ी से छुरी चला दे यहां तक कि गले की चारों रगें कट जाएं या कम से कम तीन रगें कट जाएं। अगर दो ही रगें कटी या एक ही रग कटी तो जानवर हलाल न होगा यह मुरदार हो जाएगा।

ज़ब्ह की ज़रूरी बातें

ज़ब्ह करने वाले का मुसलमान होना।

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर जब्ह करना।

गले की चारो रगों या कम से कम तीन रगों का कट जाना।

हलाल जानवर के ज़ब्ह करने में यह तीनो बाते पाई जाएगी तो ज़बीहे का गोश्त हलाल होगा वरना नहीं।

मुस्लिम औरत का ज़बीहा भी हलाल है। आज कल के ईसाईयों, यहूदियों का ज़बीहा खाने में सारे उलमा मुत्तफ़िक़ (सहमत) नहीं है। अरब देश के उलमा कहते हैं कि अगर वह अपनी ज़बान में सही खुदा का नाम लेकर ज़ब्ह करते हैं तो वह ज़बीहा हलाल है।

गोश्त बेचने वालों को समझाना चाहिए और समझाते रहना चाहिए कि वह ज़बान से बिस्मिल्लाह पढ़कर ज़ब्ह किया करें वरना मुसलमानों को हराम खिलाऐंगे और खुद जहन्नम में जाऐंगें।

शरअ़ी अदालतें मुस्लिम समाज की अहम ज़रूरत

मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना'

देश की शरई अदालतों की भूमिका पर सवालिया निशान लगाते हुए मासिक पत्रिका 'अनिवार्य' के अगस्त–सितम्बर २००५ के अंक में पृष्ठ ४५ पर प्रकाशित खबर पूरी तरह पूर्वाग्रह पर आधारित है। "देश की संप्रभुता को चुनौती शरई अदालतें शीर्षक से प्रकाशित खबर में शरई अदालतों को न सिर्फ राष्ट्रीय अदालतों के समानान्तर बताया गया है बल्कि उन्हें न्याय व्यवस्था के लिए चुनौती के रूप में पेश किया गया है। यह शायद पत्रिका को सस्ती लोकप्रियता हासिल करने का सस्ता तरीका मालूम पड़ता है।

इन अदालतों को अलगाववाद का आगाज भारतीय न्याय–व्यवस्था का मखौल और राष्ट्रीय सम्प्रभुता के लिएखतरा बताते हुए न्यायाधीशों से अपील की गयी है कि वे अतिशीघ्र इस पर नोटिस लें। खबर में इन अदालतों के अस्तित्व को नकारते हुए कहा गया है कि मुस्लिम समुदाय से जुड़े मामलों में राष्ट्रीय अदालतों में भी पर्सनल लॉ के तहत ही फैसले किये जाते हैं।

अल्पसंख्यकों से जुड़े संस्थानों या किसी बड़े कदम की तुलना हमेशा से राष्ट्रीय सुरक्षा या सम्प्रभुता जैसे शब्दों से की जाती है। हालांकि ऐसा कहने के पीछे 'देश–भक्ति' की भावना नहीं, बल्कि उनके संस्थानों को निशाना बनाने की सोच अधिक होती है। अगर ऐसा नहीं है तो यह समझने वाली बात है कि अल्पसंख्यक समुदाय के लोग भी उतने ही भारती हैं जित्ना की बहुसंख्यक वर्ग।

शरई अदालतों के बारे में खुद मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड यह स्पष्ट कर चुका है कि ये राष्ट्रीय अदालत के समानान्तर नही हैं, न ही इनसे इन अदालतों को किसी प्रकार की चुनौती मिलती है। इस देश में समस्याओं को निचले स्तरपर सुलझा देने के लिए अनेक प्रावधान मौजूद हैं। ग्राम पंचायतें और लोक अदालतें हैं। इसके अलावा मुकदमों के तेज निबटाने के लिए और अदालतों पर से मुकदमों का बोझ कम करने के लिए फास्ट ट्रैक अदालतों को विकल्प के रूप में अपनाया जाता है। कालान्तर में पंचायतों के विवादस्पद व गैर–कानूनी फैसलों के अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। इसके बाद भी वे राष्ट्रीय अदालतों व सम्प्रभुता के लिए चुनौती नहीं मानी जाती है। इसके विपरीत शरई अदालतें सिर्फ मुसलमानों के घरेलू समस्याओं को घर में ही सुलझा देने का काम करती हैं। इससे न सिर्फ राष्ट्रीय अदालतों पर मुकदमों का और बोझ बढ़ने से रह जाता है बल्कि गरीब मुसलमान सालों कचहरी का चक्कर लगाने व पैसा फूकने से बच जाते हैं। फिर ये अदालतें किस तरह राष्ट्रीय सम्प्रभुता के लिए खतरा हो सकती हैं।

ये अदालतें उन्हीं मुसलमानों के विवादों में के विवादों में रूचि दिखाती हैं जो इनके पास जाते हैं। जो राष्ट्रीय अदालतों में अपना मुकदमा ले जाते हैं उसमें ये कोई दखल नहीं देती हैं। वहीं इनके फैसले से असहमत होने के बाद भी लोग अदालतों का दरवाजा खटखटाने के लिए आजाद होते हैं। ये अदालतें हजारों विवादों को सुलझाकर दो परिवारों को जोड़ने जैसे महान सामाजिक कामों को अंजाम दे रही हैं। यह किसी देश सेवा से कम नही है।

पत्रिका का यह कहना सही नहीं है कि राष्ट्रीय अदालतों में मुसलमानों के मामलात को शरीअत के मुताबिक हल किया जाता है। शाह बानो का केस इसका जीता जागता उदाहरण है। इसके अलावा भी अनेक बार निचली अदालतों ने शाहबानों प्रकरण को जिन्दा करने की कोशिश की है। शरई अदालतों के अभाव में जो गैर शरई फैसले आते हैं, वे मुसलमानों पर गिरां व तकलीफदेह गुजरते हैं। यह स्थिति देश की सम्प्रभुता के लिए जरूर खतरनाक हो सकती है।

राष्ट्रीय अदालत ने जिस तरह देश की सम्प्रभुता को ध्यान में रखकर शरई अदालतों की भूमिका पर सवाल किया है, वहीं इस बात पर ध्यान रखा जाना मुनासिब होता कि मुसलमानों पर जुल्म ज्यादती से जुड़े मामलों का जल्दी निबटारा भी किया जाए। बाबारी मस्जिद या इस जैसे दूसरे मामलों में जो राष्ट्रीय अदालतों में कछुआ गति से सुनवाई हो रही है। उससे भी मुसलमानों का विश्वास टूट रहा है यह भी राष्ट्रीय एकता व सम्प्रभुता के लिए घातक है। इसकी चिन्ता कौन करेगा? क्या यह विषय देश की अदालतों के कार्यक्षेत्र से बाहर है? दरअसल इस तरह के मामलों में व्यापक दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए।

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु (१) आपस के झगड़े : हजरत उसमान (रज़ि०) की शहादत के बाद सहाबा (रज़ि०) ने हजरत अली को खलीफा बनाया। इसके पहले हजरत उस्मान की शहादत के हालात बयान किये जा चुके हैं कि मदीना में बागियों का जमावड़ा था। उनको कोई दबाने वाला न था। इसलिए यह भी हजरत अली (रज़ि०) के साथ हो गए। उनको निकालना आप के बस में न था। इसलिए चुप रहे। खिलाफत के बाद हजरत अली (रज़ि०) बड़ी सख्त मुश्किल में फंसे हुए थे। लोग आकर कहते कि हजरत उस्मान (रज़ि०) के कातिलों को पूरी पूरी सजा दी जाए। हजरत अली (रज़ि०) की भी यही राय थी लेकिन कठिनाई यह थी कि बलवाई चारों तरफ ऐसे छा गए थे कि उनके विरूद्ध कुछ करना तो बड़ी बात है, जुबान से भी एक शब्द निकलना कठिन था। आपने लोगों को एमझाया कि अभी ठहर जाओ, जरा हालात बदले तो इन बागियों की खबर ली जाएगी लेकिन कुछ लोग आपकी मजबूरी को समझते न थे या समझना नहीं चाहते थे इसलिए उनका आग्रह बराबर बढ़ता जाता था और चूंकि कातिल हजरत अली की फौज में आ गए थे। इसलिए कुछ लोगों को बदगुमानी (भ्रांति) पैदा हो गई कि आप किसास (हत्यादण्ड) को टालना चाहते हैं। उन्होंने मक्का जाकर हजरत आयशा (रज़ि०) से कहा कि हजरत उसमान (रज़ि०) बड़े निर्दयता के साथ मार डाले गए और कोई उनका बदला लेने वाला नहीं। हजरत आयशा (रज़ि०) को यह सुन कर बड़ा दुख हुआ। हजरत तलहा (रज़ि०) और हजरत जुबैर (रज़ि०) भी आ गए। आप उनको लेकर खुद हजरत उसमान (रज़ि०) के खून का बदला लेने के लिए निकल पड़े।

हजरत अली (रज़ि०) आपस में झगड़ा लड़ाई पसन्द नहीं करते थे लेकिन ऐसी सूरत में करते क्या। हत्यारे आपके कब्जे में न थे और हजरत आयशा आदि इन कातिलों से बदला लेने के लिए तैयार थीं।

तात्पर्य यह है कि दोनों तरफ की सेनाएं बसरा की तरफ बढ़ीं जो अरब का सबसे बड़ा फौजी केन्द्र था। पहले सुलह की बातचीत शुरू हुई। चूंकि नीयत दोनों की अच्छी थी। इसलिए मआमला जल्द तय हो गया। रात को दोनों तरफ के लोग निश्चित होकर सोए लेकिन सबाई (इब्ने सबा के आदमी) कब पसन्द करते थे कि मसुलमानों में मेल हो जाए। दूसरे उन को सबसे बड़ा डर था कि यदि आपस में सुलह हो गई तो उनकी खैर नहीं। इसलिए उन्होंने ठान लिया कि चाहे जो कुछ हो जाए इसलिए रात गए जब सब सो गए तो सबाइयों ने तय किया कि कुछ लोग हजरत अली (रज़ि०), हजरत जुबैर(रज़ि०), हजरत तलहा (रज़ि०) और हजरत आयशा (रज़ि०) के डेरे के पास खड़े हो जाएं, बाकी लोग दोनों सेनाओं पर हमला कर दें। इसी प्रकार जब हजरत आयशा (रज़ि०) या हजरत तलहा (रज़ि०) व हजरत जुबैर (रज़ि०) पूछें तो कह दिया जाए कि हजरत अली (रज़ि०) की फौज ने हमला कर दिया। इस तरह अच्छी खासी जंग शुरू हो जाएगी।

जमल की जंग : राय पास हो गई तो यह लोग खुशी खुशी उठे और सुब होने से पहले दोनों फौजों पर हमला कर दिया। हजरत अली ने पूछा तो कहा कि हजरत आयशा के आदमियों ने हमला किया है। हजरत आयशा ने पूछा तो कहा कि हजरत अली की सेना ने हमला कर दिया है। नतीजा यह हुआ कि दोनों तरफ के लोगों को क्रोध आया और सुबह होते होते अच्छी खासी लड़ाई शुरू हो गई। दिन भर बड़ी सख्त लड़ाई हुई आखिर बड़ी मुशकिल से शाम को हजरत आयशा का ऊंट घायल हो कर गिरा तो लड़ाई समाप्त हुई लेकिन उस समय तक दस हजार आदमी मारे जा चुके थे। हजरत तलहा (रज़ि०) हजरत जुबैर (रज़ि०) उसमें शहीद हुए। अमर बिन जरमुजान हजरत जुबैर (रज़ि०) का सरकाट कर हजरत अली के पास लाया। वह समझता था कि पुरस्कार से मालामाल करदिया जाएगा लेकिन हजरत अली देखते ही रो पड़े और फरमाया जुबैर (रज़ि०) के कातिल को जहन्नम की बशारत सूचना दो।

लड़ाई समाप्त होने के बाद

हजरत अली (रज़ि०) हजरत आयशा (रज़ि०) के पास हाजिर हुए और आपस में सफाई हो गई। उसके बाद हजरत आयशा (रज़ि०) मदीना की तरफ रवाना हो गईं। विदा होते समय खुद हजरत अली (रज़ि०) कई मील तक साथ तशरीफ ले गए और हजरत हसन और हजरत हुसैन को सुरक्षा के लिए मदीना तक साथ भेजा।

सिफ्फीन की जंग : अभी खुदा खुदा करके एक झगड़े से छुटकारा मिला था तो उससे भी बड़ा दूसरा झगड़ा खड़ा हो गया। अमीर माविया (रज़ि०) शाम के गवर्नर थे। हजरत अली (रज़ि०) ने उन को निलम्बित कर दिया। अमीर माविया (रज़ि०) हजरत उसमान (रज़ि०) के निकट सम्बन्धी थे। उनको आप (रज़ि०) की शहादत का दुःख था और हजरत उसमान (रज़ि०) के कातिल हजरत अली (रज़ि०) के साथ थे। इसलिए अमीर माविया (रज़ि०) को एक बहाना हाथ आया और हजरत अली (रज़ि०) के मुकाबले के लिए खड़े हो गए। चुनानचः हजरत अली (रज़ि०) ने जब उनके पास बैअत (भक्ति प्रतिज्ञा) करने के लिए कहलाया तो उन्होंने जवाब दिया कि जब तक उस्मान (रज़ि०) के कातिलों को हमारे हवाले न करोगे हम बैअत न करेंगे लेकिन हजरत अली (रज़ि०) इसके बारे में क्या कर सकते थे उनके पास इतनी ताकत कहां थी कि चार पांच हजार बागियों को सजा देते। इसलिए अमीर माविया (रज़ि०) फौज लेकर निकट खड़े हुए। हजरत अली रज़ि० भी बढ़े। सन् ३६ हिजरी को सिफ्फीन के स्थान पर दोनों फौजों क़ा मुकाबला हुआ। महीनों बड़ी सख्त लड़ाई होती रही। इस लड़ाई में लगभग एक लाख आदमी मारे गये। आखिरी दिन सारा दिन और सारी रात लड़ाई चलती रही। दूसरे दिन सुबह को शामी पीछे हटने लगे और करीब था कि बिल्कुल प्रास्त हो जाएंगे कि अचानक नेजों पर कुर्आन बुलन्द कर पुकारने लगे कि हमारे तुम्हारे दर्मियान खुदा की किताब फैसला करेगी। हजरत अली (रज़ि०) ने बहुतेरा समझाया कि यह एक चाल है लड़ाई जारी रखो बस अब फतह हुआ ही चाहती है लेकिन भला सबाई यह कब सुनने वाले थे। यह तो हजरत उसमान (रज़ि०) को शहीद करके शेर हो गए थे। जब हजरत अली ने अधिक जोर दिया तो बिगड़ कर कहने लगे बस रहने दीजिए। अगर आप ने जंग समाप्त नहीं की तो आप के साथ भी वही मुआमला होगा जो हजरत उसमान रज़ि० के साथ हो चुका है। मजबूरन हजरत अली (रज़ि०) को फ़ौजें हटा लेनी पड़ीं और अच्छी खासी जीती लड़ाई हार जानी पड़ी। इसके बाद दोनों तरफ से दो आदमी मुकर्रर हुए कि इस झगड़े का फैसला कर दें। हजरत अली (रज़ि०) की तरफ से हजरत अबूमूसा अशअरी (रज़ि०) थे और हजरत माविया (रज़ि०) की तरफ से हजरत अमर बिन आस (रज़ि०) थे। इस के बाद हजरत माविया (रज़ि०) दमिश्क चले गए और हजरत अली(रज़ि०) कूफा वापस आ गए।

थोड़ी बहस के बाद दोनों ने मिलकर तय कर दिया कि हजरत अली (रज़ि०) और हजरत माविया (रज़ि०) दोनों खिलाफत से अलग कर दिए जाएं और मुसलमान किसी तीसरे शख्स को खलीफा बना लें। समय पर दोनों पक्षों ने अपना फैसला सुनाया। अबू मूसा (रज़ि०) ने दोनों को निलम्बित कर दिया लेकिन जब अमर बिन आस (रज़ि०) की बारी आई तो उन्होंने कहा माविया को जो उसमान (रज़ि०) के खून के वली हैं बरकरार रखता हूं। जाहिर है यह फैसला हजरत अली (रज़ि०) किसी तरह नही मान सकते थे। इसलिए आपने फिर शाम पर चढ़ाई करने का इरादा किया। लेकिन खुद उनकी सेना में झगड़ा पैदा हो गया और खारजियों का एक नया दल पैदा हो गया जो खुद हजरत अली (रज़ि०) का विरोधी हो गया।

इस की तह में भी वही सबाई काम कर रहे थे। पहले बताया जा चुका है कि यह लोग किसी तरह न चाहते थे कि लड़ाई समाप्त हो। जमल की जंग उन्हीं की वजह से हुई। सिफ्फीन (हजरत माविया वाली लड़ाई) का मारका उन्हीं की बदौलत पेश आया। फिर हजरत अली की विजय होने लगी और उन लोगों को नजर आया कि इसके बाद हमारी बारी है तो कुर्आन की आड़ ली और हजरत अली को मजबूर किया कि जीती लड़ाई खत्म कर दें। फिर जब पंच नियुक्त हुए और उन्हें मालूम हुआ कि सुलह हो जाने वाली है जिसके बाद हमारी खैर नहीं तो उसे कुफ्र करार दिया और हजरत अली (रज़ि०) से कहा कि इस गुनाह से तौबा कीजिए नहीं तो हम आपका साथ छोड़ देंगे।

अब जब हजरत अली ने गलत फैसला नापसन्द फरमाया और चाहा कि शाम पर चढ़ाई करें तो उन्हें ख्याल हुआ कि अगर इसमें हजरत अली (रज़ि०) को सफलता मिल गई तो इसके

बाद हमारा नम्बर है। अतएव उन्होंने इसका विरोध किया और शाम की तरफ जाने के बजाए खुद हजरत अली (रज़ि०) के खिलाफ हो गए और हंगामा शुरू कर दिया। हजरत अली (रज़ि०) ने लाख कोशिश की कि यह किसी तरह समझ जाएं और अपनी शरारत से बाज आजाएं, लेकिन उन्होंने एक न सुनी और सुनते कैसे उनका तो उद्देश्य यही था कि मुसलमानों में भेदभाव काइम रहे। मजबूरन हजरत अली (रज़ि०) ने उनके मुकाबले की तैयारी की और नहरवान के स्थान पर बड़ी घमासान की लड़ाई हुई जिसमें खारजियों को भारी प्राजय हुई।

यह कहानी समाप्त हुई तो हजरत अली (रज़ि०) ने फिर शाम का इरादा किया लेकिन कोई भी तैयार न हुआ। झूठ मूठ बहाना बनाकर घरों में बैठ रहे। हजरत अली (रज़ि०) ने यह रंग देखा तो कूफा वापस तशरीफ ले गए। यह रोजाना तकरीरें करते और लोगों को जोश दिलाते लेकिन नतीजा कुछ न हुआ। आखिर विवश होकर शाम का ख्याल ही छोड़ दिया।

आखिर में दोनों तरफ के लोग वादविवाद और पत्र व्यवहार के बाद स० ४० हि० में इस बात पर राजी हुए कि मुलहिकात (सम्बध्य क्षेत्रों) पर हजरत अमीर माविया (रज़ि०) और इराक और उस से सम्बद्ध क्षेत्रों हिजाज वखुरासान आदि पर हजरत अली (रज़ि०) हुकूमत करें।

हजरत अली की शहादत

खरजियों का जो दल हजरत अली (रज़ि०) का साथ देने वालों से अलग हो गया था यद्यपि नहरवान में उसकी कमर टूट गई थी। मगर उस दल के लोग देश में अब भी बाकी थे। उनमें से तीन आदमियों ने मिलकर यह प्रण किया कि हजरत अली (रज़ि०) अमीर माविया (रज़ि०) और अमरू बिन आस (रज़ि०) तीनों का एक ही दिन एक ही समय खात्मा कर दें।

१५, रमजान स० ४० हि० को प्रातः समय आप कूफा की मस्जिद में नमाज पढ़ने जा रहे थे। मस्जिद में कदम रखते ही अब्दुरर्हमान बिन मुलजिम खारजी ने सर पर तलवार मारी, घाव ऐसा गहरा था कि बच न सके और तीसरे दिन १७ रमजान स० ४० हि०को आप का देहान्त हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अमीर माविया (रज़ि०) पर भी उसी दिन उसी समय दमिश्क की मस्जिद में हमला हुआ मगर वार ओछा पड़ा और बच गए। अमरू बिन आस (रज़ि०) संयोग से उस दिन मस्जिद न जा सके थे। उन की जगह एक दूसरा शख्स नमाज पढ़ाने निकला और संदेह में मारा गया।

हजरत अली (रज़ि०) के खलीफा होते ही चारों तरफ ऐसे झगड़े उठ खड़े हुए थे कि आप को मुसलमानों की सेवा करने का अवसर ही न मिल सका। फिर भी हजरत उसमान (रज़ि०) के जमाने में बनी उमय्या के आदमियों ने जो बेउनवानियां (अनियमित्ताएं) और खराबियां पैदा कर दी थीं उनको एक कलम मिटा दिया और अपने हाकिमों और अधिकारियों की हमेशा निगरानी करते रहे कि वह अपनी सीमा से आगे न बढ़ने पाएं। प्रजा के साथ उनका व्यवहार बड़ा स्नेहपूर्ण था। आप इल्म (ज्ञान) में अपने तमाम साथियों से श्रेष्ठ थे। फैसले तो आप के जैसे कोई कर ही नहीं सकता था। आप ने बड़े दिलचस्प मुकदमों के फैसले किये हैं। तकरीर (भाषण) बड़ी अच्छी करते थे आप के जमाने में आपके पल्ले का कोई तकरीर करने वाला न था। बड़े भक्त बड़े संयमी खलीफा थे। बहुत ही सादा और मामूली तरह रहते थे। रूखा सूखा खाना खाते थे और मोटा झोटा पहनते थे। असल बात यह है कि आप दानी इतने बड़े थे कि पैसा हाथों में रूकता ही न था। इधर आया उधर गया। कोई फकीर मुहताज आप के दरवाजे से निराश न जाता था। कभी ऐसा होता था कि घर का कुल खाना फकीर को खिला दिया और खुद को भूखा रहना पड़ा। आपके स्वभाव में बड़ी सादगी थी। अपना जूता तक अपने हाथों से टांक लेते थे।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी

मग़रूर क्यों है इतना,
नादान होश में आ।
करले यक़ीन दिल से,
तू ख़ाक़ का है पुतला।।
यह हाथ पांव तेरे,
तिन्के का हैं सहारा।
देता है रिज़्क़ तुझ को,
परवरदिगार तेरा।।
कर बन्दगी ख़ुदा की,
बन्दा है तू ख़ुदा का।
पिश्शे ने मार डाला,
नम्रूद सा सितमगर।
हर लम्ह ख़ैर अपनी,
अल्लाह से तलब कर।।

वास्तविक धर्म क्या है

डा. अब्दुल लतीफ़ चतुर्वेदी
मारूफ़पुर खेतासराय जौनपुर

जब मैं दुनिया से वाकिफ हुआ तो अपने बड़े बजुर्गों को एक विशेष धर्म पर पाया चूंकि मैं बच्चा था, स्वभावन कुछ सोचे समझे बिना अपने बड़े बुजुर्गों के कहने पर उनके बताये हुए धर्म को अपना लिया। परन्तु जब ज्ञान एवं दुन्यावी सम्बन्ध बदले गये तो समझ में आने लगा कि कुछ लोग ऐसे हैं जिनका धर्म तो वही है जो हमारा है किन्तु उस धर्म पर चलने के ढंग हमसे अलग है और कुछ आस्था (विश्वास) एवं आचरण दोनों ही मामले में हमसे अलग थे। ध ीरे धीरे जब ज्ञान की सीमा बढ़ती गयी तब यह भी जानकारी हुई कि दुनिया में यही एक धर्म नहीं है जिस पर हम चल रहे है बल्कि इसके अलावा बहुत से धर्म हैं और सभी अलग अलग धर्म के मानने वालों का दावा है कि उनका धर्म सच्चा है और सभी धर्म गलत है।

अलग अलग धर्म के मानने वाले भले चुप रहे परन्तु उनके दिलों में आस्था रहती है जो समय समय पर उनके आचरण व व्यवहार से जाहिर हो जाती है। खुद मैं जिस धर्म को मान रहा था उसके भीतर भी लोग दूसरे धर्म को गलत और अपने धर्म को सही समझते थे और दूसरे धर्म के मामले में कठोर विचार रखते थे। सभी धर्मों को अलग अलग मानने वालों को अपना धर्म केवल सच्चा होने का सुबूत यही था कि हमने अपने पूर्वजों (बाप दादा) को इसी धर्म पर पाया है।

इस बात को लेकर मेरे मन में यह विचार आने लगा कि यदि किसी धर्म को सच्चे होने का सुबूत यही है कि बाप दादा से चला आ रहा है तो आज संसार में जितने धर्म है सब सच्चे हैं क्योंकि इस संसार में जितने धर्म आज है वह उनके मानने वालों के पूर्वजों से ही उनको मिला है चाहे वह दो तीन पीढ़ी के पूर्वज हो या चालिस–पचास साल पीढ़ी के हों।

इस बात पर मुझे उलझन होने लगी कि हर एक धर्म सच्चा भी है और किसी एक धर्म क मानने वालों के निकट शेष सारे धर्म झूठे भी है। इसलिए मेरे सामने उलझन पैदा हुई कि सभी धर्म सच्चे कैसे हो सकते हैं ? क्योंकि जितने भी धर्म हैं उनमें आपसी मतभेद है और एक दूसरे के विरूद्ध भी हैं। कुछ बुजुर्गों को अपना धर्म सच्चा सिद्ध करने के लिए दर्शन की भूल–भुलैयां, तर्क की जादूगरी शब्दों की हेरा–फेरी का सहारा लेते हुए पाया किन्तु मुझे इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। इसलिए सच्चे धर्म की तलाश में मैं खुद सोच–विचार करने लगा।

अपना अनुभव और अपना विचार

अपने अनुभव से सच्चा धर्म होने का ठोस प्रमाण दो बिन्दुओं पर आधारित है। १– ईश्वर की धारणा, २– मरने के बाद दुबारा जीवित होने का विश्वास। धर्म के यही दो पहलू है जिनका आधार अदृश्य है अर्थात न तो हम ईश्वर को देखते हैं और न ही मरने के बाद जीवन को ही देखते है। इस स्थिति में इनके होने और न होने की सम्भावना बराबर–बराबर है।

इस विचार धारा से हमारे सामने चार समस्याऐं उत्पन्न होती है।

१.न ईश्वर है और न परलोक है।
२.ईश्वर है परन्तु परलोक नहीं है।
३.परलोक है परन्तु ईश्वर नहीं है।
४.ईश्वर भी है परलोक भी है।

१.न ईश्वर है और न परलोक है– एक बात यह हो सकती है कि ईश्वर है न परलोक है तो फिर किसी भी धर्म को मानने वाला ऐसा स्वीकार नहीं कर सकता यह विचार नास्तिकों का है।

२. ईश्वर है परलोक नही– दूसरी बात यह हो सकती है कि ईश्वर है परन्तु परलोक नहीं है तब इस स्थिति में ईश्वर का आस्तित्व ही खत्म व अर्थहीन हो जाता है क्योंकि यदि जीवन इस संसार तक ही सीमित है तो इस बात की पूरी सम्भावना है और यह देखने में आता है कि यह जिन्दगी अच्छी तरह से व्यतीत हो या बुरी तरह से अच्छे या बुरे कर्मों का कोई निश्चित परिणाम इस संसार में सामने नहीं आता

यहां हम देखते है कि वैसा व्यक्ति जो प्रत्येक दृष्टि से अच्छा है और लोग उसे अच्छा समझते है या तो सुख सम्पन्न जीवन बिता करके इस संसार से चला जाता है या दुख एवं संकट में ही जीवन व्यतीत करता है। इसी प्रकार एक बुरा व्यक्ति जिसका व्यवहार बहुत बुरा है एंव दुनिया वाले बुरा समझते है वह अपनी सभी बुराईयों के बावजूद दुनिया में सुखी सम्पन्न

जीवन व्यतीत करता है जबकि एक दूसरा बुरा व्यक्ति दुख एवं संकट झेलता है।

इस बात पर हमे सोचना होगा कि कौन सा धर्म इस त्रुटि से मुक्त है कि इसकी शिक्षा के अनुरूप कर्म करने वाला और कर्म न करने वाला दोनों का परिणाम बराबर बताया गया हो ताकि परलोक एवं धर्म दोनों की आवश्यकता एवं महत्व स्पष्ट हो जाए अर्थात इन शिक्षाओं को न मानने के फल स्वरूप परलोक में जीवन बरबाद हो। इसके विपरीत धर्म का यह दृष्टिकोण जिसके अनुसार अच्छे एवं बुरे दोनों कर्म समान है, एक व्यर्थ दृष्टिकोण है। इस प्रकार परलोक के न मानने पर आधारित किसी धर्म की स्थिति अर्थहीन हो जाती है और ऐसे ध र्म का होना अथवा न होना दोनो ही समान है।

३. परलोक है ईश्वर नहीं– यदि यह मान लिया जाए कि परलोक है ईश्वर नहीं है तब प्रश्न उठता है कि यह कौन बताएगा कि परलोक में क्या होगा। और किस कर्म का परिणाम सामने क्या आयेगा और कौन सा कर्म अच्छा है। और कौन सा बुरा है परलोक तो अदृश्य है। जिसे ईश्वर ही बता सकता था परन्तु इस स्थिति में वह तो है ही नहीं। इस तरह तो परलोक का आस्तित्व ही अर्थहीन हो जाता है साथ ही एक बात और यह कि ऐसे धर्म की क्या आवश्यकता है जिसमें ऐसी शक्ति का आस्तित्व ही न हो जिसकी पूजा की जाए।

४. ईश्वर भी है और परलोक भी– चौथी और अन्तिम परिस्थिति यह बच जाती है कि ईश्वर भी है और परलोक भी है। इस धारणा वाले धर्म में ईश्वर एवं परलोक दोनो की स्थिति अर्थपूर्ण हो जाती है। एक सच्चे धर्म की यही स्थिति ऐसी है जिसे मानने में किसी को कोई भी परेशानी नहीं होगी।

धर्म के मौलिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करने के बाद हमें धर्म का इसके प्रस्तुत करने वाले एवं इसकी शिक्षा के दृष्टिकोण से विश्लेषण करना चाहिए। इस तरह जब हम विचार करेंगे तो पायेंगे कि किसी धर्म को प्रस्तुत करने वाले तीन तरह के व्यक्ति हो सकते हैं।

१. पहला व्यक्ति– जो इस बात का दावा न करें कि मैं ईश्वर का प्रतिनिधि ा हूं परन्तु जो धर्म प्रस्तुत कर रहा हूं वह तर्क पारित है। दूसरा व्यक्ति वह हो सकता है जो झूठा दावा लेकर दुनिया वालों के सामने आये कि मैं ईश्वर का प्रतिनिधि हूं। तीसरा व्यक्ति वह हो सकता है जिसको ईश्वर ने अपना धर्म सिखाकर और अपना दूत बनाकर भेजा हो। सच्चा धर्म वही होगा जो तीसरे प्रकार के व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किया जाए क्योंकि पहला व्यक्ति जो कुछ प्रस्तुत करेगा उसका आधार तर्क एवं बुद्धि पर होगा यद्यपि इसका बाहरी स्वरूप धर्म का होगा परन्तु वह वास्तव में धर्म नहीं बल्कि एक धारणा और दर्शन मात्र होगा।

२. दूसरा व्यक्ति– दूसरे प्रकार का व्यक्ति जो ईश्वर का दूता तो नहीं किन्तु उसका झूठा दावा करता है वह वस्तुतः शोषण करने वाला है जो लोगों को अपने जाल में फंसाकर संसारिक लाभ उठाना चाहता है जब एक व्यक्ति ध्यानपूर्वक उसके विचार जीवन एंव आचरण को देखेगा तो उसे यह बात समझ में आ जाएगी कि इनमें सत्यता नहीं और उसके व्यक्तित्व एंव शिक्षा में अंतर्विरोध है।

३. तीसरा व्यक्ति– तीसरा वह व्यक्ति हो जो ईश्वर का दूत हो और ईश्वर की ओर से किसी धर्म को प्रस्तुत करे तो वैसा धर्म सच्चा हो सकता है। परन्तु यहां यह देखना होगा कि वह व्यक्ति ईश्वर का सच्चा दूत है या नहीं और उससे संबंधित जो शिक्षाऐं प्रस्तुत की जा रही है वे वास्तविक एंव शुद्ध है या नहीं। इनमें परिवर्तन करके कुछ का कुछ तो नहीं कर दिया गया है यहां पहुंचकर इनमें सबसे अधिक कठिन परिस्थिति का सामना करना होगा इसलिए कि यदि ईश्वर के किसी सच्चे दूत की शिक्षाओं में परिवर्तन किया गया होगा तो ऐसा करने वाले साध ाारण व्यक्ति नहीं होंगे बल्कि मेंधावी एवं चालाक लोग होंगे और पवित्रता का रूप धारण किये हुए ढोंग रचने वाले होंगे। इस कारण वश साधारण व्यक्ति उनकी आस्था में जकड़े होंगे और उनकी बातों के विरूद्ध कुछ करना भिड़ों के छत्ते में हाथ डालने के समान होगा। मगर अपने सांसारिक एवं परलौकिक लाभ को चाहने वाले को एक निर्णय तो लेना ही होगा चाहे वह दूसरों के सामने अपने निस्कर्ष को प्रस्तुत करे अथवा न करे।

हमें याद रखना चाहिए कि ईश्वर ने जब हमारे लिए कोई धर्म भेजा है तो इसका कारण यही है कि वह हमारा भला चाहता है यदि लोगों ने इसको बिगाड़ दिया है तो उसने अपने सच्चे धर्म को सुरक्षित रखने का कोई उपाय अवश्य किया होगा। इसलिए ईश्वर के सच्चे दूतों की ओर संबंध किये जाने वाले जितने धर्म पाये जाते

हैं उन सब को हमें गहराई से समझना होगा।

ईश्वर के सच्चे दूत की जो शिक्षाऐं परिवर्तित रूप में हमारे सामने होंगी इनके अन्दर यह परिवर्तन दो में से किसी एक कारणवश आया होगा या तो उस दूत हेतु झूठे दावा करने वाले वह विशेष व्यक्ति होंगे जिन्होंने यह परिवर्तन किया होगा या फिर साधारण व्यक्तियों ने जो दूसरे सम्प्रदाय और दूसरे धर्म के मानने वालों के साथ रहते रहते इनसे प्रभावित होकर उनकी कुछ बातें अपने धर्म के अन्दर अपना ली होगी।

१. पहली बात – हमें यह देखना होगी कि क्या इन परिवर्तित शिक्षाओं में किसी विशेष समूह द्वारा धार्मिक प्रभुत्व अथवा राजनैतिक वर्चस्व प्राप्त करने के उपाय किये गये है? इससे यह समझ में आ जाऐगा कि धर्म की मौलिक शिक्षाओं में परिवर्तन किया गया है अथवा नहीं।

२. दूसरी बात– हमें यह देखना होगा कि किस धर्म की शिक्षा ऐसी है जिससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि किन कर्मों एवं व्यवहारों का परिणाम परलोक में सफलता के रूप में सामने आता है और किन से परलोक में असफलता मिलती है। जिन शिक्षाओं का प्रभाव हृदय एवं मस्तिष्क पर ऐसा पड़ता है कि हम चाहे जैसा कर्म करे हर हाल में परलोक में सफलता हाथों आयेंगी। ऐसी शिक्षा परलोक को अप्रभावित बना देने वाली है जबकि परलोक अर्थात मरणोपरान्त जीवन ही वह ठोस आधार है जो धर्म की आवश्यकता को अपरिहार्य बना देता है। और धर्म के अन्दर परिवर्तन इसलिए और इस तरह किया जाता है कि परलोक का महत्व ही समाप्त हो जाए। और मनुष्य हर तरह का कर्म करने और जैसे चाहे जीवन व्यतीत करने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो जाए परन्तु ईश्वर के शिक्षाओं में ऐसा नहीं होगा बल्कि उनसे यह स्पष्ट पता चलेगा कि किस कर्म का परिणाम परलोक में भला होगा और किसका बुरा एवं हानिकारक होगा ताकि मुनष्य संसार में उन शिक्षाओं में बताई गयी भली भांति बातों का अनुकरण करें जिसका फल उसे परलोक में भला मिले और ऐसा न हो तो धर्म की आवश्यकता ही क्या है?

३. तीसरी बात– तीसरी बात यह है कि ईश्वर को शिक्षाओं में अन्तर्विरोध नहीं हो सकता है कि एक ओर तो वह परलोक को मानने के लिए भी कहे भले और बुरे कर्म भी बताए साथ ही यह आश्वासन भी दे कि इसको मानने न मानने और इसके अनुसार कर्म करने एवं न करने दोनों का परिणाम एक समान है। जिस धर्म की शिक्षा के अनुसार परलोक में निश्चित कर्म का निश्चित परिणाम सामने आता है और वह परिणाम कभी समाप्त होने वाला नहीं हैं तो इस धर्म का इन्कार या विरोध किसी बुद्धिमान के लिए सम्भव नहीं है।

यदि हर वह व्यक्ति जो सत्य धर्म को चाहता है इस दृष्टिकोण से निस्पक्ष विश्लेषण करेगा तो संसार के धर्मों में जो सच्चा धर्म होगा वह उसे मिले जायेगा।

मुस्लिम नवजवानों के विषय में

नवजवान शब्द बहुत ही महत्वपूर्ण है। नवजवानों के महत्व का सारा संसार मानता है। क्योंकि किसी देश, किसी कौम और किसी सभ्यता को प्रगति के मार्ग पर चलाना और इस संसार में अपनी सभ्यता धर्म और अपने अस्तित्व को बाकी रखना नवजवानों का ही काम रहा है। किसी काम की तामीर उस कौम के नवजवानों ही पर निर्भर है। जिस कौम या जाति के नवजवान बिगड़ जाते हैं संसार से उस कौम का अस्तित्व मिट जाता है।

यह बातें मैं हवा में नहीं कह रहा हूं बल्कि संसार का इतिहास इस बात का साक्षी है। चाहे यह इस्लाम का इतिहास हो या ईसाई धर्म का इतिहास हो, या किसी और धर्म या जाति का इतिहास हो।

और बात जब मुस्लिम नवजवानों की हो तो उनके कर्तव्य और जिम्मेदारियां और बढ़ जाती हैं क्योंकि ईश्वर ने हमें यानी नवजवानों और मुस्लिम उम्मत पर यह जिम्मेदारी डाली है कि इस्लाम की दअ़वत को सारे संसार के इंसानों का पहुंचायें ताकि वह सारी मानव जाति जिनको इस्लाम का सन्देश नहीं मिला है परलोक में मुसलमानों पर मुकदमा दायर न कर सकें। इस कर्तव्य को निभाने की भावना (एहसास) जब हमारे अन्दर पैदा हो जाएगी तो हम संसर से अपना अस्तित्व मनवा सकते हैं।

अब्दुल लतीफ़

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आजमी

फ्रांस के शहर में

यह फ्रांस का एक अहम शहर है। इसके कल्ब में वाके एक शानदार रेस्टोरेंट का मंजर कुछ इस तरह है कि मेन हॉल में फास्ट फूड सर्व किया और खाया जा रहा है, एक हिस्से में ख्वातीन कागज के पैकेटों में खाने पैक कर रही हैं, कांउटर पर कंप्यूटर मशीनों से कैशमेमो बनाये जा रहे हैं। हाल में कई जगह ऊपर के हिस्से में बड़े–बड़े टीवी सेट आवेजां हैं, जिन पर फिल्म चल रही है। लोग देख भी रहे हैं, खा भी रहे हैं, बच्चे अपनी पसन्द की खुराक तलब कर रहे हैं। इस दौरान चन्द अफराद पर मुश्तमिल एक टीम अचानक रेस्टोरेंट में दाखिल होती है। वे लोग ग्राहकों के खाने पर अमीक नजर डालते हैं, ग्राहकों से बात भी करते हैं, फिर बावर्चीखाने का रूख करते हैं, वहां तैयार नहीं होने वाले खाने को एक खास अंदाज से देखते हैं, उसके बाद पैकिंग सेक्शन में कुछ पैकेट खोल कर देखते हैं। आखिर में मैंनेजर के कमरे में दाखिल होते हैं। होटल के बाहर और अन्दर का पूरा मंजर मैक डोनाल्ड के किसी रेस्टोरेंट की तस्वीर पेश करता है। मैक डोनाल्ड दुनिया में फास्ट फूड के होटलों का सबसे बड़ा सिलसिला है। दुनिया में इसके खानों का आला मेयार तस्लीमशुदा है।

हलाल और पाकीजा गिजा की तलब

मगर यह मैक डोनाल्ड का रेस्टोरेंट नही बल्कि बर्गर किंग मुस्लिम नामी होटल हैं, जहां सिर्फ हलाल खाने पकाये और खाये जाते हैं। इसको चलाने वाले भी मुस्लिम हैं, खाना पेश और पैक करने वाली ख्वातीन भी मुस्लिम हैं, जो या तो नकाब में हैं या उनके सिर स्कार्फ से ढके हुए हैं। और खाने वाले? वे भी सब मुसलमान हैं, जियादा तादाद ख्वातीन की है, जिनमें से कुछ नकाब या स्कार्फ में हैं, कुछ जदीद यूरोपीय मगर शाइस्ता पोशाकों में मलबूस हैं ये लोग शहर के मुख्तलिफ हिस्सों से यहां आये हैं। इन्हें सिर्फ एक ही चीज खींच–खींच कर यहां लायी है और वह है हलाल और पाकीजा गिजा की तलब। आने वालों का खैरमकदम "अस्लामुअलैकुम" से किया जा रहा है। टी०वी० पर जो फिल्म चल रही है वह कोई बेहूदा और मार–धाड़ वाली फिल्म नहीं, बल्कि 'पैगम्बरे इस्लाम (सल्ल०) की जिन्दगी पर मब्नी फ्रांसीसी जुबान की फिल्म है। जो टीम अचानक दाखिल हुई थी, यह देखने के लिए आयी थी कि खाने मे कोई हराम या गैर–हलाल चीज तो नहीं। यह एक आजाद तंजीम की टीम थी। इस तंजीम का मकसद अशियाये खुर्दनी को चेक करके इस अमर को यकीनी बनाना है कि हर चीज इस्लामी अहकाम के मुताबिक हो। हराम का शायबा तक न हो। तंजीम होटलों को सनद भी देती है।

मुस्लिम बेदारी का एक नमूना

रेस्टोरेंट की यह मंजरकशी करते हुए न्यूयार्क टाइम्स के जायजा निगार क्रेग एस० स्मिथ ने लिखा है (एशियन एज, १८ सितम्बर) कि यह यूरोप के मुसलमानों में अपने दीन और उसके अहकाम से बढ़ती हुई वाबिस्तगी का एक नमूना है। फ्रांस की ५० लाख मुस्लिम आबादी में यह चीज नुमायां तौर पर देखी जा सकती है। स्मिथ के मुताबिक मैक डोनाल्ड और फास्ट फूड के तमाम दूसरे होटलों में खालिसतन मगरिबी कल्चर रायज है। सूअर का गोश्त, जानवरों के खून से बनी आशिया और शराब उस कल्चर का जुज्वे ला यनफक है, जिससे यूरोप और अमरीका के मुसलमान बहुत परेशान हैं। इसलिए मगरिब के बड़े शहरों में अब हलाल गिजा और इस्लामी कल्चर वाले रेस्टोरेंट आये दिन खुल रहे हैं। स्मिथ का कहना है कि मैक डोनाल्ड जैसे बैनलअक्वामी होटल हर मुल्क में मकामी मिजाज और गिजा के मकामी उसूलों का लिहाज तो रखते हैं, लेकिन उन्होंने खुद अपने यहां की मुस्लिम आबादियों को नजरअंदाज कर रखा है– यह एहसास तो हुआ "न्यूयार्क टाइम्स" का, मगर इन्सानों के लिए एक और पहलू भी काबिल गौर होना चाहिए वह यह कि यूरोप और अमेरिका के मुसलमानों की यह बेदारी ऐसे माहौल में सामने आ रही है, जब इस्लाम और उम्मते मुस्लिमा को बदनाम करने की मुहिम पूरी दुनिया में जोर व शोर से जारी है।